मासिक पत्रिका

मूल्य 15/-

वर्ष -7 अंक - 6 मार्च 2010

सिंधू महक



चैती चांद विशेषांक











With Best Compliments from
मध्य प्रदेश का
सबसे बड़ा
साड़ीयों का माल
लहंगा, चुन्नी
डिज़ाइनर
साड़ीयां एवं
ड्रैस मटेरिंयल
श्रीमती
The BIG Saree Mall
20, न्यू मार्केट, मेन रोड, भोपाल
फोन :- 2775667
मो.: 9826674981
We accept all credit cards


चैतीचांद के पावन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
सबका भला करो भगवान
SANGAM PAINTS & HARDWARE STORES
Gold Card CLUB
BERGER PAINTS
asian paints Colour World
Street No. 1, Marwari Road, Bhopal - 462 001
Ph.: 2737665,2543250 Mob.: 9425004843
चैतीचांद के पावन पर्व की हार्दिक बधाई
एवं शुभकामनाएं
Rita
An ISO 9001:2000 Certified Company
रीटा
सिलाई मशीन
IS : 14769
L-9277189
रीटा और आप
जीवन भर का साथ
वितरक
अनिल एजेन्सी
2 इतवारा रोड, भोपाल
फोन : 2534731
विक्रेता
रीटा सुईन्ग मशीन एजेन्सी
39 इतवारा रोड भोपाल
फोन 2543260, 2733884

मासिक पत्रिका

सिंधू महक

वर्ष-7, अंक - 6, मार्च 2010



महेश चावला
प्रधान सम्पादक
मो. 9425012880



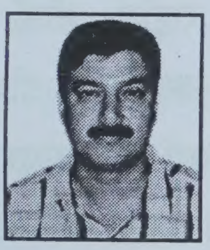
धर्मप्रकाश तेजा
सम्पादक
मो. 9300691132



परमानंद प्यासी
संरक्षक
मो. 09328311844



बसंत चेलानी
सलाहकार



राजेश शर्मा
नगर संवाददाता
मो. 9425672277



राकेश वरंदानी
स्थानीय प्रतिनिधि
मो. 9755043515

डाक का पता : मासिक सिन्धू महक
पो.बाक्स नं. 5, बैरागढ़, भोपाल(म.प्र.)462030
कोरियर से भेजने का पता : सम्पादक, सिंधू महक
एफ-5, श्रद्धा अपार्टमेंट संस्कार स्कूल के पास,
बैरागढ़, भोपाल (म.प्र.)
E-mail : sindhumahak@yahoo.com

नव वर्ष चैती चाँद एवं गुड़ी पड़वा की सभी पाठकों एवं विज्ञापन दाताओं को हार्दिक बाधाई एवं शुभकामनाएं



- समाज के समाचार पत्र-पत्रिकाओं को खरीदकर पढ़ना एवं सहयोग देना आप सभी का कर्त्तव्य है। पाठकों का थोड़ा-थोड़ा सहयोग भी पत्र-पत्रिकाओं के लिये उनके प्रकाशन की निरंतरता को बनाये रखने में अत्याधिक सहयोगी सिद्ध होता है।
- अत: सम्माननीय बंधुओं से आग्रह है कि अधिक से अधिक संख्या में सदस्य बनकर सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही अपने उद्योग/संस्थान/या व्यक्तिगत विज्ञापन देकर अपने व्यवसाय को गति प्रदान करें, थोड़ा-थोड़ा प्रचार भी आपके व्यवसाय को अत्याधिक लाभ प्रदान कर सकता है।

-सम्पादक

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, **प्रकाशक-धर्मप्रकाश तेजा** द्वारा शाईन ऑफसेट, प्रेस कॉम्प.,जोन-1,एम.पी. नगर, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित एवं एफ-5,श्रद्धा अपार्टमेंट,संस्कार स्कूल के पास,बैरागढ़, भोपाल(म.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-धर्मप्रकाश तेजा, मोबाईल : 09589024860, 09300691132 (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल होगा) RNI No. MPHIN/03.11977

एक व्यक्तित्व

श्री किशोर वाधवानी



श्री किशोर वाधवानी

आज इन्दौर शहर ही नहीं अपितु प्रदेश के प्रत्येक जागरूक व्यक्ति जिस शख्स से वाकिफ है, जिसका प्रशंसक है, वो व्यक्तित्व हैं किशोर वाधवानी। श्री किशोर वाधवानी ने एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्म लेकर अपने पूर्वजों से मिले संस्कारों के तथा स्वयं की कर्मठता के बल पर नाम मात्र की पूंजी से अल्प समय में ही एक सफलतम उद्यमी के रूप में स्वयं को स्थापित कर दिखाया है और हजारों लोगों को रोजगार दिलाया।

श्री किशोर वाधवानी भले ही आज सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र में बुलन्दी पर हों पर वे अपने गुजरे वक्त के दोस्तों को भूले नहीं है और सदैव उनके विकास के लिये भी प्रयासरत रहे हैं। श्री वाधवानी जी की विशेषता रही हैं कि जिस व्यक्ति से वे एक बार मिल लेते हैं उसका नाम अरसा गुजर जाने के बाद भी भूलते नहीं हैं।

प.पू.आसाराम बापू श्री श्री नारायण सांई के परम अनुयाई श्री किशोर वाधवानी ने सफलतम उद्योगपति होने के साथ ही समाजसेवा को भी अपना लक्ष्य बना कर रखा हैं। श्री वाधवानी का कहना है, कि मेरा एक दिन व्यापार के लिये तो दूसरा दिन धर्म एवं समाजसेवा के लिये समर्पित हैं।

श्री किशोर वाधवानी ने अपने मित्रों के साथ मिलकर समाजसेवा के उद्‌देश्य से शिमला क्लब की स्थापना की है। उनका उद्वेश्य है कि मुझे और मेरे साथियों को ईश्वर ने जो दिया है वो केवल हमारे उपयोग के लिये ही नहीं दिया, उसमें समाज के हर वर्ग, हर तबके का अधिकार हैं। हमें समाज से प्राप्त स्नेह को समाज को लौटाना चाहिये।

अपने इन्ही उद्‌देश्यों को पूर्ण करने के लिये श्री वाधवानी ने शिमला क्लब के तत्वाधान में समाज उत्थान के कई कार्य किये है। उनमें से प्रमुख हैं- जिसमें चेटी चंड का 7 दिवसीय विशाल आयोजन, उत्तम वर्षा हेतु पर्जन्य महायज्ञ, ग्रीष्म काल में टेंकरों के माध्यम से पूरे शहर में पेयजल आमरस, छाछ, का वितरण, फिल्मी कलाकारों के साथ क्रिकेट मैच का सफल आयोजन, नवरात्री के दौरान गरबा प्रतियोगिता एवं स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन, देश की एकता एवं अखंडता हेतु राष्ट्रीय गीतों भरा राष्ट्रभक्ति पूर्ण कार्यक्रम दीवानगी देशभक्ति की जिसमें अन्नू कपूर नाइट का आयोजन, दीपावली महोत्सव पर नेरन्द्र चंचल, मनीश तिवारी व भोपूजी की भजन संध्याओं का आयोजन, प्रमुख रहे हैं।

जन्म साखी श्री अमर उडे़रोलाल सांई की

विश्व की समस्त प्राचीन सभ्यताओं में से सिंधु घाटी की सभ्यता प्रमुख मानी जाती है। इसी सभ्यता की देन है भगवान वरूणदेव का अवतार श्री अमर उडे़रोलाल साईं जिन्हें झूलेलाल साईं भी कहते हैं लालसाईं ने तत्कालीन अरब बादशाहों के अत्याचारों को रोकाऔर हिंदू मुसलमान दोनों को साम्प्रायिक सदभाव और आपसी भाईचारे का उपदेश दिया जिससे प्रभावित होकर हिंदू मुसलमान दोनों उनके अनुयायी हो गए।

सातवीं शताब्दी में सिंध पर अरबों का आक्रमण हुआ। उन्हें कई बार वीर सिंधी सेना से हार का सामना करना पड़ा। किंतु आपसी फूट के कारण ईस्वीं सन् 712 में अरब खलीफा के दामाद मोहम्मद कासिम ने छल कपट से सिंध में इस्लामी हुकूमत कायम करने के कामयाबी हासिल की। सम्राट दाहिरसेन वीरगति को प्राप्त हुए और उनकी पटरानी ने जौहर किया। इसके बाद सैकड़ों वर्षो तक सिंध में अरबों का शासन रहा।

उस समय सिंध की राजधानी नगर ठटटा में थी जो कि सिंधु नदी के किनारे बसा एक विशाल बंदरगाह था। ठटटा में अरबों की ओर से मुकर्र एक सुलतान मृखशाह शासन चलाता था। जो इस्लाम का कटटर अनुयायी था।



उसके मंत्री और सहयोगी कट्टरपंथी मुल्ला लोग थे जो उनको हिंदुओं के खिलाफ उकसाया करते थे। हिंदुओं की बेटियों और महिलाओं का अपहरण उनसे जोर जबरदस्ती और लूटपाट आम बात हो गई थी। अत्याचारों की सीमा तब पार कर गई जब मृखशाह ने ऐलान किया कि राज्य की समस्त जनता चोटी और जनेऊ का त्याग कर इस्लाम धर्म कबूल करे अन्यथा उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली जायेगी। जनता में त्राहि त्राहि मच गई और हिंदुओ के घरों में मातम जैसा माहौल बन गया। ऐसी कठिन घड़ी में कुछ वृद्ध लोगों को गीता के ज्ञान का स्मरण हो आया। जिसमें श्री कृष्ण ने कहा कि जब जब पृथ्वी पर धर्म की हानि होती है अथवा दुष्ट लोग संत महात्माओं को सताते हैं और पाप सीमा से अधिक हो जाता है तब मैं साकार रूप धारण करके पापी और दुष्ट लोगों का विनाश करता हूं।

सिंधु देश के हिंदुओं ने जो कि वैदिक काल से ही वरूण की आराधना करते थे। वरूणदेव की शरण ली और सिंधु पंचायतों के मुखिया और अन्य हजारों लोगों ने लगातार सात दिन तक निर्जल उपवास रखकर वरूणदेव से धर्मकी लाज रखने की विनती की। भक्तों की पुकार सुनकर दीन वत्सल भगवान वरूणदेव का मन पसीजा।

अचानक दरिया की लहरों में उथल पुथल हुई और स्वयं वरूणदेव ने मछली पर विराजमान जलपथ के रूप में दर्शन देकर भक्तजनों को आश्वासन दिया है कि मैं जल्दी ही धर्म की रक्षा के लिए नसरपुर में संत रतनराय के घर माता देवकी की कोख से मनुष्य रूप धारण करके आऊंगा इसलिए तुम लोग मृखशाह से सात दिन का समय ले लो। वरूणदेव का दर्शन पाकर सभी भक्तजन गद् गद् हो उठे तथा खुशी से नाचने लगे।

पंचायतों के मुखिया मृखशाह से मिले और उनसे सात दिन का समय देने की विनती की। बादशाह को विश्वास था कि सात दिन में कौन उनकी रक्षा करने आयेगा। सो उन्होंने सात दिन का समय देना स्वीकार कर लिया।

विक्रम संवत 1007 चैत्र मास शुक्ल पक्ष दूज तिथि (चेटीचण्ड) पर शुक्रवार के दिन नसरपुर के सूर्यवंशी क्षत्रिय कुल के संत रतनराय की धर्मपत्नी देवकी की कोख से वरूणदेव मनुष्य के रूप में अवतरित हुए। जिस समय बालक का जन्म हुआ उस समय आकाश में बादल छाये हुए थे हल्की सी बारिश हो रही थी। और ठंडी हवा के झोकें चल रहे थे। जिससे पेड़ पौधे झूम रहे थे और पक्षी मीठी बोलीबोल रहे थे उन दिनों सिंधु नदी नसरपुर के पास से गुजरती थी और रतनराय का घर नदी के किनारे पर था। जिस समय बालक का जन्म हुआ उसके पूर्व एक अजीब सा दृश्य देखा गया जिसकी ओर सभी का ध्यान आकर्षित हुआ।



جئ جهولي لال

दरिया की लहरों में अजीब सी हलचल हुई और बीच दरिया में (पल्ला) पछली पर सवार सिर पर हीरे जवाहरात से जड़ा मुकुट तथा सफेद चोगा पहने एक फरिश्ता लंबी सफेद दाढ़ी और एक हाथ आर्शीवाद में उठा हुआ लहरों के ऊपर झूलता हुआ नजर आ रहा था सभी उपस्थित श्रद्धालुओं के मुख से यकायक जय झूलेलाल की आवाज गूंज उठी। ऐसा अदभुत दृश्य देखकर सबको विश्वास हुआ कि जो बालक रतनराय के घर पर जन्मा है वही वरूणदेव का अवतार है। उधर पुरोहित ने भी ने भी जब बालक की जन्म लगन निकाली तो आश्चर्य चकित रह गया और कहा कि यह बालक कोई साधारण बालक नहीं है। बल्कि यह तो पारब्रह्म परमात्मा का अवतार है जो जगत् के तारण के लिए और दुष्टों का विनाश करने के लिए पृथ्वी पर सगुण साकार रूप में प्रकट हुआ है। बालक का जन्म नाम उदयचंद रखा गया किंतु लोग उन्हें प्यार से उड़ेरोलाल कहने लगे जिसका अर्थ है जो सदा पास रहे श्री उड़ेरोलाल के जन्म का समाचार बिजली की तरह चारों और फैल गया औ लोग खुशी से झूमने नाचने लगे।

उधर माता देवकी ने जब बालक उड़ेरोलाल को दूध पिलाने की कोशिश की तब बालक ने मुंह बंद कर दिया

और लाख कोशिशों के बावजूद मुंह नहीं खोला। विद्वान पंडितों की कोशिश जब विफल हुई तो माता की उदासी देखकर बालक ने माता कि गोद में अपना मुंह खोला जिसमें माता ने एक अजीब लीला देखी। बालक के मुख के अंदर दरिया बह रहा था। जिसमें पानी में रहने वाले अनेक जीव इधर उधर घूम रहे थे। एवं महापुरूष सफेद दाढ़ी और सफेद कपड़ों में बालक उड़ेरोलाल को जल पिला रहा था। जब माता देवकी ने इस लीला का वर्णन किया तो विद्वानों ने राय दी कि कुछ खाने की वस्तुएं पानी के जीवों के लिए दरिया में डाली जाए और दरिया का जल बालक को पिलाया जाये। विद्वानों की इस राय के अनुसार आटा गुड़ और चावल दरिया में परवान किये गये और दरिया का जल लेकर बालक के मुख में डाला गया उसके पश्चात बालक ने माता का दूध ग्रहण किया।

उड़ेरोलाल साहिब के जन्म का समाचार जब मृखशाह को मिला तो वह घबरा गया और तुरंत अपने सलाहकारों की बैठक बुलाई जिसमें कुछ मौलवी भी शामिल थे। मौलवियों की राय थी कि खुदा कभी इस तरह जन्म नहीं लेता है और यह सब हिंदुओं की चाल है ओर जो खुदा का डर बताकर इस्लाम कबूल करने से बचना चाहते हैं जब सात दिन का समय बीत गया है तो हिंदुओं को जबरदस्ती इस्लाम में लाया जाये। उचित तो यह भी होगा कि उस बालक को भी खत्म कर दिया जाये। बादशाह ने कहा कि

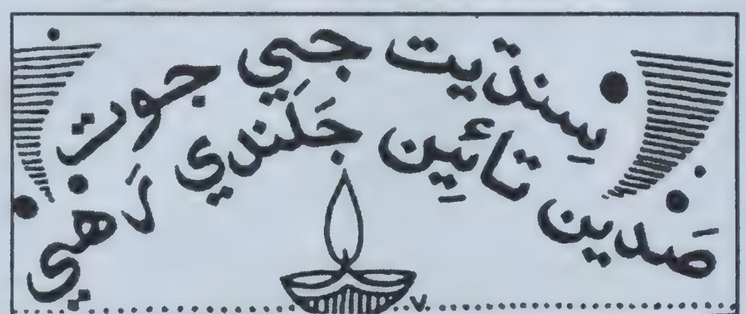


جَئہ جهوُلي لال

पिछली रात मैने उस बालक के बारे में काफी भयानक स्वप्न देखे हैं। इसलिए पूरी हकीकत के बिना हिंदओं के साथ दुर्व्यवहार नहीं करना चाहता। उसने अपने वजीर जिसका नाम यूसुफ आहियों था उसे बुलाकर आदेश दिया कि वह नसरपुर जाकर बालके के औलिया या वली होने के बारे में जांच करे। मुल्लाओं की बात रखने के लिए उसने यूसुफ आहियों को यह भी छूट दी कि अगर हो सके तो बालक को पकड़कर यहां लाया जाये या वहीं पर खत्म कर दिया जाये। बादशाह के आदेशानुसार आहियों वजीर नसरपुर के लिए रवाना हुआ। वहां पहुंचकर वह रतनराय के घर गया और बादशाह तथा अपनी और से उसे बालक के जन्म की मुबारकबाद दी। फिर उसने बालक को देखने की इच्छा प्रकट की। रतनराय आहियो को अंदर उस कमरे में ले गया जहां बालक उड़ेरोलाल पालने में हाथ पैर हिला रहा था। आहियो वजीर बालक का तेजस्वी चेहरा देखते ही समझ गया कि वह सचमुच ही वली है तथा उसे मारना बड़ा गुनाह होगा पर बादशाह का हुक्म और मौलवियों के कोप के बारे में सोचकर उसे अपनी तज्वीज को अमल में लाना जरूरी लगा। उधर रतनराय आहियो को बालक के पास छोड़कर उसके लिए जलपान का इंतजाम करने

चले गये। मौका पाकर आहियों ने अपने रूमाल से एक गुलाब का फूल निकाला जिसमें ऐसा जहर भरा था। जिसे सूंघने से बालक की मृत्यु हो सकती थी। जैसे ही वह फूल बालक के समीप लाया वैसे ही बालक ने इस तरह लात मारी के फूल वजीर के हाथ से छूटकर उसी के मुंह से जा टकराया और वह वहां मूर्छित होकर गिर पड़ा। मूर्छित अवस्था में उसने देखा कि जो बालक पालने में झूल रहा था वह एक जवान योद्धा बन गया है और हाथ में तलवार लेकर उसकी ओर आ रहा है, फिर देखा कि दरिया की लहरों के ऊपर एक बुजुर्ग सफेद लंबी दाढ़ी वाला बैठा है तथा उस जवान योद्धा को आर्शीवाद दे रहा है। दूसरे ही पल वह जवान योद्धा नीले घोड़े पर सवार होकर हाथ में तलवार लिए भारी फौज के साथ दरिया से निकलकर ठटटा नगर की ओर जा रहा है जब वजीर को होश आया तब उसने देखा कि बालक पहले ही तरह ही पालने मे झूल रहा है। आहियो को तब यकीन हो गया कि यह सब लीला उसी बालक ने दिखाई है जो यकीनन हिंदुओं का औलिया है। उसने लालसांई के चरणों में गिरकर अपने आचरण के लिए क्षमा मांगी तथा विनती की कि लालसांई ठट्टा नगर चलकर मृख बादशाह की आंखों पर पड़ीअंधकार की पटटी उतारें। लाल सांई ने मुस्कराकर कहा कि जल्दी ही मैं वहां आऊंगा तुम लोग दरिया किनारे हमारी प्रतिक्षा करना छोटे बालक के मुख से बोल सुनकर वजीर हैरान होकर आंखें मलने लगा तथा एक बार फिर लालसांई से क्षमा मांगकर वह ठट्टे नगर की ओर रवाना हो गया। वहां पहुंचकर सीधा बादशाह के पास





गया और जो कुछ भी उसने देखा था उसका विस्तार से वर्णन कर बताया। जब उसने कहा कि रतरराय का बालक सचमुच वली है तो बादशाह के दरबार मे उपस्थित मौलवियों और अमीरों ने उसकी खूब हंसी उड़ाई। उन्होंने कहा कि वजीर अवश्य किसी जादूगर की चाल में फंस गया है और हिंदुओं की साजिश का शिकार हुआ है बादशाह सलामत का हुकुम न बजा लाने पर उसे कड़ी सजा मिलनी चाहिए। बादशाह स्वयं भी उनकी राय से सहमत थे। पर उन्होंने यूसुफ आहियो को इस दस दिन का समय और दिया कि वह बालक को जीवित या मृत लाकर पेश करे अन्यथा उसे फांसीसी सजा दी जाएगी।

बादशाह का कठोर आदेश सुनकर आहियो को बहुत दुख हुआ तथा उसके मन को ठेस पहुंची। सोचा कि खुदा के भेजे वली और औलिया किसी एक धर्म या मजहब के नहीं होते हैं। बल्कि वे तो खुदा की सारी मख़्लुकात की रहनुमाई तथा कल्याण के लिए आते हैं। वह अवश्य की सही राह दिखाकर संकट से पार लगाएंगे। वैसे भी लालसांई ने कहा था कि वे जल्दी ही यहां आकर बादशाह से मिलेंगे। उन्होंने यह भी कहा था कि सिंधु दरिया के किनारे उनके आने की प्रतीक्षा की जाए। सो वजीर बिना किसी विलंब के दरिया की तरफ चल पड़ा।

नदी किनारे पहुंचकर लालसांई के जो रूप उसने अचेत अवस्था में देखे थे। उनका ध्यान लगाकर सजदे में बैठ गया ध्यान में वह इतना मग्न हो गया कि



چيٽي چنڊ - سنڌيت ڏينهن
جون لک-لک واڌايون !....

उसे न तो समय का कोई ज्ञान रहा और न ही आसपास की घटनाओं का। उसका ध्यान भंग तब हुआ जब उसके कानों में घोड़ों की टापों और पानी के थपेड़ों की आवाज़ सुनाई दी। उसने सोचा शायद बाद शाह के सिपाही उसे पकड़ने आये हैं। और जब उसने आंखे खोली तो कुछ और ही नज़ारा दिखाई पड़ा, जो नौजवान योद्धा उसने अचेत अवस्था में देखा था वही साक्षात नीले घोड़े पर सवार दरिया से निकलकर उसकी ओर आ रहा था। साथ में दो अन्य घोड़ों पर उसके अंगरक्षक और पीछे बेशुमार फौज तलवार भाले बरछियां लेकर दरिया से निकलकर आगे बढ़ रही थी। वह इतनी बड़ी सेना देखकर डर गया फिर भी हिम्मत करके हाथ जोड़कर लालसांई के सम्मुख होकर विनती करने लगा कि हे सांई हमारे बादशाह का आपसे जंग करने का कतई इरादा नहीं है। सो इतनी बड़ी सेना को लाने की आवश्यकता नहीं है मुझे यकीन है बादशाह आपका स्वागत बड़े ही आदर और सम्मानपूर्वक करेंगे। वजीर की बात मानकर लालसांई ने सेना को वापस जाने का आदेश दिया और सारी सेना जल में समा गई। लालसांई अपने दो अंगरक्षकों और वजीर को साथ लेकर ठटटे नगर की तरफ चल पड़े। उनके आने का समाचार सारे नगर में बिजली

की तरह फैल गया तथा हजारों की संख्या में नगर के नर नारी और बच्चे सड़कों पर स्वागत के लिए पहुंच गए। चारों ओर आयोलाल झूलेलाल की गूंज गूंजने लगी और लोग खुशी में नाचने लगे। उधर मृखशाह सब तरफ से जय जयकार की आवाज सुनकर हैरान हो गया और महल के चबूतरे पर आकर यह दृश्य देखने लगा। सामने युसूफ आहियो के साथ लालसांई को आते देखा। उनके नूरानी चेहरे का तेज और भीड़ का जोश देखकर बादशाह दहशत खा गया और थर-थर कांपने लगा। जब वज़ीर आगे आया और उन्हें समझाया कि लालसांई कोई बदला लेने की नीयत नहीं रखते बल्कि वे तो सबको सही राह दिखाने वाले हैं। तब मृखशाह आगे बढ़कर पूरे सम्मान के साथ उनको महल के अंदर ले गये! लालसांई ने अपने दोनों अंगरक्षकों को वापस जाने का आदेश दिया। मृखशाह ने लालसांई को ऊंचे आसन पर अपने समीप बिठाया और कहा कि वजीर यूसुफ आहियों ने मुझे आपके बारे में बहुत कुछ बताया है और यह भी कहा है कि आप हिंदु धर्म की रक्षा करने के लिए आये हैं। और मेरा मन है कि हिंदु धर्म अब पुराना हो चुका है। और आज इस्लाम धर्म सबसे नया और श्रेष्ठ मजहब माना जाता है। हम लोग एक ही खुदा को मानते हैं जबकि हिंदु धर्म में कई देवी देवता हैं। दुनिया के सभी देशों में इस्लाम तेजी से फैल रहा है। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि और वक्त का भी यही तकाजा है कि आप



सभी हिंदुओं से आग्रह करें कि वे खुशी-खुशी इस्लाम कबूल कर लें ताकि हम सब मिलकर एक साथ प्रगति कर सकें।

तब लालसांई ने कहा कि जिस धर्म में जो जीव पैदा हुआ है उसके लिए वही श्रेष्ठ धर्म है सारी सृष्टि एक ही अलख पूरण परब्रह्म परमेश्वर ने बनाई है और सब हिंदु मुसलमान एक समान हैं हिंदु इसे ईश्वर कहते हैं तथा मुलमान इसे अल्लाह। इस संसार में कई धर्म और मजहब हैं पर मंजिल सबकी एक है हर एक अपने अपने विश्वासानुसार उस मालिक की इबादत करता है तुम जो जुल्म करके जबरदस्ती अपना दीन इस्लाम बढ़ा रहे हो सो वह भी इस्लाम के उसूलों के खिलाफ है और तुम खुदा की निगाह में बड़ा गुनाह कर रहे हो जिसके लिए खुदा भी तुम्हें माफ नहीं करेगा। इसलिए मेरी राय मानो और सभी धर्मो के लोगों को अपने अपने धर्म पर कायम रहने दो जिस तरह तुमको इस्लाम प्रिय है उसी तरह हिंदुओं को भी अपने धर्म से लगाव है। मिल जुलकर भाईचारे से रहने में ही सबका भला है। मृखशाह के मन में जो खोट था वह अभी दूर नहीं हुआ था।

नववर्ष एवं चैतीचांद पर्व की बधाई व शुभकामनाएं



परम श्रद्धेय संत हिरदाराम जी





श्रद्धेय सिद्ध भाऊ जी



सुधार सभा द्वारा संचालित

साधू वासवानी स्कूल

एवं

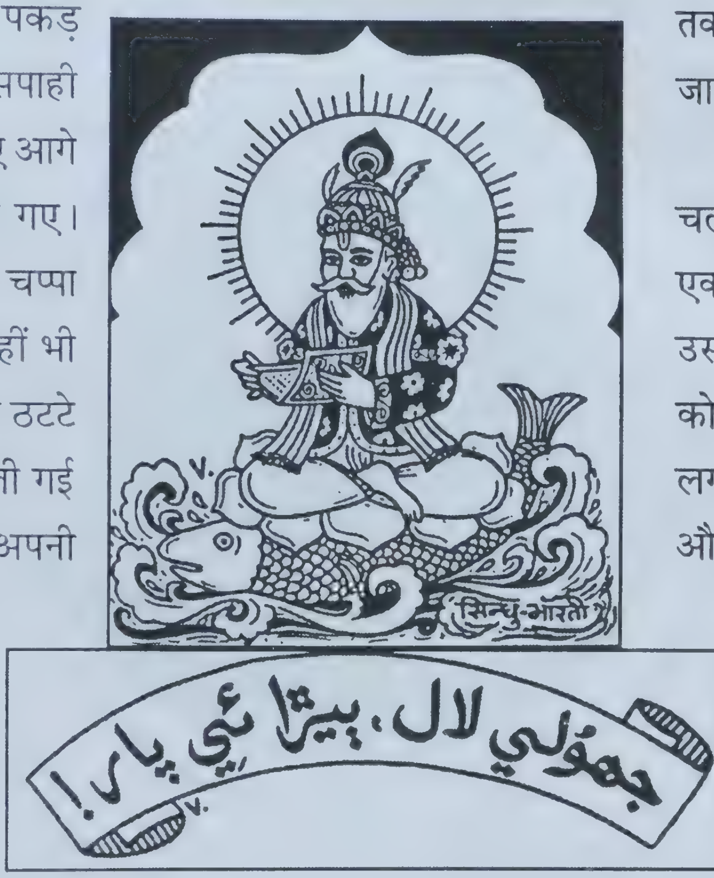
कु. जेठी टी. सिपाही मलानी उ.मा.वि.



विष्णु गेहानी
(शिक्षाविद)

संत हिरदाराम नगर, बैरागढ़ भोपाल फोन-2641221

और उसने अपने वजीर तथा अन्य सलाहकारों जिसमें काजी और मौलवी भी शामिल थे से मश्वरा किया एक मत राय यह बनी कि लालसांई अब अकेला है सो उसे कैद कर दिया लाए और फिर सभी हिंदुओं को जबरदस्ती इस्लाम कबूल करवाया जाए। महल से बाहर जाने के सारे रास्ते बंद कर दिये गए तथा सिपाहियों को बादशाह ने हुक्म दिया कि उडे़रोलाल को पकड़ कर जेल में बंद कर दिया जावे। सिपाही जब लालसांई को पकड़ने के लिए आगे आए तो लालसांई अन्तर्ध्यान हो गए। सिपाहियों ने सारे महल का चप्पा चप्पा छान डाला परंतु लालसांई का कहीं भी पता नहीं चला। तत्पश्चात समस्त ठटटे नगर में प्रत्येक घर की तलाशी ली गई पर लालसांई कही नहीं मिले। अपनी सेना की नाकामयाबी का हल सुनकर बादशाह बहुत क्रोध में आ गया और कपट का सहारा लेकर कहा कि हिंदुओं का गुरू कायर निकला जो बादशाह से डरकर भाग गया। उसने आदेश दिया कि बिना विलंब के सभी हिंदुओं को जबरन इस्लामी मजहब में लाया जाये। फिर देखें कैसे उनका गुरू उनकी मदद करता है। साथ में यह भी आदेश दिया कि समुचित सेना को पूरे हथियारों के साथ तैयार रखा जाए। ताकि यदि उडे़रोलाल ठटटा नगर में प्रवेश करे तो उसे चारों ओर से घेरकर पकड़ लिया जाए। और जरूरत पड़े तो उसे जान से मार दिया जाये। बादशाह का ऐलान सुनकर सभी हिंदू भय भीत होकर अपने परिवार सहित सिंधु नदी की ओर



शरण लेने हेतु दौड़ पड़े। उन्हें विश्वास था कि वरूण देवता जो कि अवतार धारण कर हिंदुओं की रक्षा के लिए आये हैं सो इस तरह हिंदुओं को मझधार में छोड़कर जा नहीं कसते और उनकी मदद अवश्य करेंगे। नदी किनारे पहुंचकर उन्होंने देखा कि वहां एक सुंदर विशाल मंदिर बना हुआ है। जहां सिंहासन पर उडे़रोलाल सांई बिराजमान हैं लालसांई के दर्शन पाकर सभी हिंदू प्रसन्न हुए और लालसांई की जय जयकार करने लगे। लालसांई ने कहा कि अब तुम लोग यहीं रहोगे। जब तक मृखशाह सीधी राह पर नही आ जाता।

उधर मृखशाह को जब यह पता चला कि लालसांई ने अपनी माया से एक मंदिर बनाया है सब हिंदुओं को उसमें शरण दी है तब उसने अपनी सेना को आदेश दिया कि पूरी ताकत लगाकर मंदिर पर हमला किया जाए और मंदिर को गिराकर हिंदुओं का सफाया कर उनके गुरू को बंदी बनाया जाए। जब बादशाह की फौज मंदिर के पास पहुंची तब लालसांई ने अग्नि देवता से आग्रह किया कि वह लपटों से सेना को घेर ले। सेना के चारों ओर आग की लपटें उठने लगी और सैनिकों का शरीर जलने लगा तथा आगे बढ़ने की बजाये वे बादशाह के महल

की ओर भागने लगे। तब लालसांई ने पवन देवता से आग्रह किया कि ऐसी आंधी आए जो सभी सैनिकों को हैरान व परेशान कर दे। पवन देवता ने ऐसा तूफान खड़ा किया जिससे जमीन आसमान एक हो गया सब तरफ अंधेरा छा गया और सैनिक इधर उधर भागने लगे कुछ आग की लपटों में झुलस गए तथा कुछ आंधी में गिरकर कुचले गए। आग नगर की तरफ फैलती गई और मुसलमानों के घर जलने गले। मृखशाह के काफी मौलवी और वजीर अपने घर जलते देख भागकर मैदान में जा खड़े हुए पर आग की गीर्मी आंधी की वजह से वहां भी उनके शरीर तपने लगे और सांस में घुटन होने लगी। सबका बुरा हाल था और सब तरफ चीख चिल्लाहट सुनाई देने लगी। इस मुसीबत का कारण सभी की समझ में आ गया और दर्द से व्याकुल हो कर सभी ने मृखशाह से विनती की कि हिंदुओं के गुरू को सताने का ही परिणाम है इसलिए आप अपनी जिद छोड़कर लालसांईकी शरण में जाकर उनसे क्षमा मांगें तभी इस मुसीबत से छुटकारा मिल सकता है। मृखशाह और उसके कटटरपंथी सलाहकार फिर भी हार मानने को राजी न हुए तब अचानक आग की लपटं और आंधी बंद हो गई। मृखशाह ने समझा कि लालसांई का जादू खत्म हो गया इसलिए उसने अपनी सेना को मंदिर की ओर बढ़ने का आदेश दिया। इतने में एक जोरदार धमाका हुआ। जैसे कोई बांध टूटा हो। दरिया का पानी बड़े जारे से नगर में घुसने लगा। एक और जहां सब हिंदू मंदिर में सुरक्षित थे वहीं मृखशाह के सलाहकार और उसकी फौज के लोग पानी में गोते खाने लगे। मकान गिरने लगे और सम्पत्ति का विनाश होने लगा।



सब तरफ प्रलय का सा नजारा हो गया। तब मृखशाह के होश ठिकाने आने लगे उसने सोचा के इस औलिया पीर की शरण में जाना ही बुद्धिमानी है। वरना सर्वनाश हो जायेगा। कटटरपंथी सलाहकारों ने भी महसूस किया कि इसके सिवासय और कोई चारा नहीं है। मौलवियों ने मान लिया कि लालसांई बेशक एक वली हैं और करामात के धनी हैं। जिनको परेशान करने पर खुदा का कहर बरसेगा। तब मृखशाह अपने सभी सहयोगियों को साथ लेकर दरिया किनारे बने मंदिर में आया जहाँ लालसांई सिंहासन पर बिराजमान थे। लालसांई के सामने सजदा कर मृखशाह ने कहा कि हम लोग बिना कपट के आपके शरण में आए हैं। हम अपनी राह से भटक गए थे और अब अपने गुनाहों के लिए दिलोजान से आपसे माफीं चाहते हैं हम यह भी वायदा करते हैं कि हम आज के बाद हिंदू मुस्लिम में कोई भेदभाव नहीं रखेंगे सबको एक नजर से देखेंगे और सभी को अपने अपने धर्म मजहब के

अनुसार इबादत का हक रहेगा। हिंदुओं से किए गए दुर्व्यवहार के लिए हम बहुत लज्जित हैं और क्षमा चाहते हैं।

तब लालसांई ने मृखशाह को ज्ञान का उपदेश दिया और कहा कि संसार बनाने वाले ने हर धर्म मजहब मानने वाले को जल वायु और प्रकाश के उपयोग का समान अधिकार दिया है इसी तरह प्रत्येक शासक का कर्तव्य हो जाता है कि वह भी प्रत्येक मनुष्य को समदृष्टि से बिना भेदभाव के देखें। सुल्तान मृखशाह ने अन्य मुसलमानों सहित अपना इष्ट मानकर उन्हें जिन्दहपीर के नाम से पूजा और लालसांई का आर्शीवाद पाकर सभी साथियों सहित लौट गया। मृखशाह के जाने के बाद लालसांई ने सभी हिंदुओं को भी अपने अपने घर जाने को कहा। तब सब हिंदुओं ने प्रार्थना की कि आप कुछ समय वहां रहकर हमें अपने दर्शन की प्यास बुझाने दीजिए। और अपने उपदेशों और सत वचनों का आनंद लेने का मौका दीजिए। हिंदुओं की सच्ची श्रद्धा और प्रेम देखकर लालसांई ने कहा कि आप मुझे सदा जल और ज्योति के रूप में देखें तथा जल और ज्योति की पूजा करें। आप इस नगर में एक मंदिर बनवाएं। जहां अखण्ड ज्योति जगाएं और उसमें आप मेरा रूप देखेंगे। जो सच्ची भावना और श्रद्धा से ज्योति स्वरूप के रूप में मेरी पूजा करेगा उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होगी। मैं ज्योति स्वरूप के रूप में सदैव आपके साथ रहूंगा।



इस उपदेश के साथ ही लालसांई अन्तर्ध्यान हो गए और जो विशाल मंदिर दरिया किनारे प्रकट हुआ था वह भी गायब हो गया। लालसांई के आदेशानुसार उसी जगह हिंदुओं ने मृखशाह की मदद से एक मंदिर का निर्माण करवाया और वहां अखण्ड ज्योति स्वरूप की स्थापना की। यह मंदिर आज भी सिंध के ठटटे नगर में कायम है और खड्डे के नाम से जाना जाता है। यहां हिंदू-मुसलमान जियारत के लिए आते हैं। लालसांई के उपदेशानुसार मृखशाह भी हिंदुओं के साथ अच्छा व्यवहार करने लगा और कभी भी उनको सताने की कोशिशे नहीं की।

बाल लीला

एक और जहां लालसांई ठटटे नगर में मृखशाह को सम्प्रदायिक सदभाव और आपसी भाईचारे की शिक्षा दे रहे थे। वहीं दूसरी ओर नसरपुर में अपनी बाल लीला से लागों का मन मोह रहे थे। जब वे डेढ़ बरस के हुए तब पिता रतनराय ने रीति अनुसार उनका मुण्डन संस्कार बड़ी धूमधाम से किया। पांच वर्ष की आयु में उडेरोलाल की शिक्षा के लिए एक पंडित को नियुक्त किया गया। पंडित ने पटटी पर कुछ अक्षर लिखकर जब बालक को समझाना चाहा तो उडेरोलाल बिना हिचक लिखा हुआ सब अपने आप पढ़

गए। पंडित को आश्चर्य हुआ और एक पुस्तक बालक के सामने रखी जो बहुत सरलता से ऐसे पढ़ गया जैसे कि पहले से ही पढ़ चुका हो। पंडित समझ गया कि बालक सामान्य नहीं है। अपितु ईश्वर का अवतार है पर लालसांई ने अपनी माया से पंडित के दिल का भ्रम मिटा दिया। और लोक मर्यादा रखने के लिए पंडित के

कहे अनुसार पढ़ने लगा। आठ वर्ष की आयु में लालसांई ने सब धर्मनीति वेद शास्त्रों का अभ्यास पूरा कर लिया। तब पंडित ने राय दी कि लालसांई का यज्ञोपवीत संस्कार किया जाये ओर किसी ज्ञानी विद्वान से गुरू ज्ञान दिलाया जाए। एक दिन जब रतनराय बालक उडे॒रोलाल के साथ जा रहे थे तो रास्ते में शंकर भगवान ऋषि के वेश में मिले। रतनराय ने ऋषि को प्रणाम किया और उडे॒रोलाल के गुरू ज्ञान के बारे में राय मांगी। उस समय गुरू गोरखनाथ वहां से गुजर रहे थे। सो शंकर भगवान को ऋषि के वेश में देखकर रूक गये तब शंकर भगवान ने रतनराय से कहा कि यह गोरखनाथ हैं इससे अच्छा और कौन गुरू हो सकता है। गोरखनाथ ने बालक को देखकर शंकर जी से कहा हे नाथ यह तो भगवान का अवतार है इसको भला मैं क्या उपदेश दूंगा। शंकर जी ने उन्हें समझाया कि लोक मर्यादा के लिए गुरूमंत्र देना आवश्यक है सो यह कार्य तुम शीघ्र कर लो। भगवान शंकर के आदेशानुसार गोरखनाथ ने उडे॒रोलाल का यज्ञोपवीत संस्कार किया और



गुरूमंत्र देकर अंतर्ध्यान हो गए। दूसरे दिन माता देवकी ने परम्परानुसार बच्चे को यज्ञोपवीत के पश्चात अपनी कमाई से परिवार की आय में अंशदान करना होता है इसी के तहत माता देवकी ने उबले हुए चने का थाल भरकर उडेरोलाल को दिया कि चने बेचकर कुछ पैसे कमा लाए। लालसांई चने का थाल लेकर सीधे सिंधु किनारे गये और सारे चने नदी में जीव जंतुओं को डाल दिए और स्वयं दिनभर नदी किनारे पर बैठे रहे और संध्या को चांदी के सिक्कों से भरा थाल लाकर माता को दिया। जब तीन दिन तक लगातार यह सिलसिला चलता रहा तो माता को शंका हुई सो उन्होंने अपने पति से कहा कि बालक के ऊपर नजर रखें और पता करें कि इतने चांदी के सिक्के रोज कहां से लाता है। अगले दिन रतनराय ने अपने पुत्र का पीछा किया और जो कुछ उन्होंने देखा उससे वे चौंक गये। अंतर्यामी उडे॒रोलाल पिता की उलझन समझ गये और बोले यह धन तो भगवान वरूणदेव के आर्शीवाद से दरिया में मिलता है। और अब मैं सोचता हूं कि इस तरह धन कमाना ठीक नहीं हैं। मैंने वेदशास्त्र पढ़कर जो धर्म ज्ञान प्राप्त किया है वो सब व्यर्थ है यदि उसका उपयोग न किया जाए। ज्ञान

को हमेशा दूसरों में बांटना चाहिए। इसलिए कल से मैं दरिया किनारे जाऊंगा और लोगों को शिक्षा और उपासना के मार्ग का उपदेश दूंगा। तब से रोज दरिया किनारे भक्ति भाव और धर्म की चर्चा होने लगी। उडेरोलाल ने दरियाशाह की भक्ति का नया पंथ स्थापित किया तथा जल और ज्योति की महिमा लोगों को बताई उनका तेजस्वी रूप देखकर अनेक लोग उनके शिष्य बने और उनकी वाणी का रस लेने लगे। उडेरोलाल के चचेरे भाई संत पुगरराय उनके परम भक्त थे जो हमेशा उनके साथ होते थे। पुगरराय की भक्ति प्रेम देखकर एक दिन लालसांई उनकों सिंधु किनारे ले गये। लालसांई ने पगरराय से कहा कि तुम मेरे पीछे पीछे आओ तो मैं तुम्हें वरूण नगरी के दर्शन कराऊंगा जिसकी तुम कभी कल्पना भी नहीं कर सकते। इतना कहकर लालसांई पुगरराय को साथ लेकर विशाल सागर जल में चल पड़े। थोड़ी देर में वे दोनों सागर के तल में पहुंच गए। जिस तरह कोई सपने में सैर करता हो वैसे ही पुगरराय ने सागर तल में अदभुत सृष्टि के बीच एक भव्य मंदिर देखा मंदिर में एक सोने का रत्नजड़ित सिंहासन था जिस पर एक दिव्य ज्योति जल रही थी। ज्योति का तेज देखते ही आंखे बंद हो गई। यह देखकर लालसांई ने उनकी आंखे पर अपना हाथ घुमाया जिसके स्पर्श से पुगरराय को पलभर के लिए जैसे दिव्य दृष्टि मिल गई हो और सामने का दृश्य एक माया रूप में लगने लगा। उन्हें अपने सामने एक अदभुत वैभवशाली भव्य नगरी दिखाई देने लगी जिसे



تن کي ساگر ڇا ٻوڙيندو
جن کي دولهه تاري ---

देखकर पुगरराय आश्चर्यचकित हो गए। तत्पश्चात लालसांई ने पुगरराय को सारी वरूण नगरी की सैर कराई और साथ साथ अपनी समुचित शक्ति का विस्तार से परिचय कराया। उन्होंने कहा हे पुगर जो कुछ अभी तुमने देखा वह सब माया है इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। क्योंकि माया में कुछ भी नामुमकिन नहीं है। अब जो कुछ मैं तुमको बताने जा रहा हूं वह हकीकत है इतना कहकर लालसांई पुगरराय को वापस उस मंदिर ले आये जहां सिंहासन पर ज्योति रखी थी। लालसांई ने कहा हे पुगर तुम जानतेहो कि संकट की घड़ी में ही लोगों ने मुझे याद किया और मैं धर्म की रक्षा के लिए आ गया वरना लोग धर्म और उपासना के मार्ग से भटक गए हैं और मेंने जो यह दरिया पंथ की स्थापना की है यह लोगों में भक्ति भाव जगाने के लिए है। और धर्म का प्रचार करने के लिए है। तब पुगरराय हाथ जोड़कर लालसांई को कहने लगा हे देवों के देव मैंने आज आपकी सृष्टि और शक्ति का सच्चा दर्शन किया है और आपके भक्ति उपदेश सिर आंखों पर रखकर आपके बताये भक्ति मार्ग पर चलकर बिना किसी भेदभाव के मनुष्य जाति के कल्याण के लिए हमेशा तैयार रहूंगा। पुगरराय की बात सुनकर लालसांई अति प्रसन्न हुए और कहा कि हे पुगर अब तुम्हारे और हमारे बीच कोई अंतर नहीं रहा है तुम मुझमें

और मैं तुझमें समा गए हैं। तुम्हें यहां लाने से पहले मैंने अपने दोनों भाईयों सोमराय और भेदूराय से निवेदन किया था कि वे इस कार्य का संचालन करें पथ को आगे पढ़ायें और लोगों को धर्म और उपासना का उपदेश दें। किंतु दोनों ने माया मोह के कारण और गृहस्थ जीवन से समय निकालकर धर्म का प्रचार करने में अपनी असमर्थता बताई। अब मैं यह दायित्व तुमको सौंप रहा हूं क्योंकि तुम इस कार्य के पूर्णत सक्षम हो। आज से ही मैं तुमको ठकुर की उपाधि प्रदान करता हूं। अब तुम ठकुर पुगरदेव के नाम से जाने जाओगे। और ये सात वस्तुएं जो मैं तुम्हे दे रहा हूं तथा उनकी महिमा भी तुम्हें बता रहा हूं इतना कहकर लालसांई ने सिंहासन पर ज्योति स्वरूप के पास रखी सात वस्तुएं ठकुर पुगरदेव को सौंपी और एक एक करके सबकी महिमा वर्णन की।

पहली वस्तु थी झारी (कलश) जिसकी महिमा का वर्णन करते हुए लालसांई ने कहा कि इसमें जो जल भरा है वो जीवों के लिए सुखदायी और अमृत समान है। जल से जीवन जुड़ा है बिना जल कोई मनुष्य पशु पक्षी जीवित नहीं रह सकता अत एवं यह जीवन का प्रतीक माना जाता है।

दूसरी वस्तु थी **अखण्ड ज्योति** जो ऊर्जा का प्रतीक है जिससे दुनिया चलती है और यह छोटा सा ज्योति कलश जो सामने रखा है वह अंधकार दूर करके प्रकाश देता है। इसके दर्शन करने से अज्ञान का अंधकार दूर होगा। इसलिए जल और ज्योति दोनों प्रकट रूप में फलदायी होने के कारण पूजा



योग्य हैं।

तीसरी वस्तु थी **कंथा** (सूती धागे से बुना हुआ वस्त्र) जिसे धारण करने से शरीर स्वास्थ रहेगा और रोग तथा कीटाणुओं से मुक्त रहेगा।

चौथी वस्तु थी **वैध** (अंगूठी) जिसको पहनकर जो वचन करेगा। मुख से निकलेगा वह सत्य होगा और मनोकामनाओं को पूरा करेगा।

पांचवीं वस्तु थी **देग** (खाना पकाने का बड़ा बर्तन) जिसमें से कितने भी लोग भोजन कर सकते हैं पर कभी खाली नहीं होगी।

छठी वस्तु थी **ढकला** (नगाड़ा) जिसमें से असंख्य नाद उत्पन्न होते हैं जो दूर दूर तक सुनाई देते हैं। जिसके सुनने से लोगों के मन के पाप दूर हो जाते हैं।

सातवीं एवं अंतिम वस्तु थी **तेग** (तलवार), जिसके द्वारा भीतरी अथवा बाहरी शत्रुओं का विनाश होता है।

सातों वस्तुएं पुगरदेव को सौंपते हुए लालसांई ने कहा कि हे पुगर जो आज्ञा मैंने तुम्हें दी है उस पर अमल करने से तुम्हारा भी उद्धार होगा मेरा कोई प्रेमी शिष्य सेवक तुम्हारे दरवाजे पर आऐ तो उसको उपदेश देकर जल और ज्योति की पूजा विधि अनुसार करवाना और तुम भी मेरे नाम का स्मरण करते रहना जिससे जग में तुम्हारा नाम ऊंचा रहेगा।

इसके बाद दोनों सागर जल से बाहर आये। लालसांई के आदेशानुसार ठकुर पुगरदेव ने एक मंदिर का निर्माण

करवाया। जिसमें अखण्ड ज्योंति की स्थापना की और लाल सांई से मिली वस्तुओं का उपयोग उनके आदेशानुसार करने लगे लासांई की कृपा से ठकुर पुगरदेव का नामाचार बढ़ने लगा और दूर दूर से लोग उनका दर्शन करने तथा उपदेश सुनने के लिए आने लगे। बारहों महीने मेला सा लगा रहता था मंदिर में चढ़ावे के रूप में कई अमूल्य वस्तुएं और बेशुमार धन भी आने लगा। यह सब देखकर उडेरोलाल के भाईयों के मन में ईर्ष्या उत्पन्न हुई तथा उन्होंने पुगरदेव से यह कहा कि यह सब धन दौलत हमारे भाई की वजह से आई है। अतएवं उस पर हमारा अधिकार है ठकुर पुगरदेव कोई उत्तर न देकर चुपचाप बैठे रहे। तब अंतर्यामी उडेरोलाल पुगरदेव की दुविधा देखकर अचानक वहां प्रकट हुए। उन्होंने दानों भाईयों को याद दिलाया कि उनके इंकार करने के पश्चात् ही यह कार्य पुगरदेव को सौंपा गया था। दोनों भाई बहुत लज्जित हुए और पुगरदेव से दुर्व्यवहार के लिए माफी मांगी तब लालसांई ने दोनों भाईयों से कहा कि तुम भी ज्योति की स्थापना कर झारी रखोंगे तो हमारे शिष्य तुमको भी पूजने लगेंगे। और तुम उनको झारी में से अंचली देकर आर्शीवाद दे दिया करना।

उधर उडेरोलाल सांई ने अपने माता पिता से कहा है कि जिस मकसद के कारण मैंने मनुष्य के रूप में अवतार धारण किया वह अब पूरा हो गया है और जल और ज्योति की उपासना का भेद समझाकर अब मुझे सभी जीवों के



सिन्धु भारती

दुख दूर करने का विचार है। अत एवं में अब घर छोड़कर अपना शेष कार्य पूरा करने जा रहा हूं। यह सुनकर उनके माता पिता बहुत दुखी हुए। माता पिता को शोक में देखकर लालसांई ने कहा कि जगत में माता पिता पुत्र कोई किसी का नहीं है और यह सब प्रालब्ध के योगवश आकर एक दूसरे से मिलते हैं और समय आने पर फिर अलग हो जाते हैं। और फिर मैं तो कहीं दूर नहीं जा रहा हूं सदा आपके साथ रहूंगा। यह कहकर लालसांई वहां से चले गये और जगह-जगह लोगों को अपने नए मत का उपदेश दिया। वे जहां भी जाते थे वहां भक्तों की भीड़ उनके प्रवचन सुनने पहुंच जाती थी। और श्रद्धालुओं का टोला हमेशा उनके पीछे लगा रहता था। जो लालसांई की जय जयकार और आयोलाल झूलेलाल के न` लगाते रहते थे।

भक्त वत्सल संकटमोचन उडेरोलाल

सिंध मेंकराची बंदरगाह के समीप मनहोरे के नाम से एक छोटा सा द्वीप प्रसिद्ध है। वहां के मछुआरें समुद्र के उतार चढ़ाव से हमेशा परेशान रहते थे। हर माह के शुक्लपक्ष में अपने घर छोड़कर दर बदर फिरते थे। क्योंकि तब पूरा द्वीप जलमग्न हो जाता था। पीने और घरेलू काम के लिए स्वच्छ पानी की भी किल्लत रहती थी। मछुआरे वैसे तो वरूणदेव की उपासना करते थे पर अब जब उन्होंने सुना कि वरूणदेव

अवतार धारण कर उडे़रोलाल के रूप में प्रकट हुए हैं तो सबने मिलकर लालसांइ की स्तुति की ओर उनको मदद के लिए पुकारा। लालसांई मछ्आरों की पुकार सुनकर मनहोरे द्वीप पहुंचे। तब लालसांई की कृपा दृष्टि से समुद्री ज्वार और डूब का सिलसिला भी बंद हो गया। लालसांई कुछ दिन वहां ठहरे जल और ज्योति की महिमा का प्रचार किया और लागों का प्रेम भाव देखकर वहां एक विशाल मंदिर के निर्माण का आदेश दिया। एक जगह अपने भाले की नोक से जीमन पर उन्होंने निशान लगाकर वहां एक कुआं खुदवाया जिससे साफ स्वच्छ पानी मिलने लगा। वह मंदिर और कुआं आज भी मनहोरे द्वीप पर मौजूद है और हर चांद तिथि पर मेला लगता है जहां दूर-दूर से श्रद्धालु आते हैं।

सिंध के उत्तरी भाग में सिंधु नदी के किनारे दायीं और रोहिड़ी ओर बाई ओर सक्खर नगर बसे हैं। और नदी के बीच में बख्खर नाम का छोटा सा द्वीप है। उन दिनों नदी में बड़े-बड़े बेड़े और नौकाएं चलती थी जिनके द्वारा समस्त व्यापार चलता था। नदी किनारे बसे शहरों में एक शहर से दूसरे शहर में सामान लाया ले जाया जाता था। एक बार परमानंद नाम के सौदागर और उसके मल्लाह ताहिर का बेड़ा रोहिड़ी और बख्खर के बीच भवंर में फंस गया बेड़े में बहुमूल्य सामान भरा था और बेड़ा भंवर में गोल-गोल धीरे-धीरे डूबने लगा। ऐसी संकट की घड़ी में सौदागर और मल्लाह ने लालसांई को पुकारा। अंतरयामी ने अपने भक्तों की



पुकार सुनी और पुगरदेव से यह कहकर कि मैं अभी आया उन्होंने दरिया में डुबकी लगाई। उधर सौदागर को लगा कि कोई अजनबी हाथ उसके बेड़े को नीचे से धकेलकर ऊपर ले आ रहा है। क्षणभर में नाव उछलकर बिल्कुल सुरक्षित भंवर से बाहर आ गई। भंवरके समीप एक पहाड़ीनुमा छोटा सा द्वीप और था। सौदागर परमानंद और उसके मल्लाह ने देखा कि एक दरवेश सफेद लंबी दाढ़ी रखे हुए आसन लगाए एक हाथ आर्शीवाद की मुद्रा में लिए बैठे हैं। अब तक नदी के किनारे काफी भीड़ जमा हो गई थी। और यह चमत्कार देख सभी हैरत में पड़ गए। सौदागर परमानंद और ताहिर मल्लाह लालसांई के साक्षात दर्शन करके धन्य हो गए। आगे बढ़कर उन्होंने लालसांई के चरण स्पर्श किए। तब लालसांई ने वहां उपस्थित जन समूह को जल ज्योति मंदिर का निर्माण करने का आग्रह किया। परमानंद और अन्य व्यापारियों ने मलकर उस छोटे द्वीप पर अखण्ड ज्योति मंदिर बनवाया जिसका नाम जिन्दहपीर रखा गया। यह मंदिर आज भी रोहिड़ी और बख्खर के बीच नदी में द्वीप पर मौजूद है और सैकड़ों श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं। वहां से गुजरने वाली हर कश्ती वहां रूककर ज्योति स्वरूप को नमस्कार करने के बाद ही आगे जाती है। आज तक वहां फिर कोई दुर्घटना नहीं घटी है। वहां मौजूद पुजारी बताते हैं कि हर साल



सावन मास में सिंध नदी में बाढ़ आती है। ओर नदी का पानी मंदिर के अंदर तक जाता है। पर वहां ज्योति स्थापित है पानी वहां तक पहुंचकर उतरने लगता है। कभी भी ज्योति स्वरूप के ऊपर नहीं आता।

इस तरह उडेरोलाल सांई अपने भक्त जनों के संकट निवारण करते दरिया पंथ का उपदेश देते और जहां तहां जल ज्योति की उपासना के लिए मंदिर कीस्थापना करते रहे। जब वे बारह वर्ष के हुए तब भक्तजनों के सम्मुख उन्होंने इच्छा व्यक्त की अब ऐसे पूजा स्थल का निर्माण करना है जहां सभी समुदाय के लोग पूजा कर सकें। जो सर्वधर्म तीर्थ स्थल के रूप में पहचाना जाए और सभी सम्प्रदायों की एकता और भाईचारे का प्रतीक बना रहे। उन्होंने कहा मैं ऐसे पूजा स्थल के लिए उपयुकत स्थान तलाश कर मंदिर स्थापना के लिए जा रहा हूं इस तरह लालसांई नसरपुर के अपने 'सभी प्रेमियों को अपना अंतिम संदेश देकर अपने भीतीजे कोडुणराय को साथ लेकर किसी उपयुकत स्थान की तलाश में निकल पड़े। चलते-चलते वे जीहेजन के गांव के पास पहुंच गए। वहां उन्होंने एक हरा भरा खेत देखा जिसमें एक कुआं भी था। लालसांई को यह जगह पूजा स्थल के लए उपयुक्त लगी। जमीन का मालिक एक मुसलमान शेख मेमण था जो खेत में काम कर रहा था। लालसांई उसके पास गए और कहा कि यह जमीन और कुआं हम खरीदना चाहते हैं। शेख



मेमण ने सोचा कि यह बालक मुझ बूढे से मजाक कर रहा है सो कहा ऐ बालक अपने से बड़ों से मज़ाक करना अच्छी बात नहीं है। तुम जाकर पजहले पैसे लेकर आओ फिर आकर सौदे की बात करो। लालसांई ने अपने भाले की नो से ज़मीन पर दो लकीरे खींची और ज़मीन को खोदा तो एक कलश नजर आया। उन्होंने शेख मेमण से कहा ये रहे पैसे इसमें जितने चाहिए उतने उठा लो। हम इस जमीन पर एक ऐसा विशाल धर्मस्थल बनाएंगे। जहां श्रद्धालुं हिंदु हो चाहे मुसलमान आकर अपने अपने विश्वास में बंदगी करेंगे और कुएं से ठंडा पानी पीकर विश्राम करेंगे। मेमण यह चमत्कार देखकर अचम्भे में आ गया। उसने नसरपुर वाले चमत्कारी बालक के बारे में सुन रखा था। इसलिए सोचा कि हो न हो यह वही बालक है। उसने लालसांई से हाथ जोड़कर माफी मांगी थी। औश्र कहा कि सांई मुझे पैसे आदि कुछ नहीं चाहिए पर जमीन देने के बारे में मैं अपनी बीवी से पूछकर आता हूं। मेमण जब घर गया तब दोपहर का समय था और धूप काफी तेज थी इसलिए लालसांई ने एक सूखी टहनी का टुकड़ा उठाकर ज़मीन में गाड़ दिया जो देखते ही देखते एक विशाल वृक्ष बन गया। तथा वे स्वंय एवं कोटणराय उसकी छांव में बैठ गए थोड़ी देर में मेमण अपी पत्नी को लेकर आ गया। वहां पर नया लगा पेड़ देखकर उनको विश्वास हा गया कि यह वही नसरपुर वाला हिंदुओं

का औलिया है दोनों मियां बीबी ने लालसांई से विनती की कि सांई आप तो कुदरत के धनी हैं और जो जमीन ले रहे हैं वो भी खुदा के काम के लिए इसलिए यह जमीन और कुआं अब आपकी ही जायदाद हैं हमको बदलें में कुछ भी नहीं चाहिए। हम दानों अब बूढ़े हो चुके हैं और कोई संतान भी नहीं है। इसलिए विनती है कि आप आर्शीवाद दें कि हमकों संतान उत्पन्न हो हम अपनी बाकी जिंदगी आपकी चाकरी में बसर कर लेंगे और हमारी संतान यहां आपकें बनाए धर्म स्थल पर गुजावर अनकर सेवा करेगी। मेमण और उसकी पत्नी की बात सुनकर लालसांई ने उनको आर्शीवाद दिया और कहा कि आपकी इच्छा पूर्ण होगी। आपको पुत्र रत्न होगा जो यहां रहकर धर्मस्थल की सेवा करेगा तो कभी किसी तरह की कमी नहीं होगी। लालसांई के जीहेजन में आने और उनकी शेख मेमण से हुई मुलाकात और बातचीत के बारे में समाचार तेजी से सब और फले गया और आपसाप के गांवों से श्रद्धालुओं की टोलियां दर्शन करने और प्रवचन सुनने को आने लगी। लालसांई को पूजा स्थल का निर्माण करने के लिए वहां कुछ समय के लिए रूकना पड़ा और वहां नित नियम सत्संग होता था ओर भंडार आदि खुलता था। वहां आज भी मौजूद है और माणकटारों के नाम से जाना जाता है। वहीं पास में प्रवचन के लिए एक सभागृह बनवाया जिसको कचहरी



कहते हैं। झूलेलाल सांई ने थोड़ी दूर पर अपने भाले के निशान लगाकर एक कुएं का निर्माण करवाया। इस कुएं को बालम्भो कहते हैं तथा इसका पानी रोगियों के लिए दवा का कार्य करता है। जब यह निर्माण कार्य पूर्ण हो गया तब लालसांई ने संदेश भेजकर संत ठकु पुगरदेव और अपने भाईयों को वह बुलवाया। उन्होंने अपने मित्रों औ भक्तजनों से कहा कि अब मेरे जाने क समय आ गया है आप लोग मेर जाने से दुखी न होना क्योंकि जगत में धर्म औ मर्यादा कायम रखने के लिए ईश्वर के अवतार आते हैं औश्र अपना काय करके अंतर्ध्यान हो जाते हैं। इसको बिछोह या जुदाईन हीं समझना चाहिए मैंने जल और ज्योति की उपसना के निये माग का बोध कराकर अपन ।अवतारी कार्य पूरा कर लिया है अब आप सब जिन्होंने इस मत को स्वीका किया है हर नगर हर गांव जाकर इस बात का प्रचार करना और जगह जगह जल और ज्योति की प्रतिष्ठा करना। मैंने संत ठकुर पुगरदेव को नियुक्त किया हैजा कि सबका मार्गदर्शन करेगा औ पुगरदवे के वंशज पीढ़ी दर पीढ़ी इस कार्य का संचालन करते रहेंगे। इस तरह अपना अंतिम संदेश देकर लालसांई ने अपना भला जमी नमें गाढ़ा और आगे बढ़करपाताल मार्ग से धरती में सम गए। वह दिन विक्रम संवत 1020 की भादू सदी चौदास का दिन था हल्के

वर्षा हो रही थी और आकाश से देवताओं ने फूलों की वर्षा की। श्रद्धालुओं की जय जयकार से आकाश गूंज उठा। यह अलौकिक दृश्य देखकर ठकुर पुगरदेव बहुत दुखी हुए। अपने भक्तों और श्रद्धालुओं के सम्मुख जिस जगह लालसांई धरती में समाए थे। वहां पर वे एक समाधि बनाने की तैयारी करने लगे। उधर मृखशाह को जैसे ही लालसांई के अंतर्ध्यान होने का समाचार मिला उसने अपने वजीर को गांव जीहेजन के लिए रवाना किया। वजीर ने वहां पहुंचते ही उस स्थल पर एक मज़ार बनाने का आदेश दिया। इस बात पर ठकुर पुगरदेव और वजीर के बीच विवाद छिड़ गया। बादशाह मृखशाह को जब इस विवाद की खबर मिली तो वह स्वयं आ पहुंचे उन्होंने कहा कि इस बात का निर्णय स्वयं लालसांईपर छोड़ दिया जाये तो ठीक रहेगा। बादशाह का सुझाव सभी को उचित लगा और उपस्थित लोग लालसांई को ध्यान लगाकर पुकारने लगे तभी आकाशवाणी हुई कि किसी तरह की तकरार करने की आवश्यकता नहीं है। मैं तो सबका हूं इसलिए स्मारक भी ऐसा ही हो जहां दोनों समुदाय के लोग अपने अपने ढंग से इबादत कर सकें। और आपसी भाईचारे की मिसाल कायम हो। मजार के समीप ही ज्योति मंदिर स्थापित किया जाये तथा मजार और ज्योति मंदिर की पूजा ठकुर पुगरदेव और उसके वंशज करेंगे। जबकि शेख मेमण और उसके वंशज मजार पर मुजावर



होकर रहेंगे और रोजमर्रा की साफ सफाई करेंगे। लालसाई की आज्ञा पाकर मृखशाह ने पूरा निर्माण अपनी तरफ से करवाया। इस बड़े सभागृह के दांई और लालसांई की मजार बनाई और बांइ तरफ अखण्ड ज्योति मंदिर। दोनों समुदायों के लोग दानों पूजा स्थल पर बिना किसी भेदभव के आते हैं। बाहर बरामदे में ढकले का प्रतीक बना नगाड़ा रखा है। जिसकी आवाज पर श्रद्धालु नाचते गाते हैं और घूमर तथा डांडिया नृतय (छेज) करते हैं। सारे परिवर के इर्द गिर्द बादशाह ने किला बनवाया जिसकी परिधी में मजार ज्योति मंदिर चौखड़ी माणकटारों भंडार और पुजारियों के रिहायशी कमरों के अलावा कुछ और कमरे जिनकों तज़र कहते हैं। ठकुर पुगरदेव और उसके वंश में लोगों के ठहरने के पूरे परिसर को उडेरोलाल ही कहते हैं। अंग्रेजो के शासनकाल में यह स्थल रेलवे लाईन से जुड़ गया तथा रेलवे स्टेशन का नाम भी उडेरोलाल सांई अपना अवतारी कार्य पूर्ण करके अमरलाल हो गये।

कथा पुगरदेव और अम्माबाई की

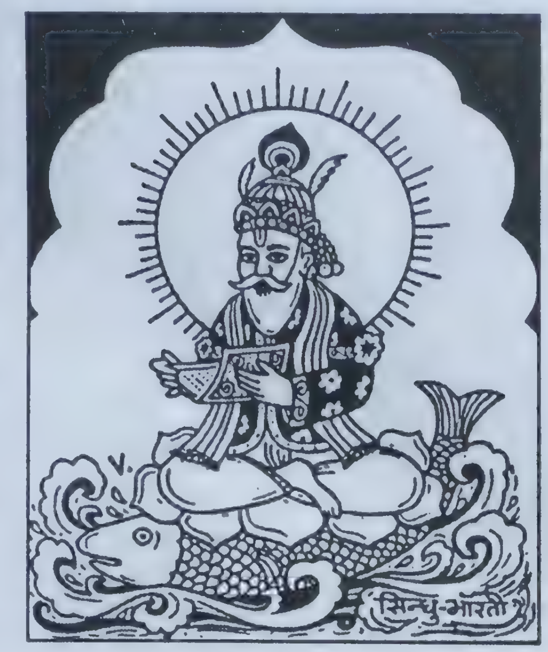
अमर उडेरोलाल की अमर कथा यहीं पर समाप्त नहीं हुई। लालसांई के अंतर्ध्यान होन के पश्चात पंथ का संचालन पूर्णत उनके परम भक्त ठकुर पुगरदेव ने संभाला और आज जो देश विदेश में लालसाई ही उपासना तथा जन और ज्योति की पूजा अर्चना होती है उसका श्रेय ठकुर पुगरदेव ओर उनके बंशजों को जाता है। इसलिए संत

पुगरदेव की जीवनी पर प्रकाश डाले बिना यह कथा पूर्ण नहीं हो सकती। ठाकुर पुगरदेव ने सिंध पंजाब, गुजरात आदि का भ्रमण किया। जगह जगह लालसांई के मत का प्रचार किया हजारों की संख्या में लोग उनके शिष्य बने और गांव गांव और शहर शहर में जलज्योति के मंदिरों की स्थापना हुई परंतु एक और जहां ठकुर पुगरदेव अपने धार्मिक कार्य सं संतुश्ट थे वहीं दूसरी और वह अपनी ढलती उम्र के कारण चिंतित भी थे। उनकी चिंता का कारण यह था कि उनकी कोई संतान न थी आरै गद्दी का उत्तराधिकारी कार्य संभालने वाला कोई नहीं था। अंतर्ध्यान होने के पश्चात् लालसांई रोज रात को पुगरदेव को दर्शन देते थे। किंतु पुगरदेव ने कभी भी अपने लिए संतान और किसी उपहार के लिए लालसांई से मांग नहीं की। पुगरदेव प्रारंभ से ही



उडेरोलाल सांई के प्रभाव में आ जाने से धर्मप्रचार में व्यस्त रहे और गृहस्थ जीवन से बिल्कुल अलग हो गए। उनकी पत्नी उनकी चिंता का कारण जानती थी पर अब उसकी आयु वह सीमा पार कर चुकी थी जब वह पति को संतान का सुख दे सके। तब उसने पुगरदेव को दूसरी शादी करने का पस्ताव दिया। संत के शिष्य भी इस बात से सहमत थे कि पुत्र रत्न प्राप्त के लिए उनका दूसरा विवाह करना आवश्यक है। अपनी पत्नी शिष्यों के कहने से पुगरदेव दूसरी शादी करने को राजी हो गए। उनके लिए योग्य करने को राजी हो गए। उनक लिए योग्य कन्या का चयन स्वयं निर्मल बाई ने किया और शुभ महूर्त में पुगरदेव की दूसरी शादी हो गई। शादी के मंडप से पुगरदेव अपनी दूसरी पत्नी के साथ मंदिर में माथ टेकने और लालसांई से

आर्शीवाद लेने गए और जब ज्योति स्वरूप के सामने दण्डवत प्रणाम किया तो स्वयं उडेरोलाल सांई प्रकट हो गए। लालसांई ने कहा हे पुगर यह देवी जिसको तुम अपनी पत्नी के रूप में लाए हो वह तो शक्ति का रूप स्वयं अम्बादेवी है जो जगत की जननी है। इसलिए तुम भी उसके चरण स्पर्श करो। इसको कभी अपनी पत्नी न समझना। पुगरदेव लालसांईक ी बात सुनकर संकट में पड़ गए उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए पत्नी को प्रणाम किया और अम्माबाई कहकर संबोधित किया। पर इससे न तो उनकी उलझन का समाधान हुआ और न ही लालसांईकी बात समझ में आई इसलिए उन्होंने विनती की कि हे दीनदयाल प्रभु आपने मुझे गद्दी सौंपते समय आदेश दिया था कि मेरे पश्चात मेरी संतान गद्दी संभालेगी। और पंथ का संचालन करेगी। आपके अंतिम संदेश में भी आपने इसी बत को दोहराया था इसलिए मैंने यह शादी आपकी आज्ञा पालन के लिए पुत्र प्राप्ति के लिए की है। और मेरी पहली पत्नी तथा आपके शिष्यों की अनुमति से यह सब हुआ है। कृपया आप ही बताएं कि मेरे लिए और क्या विकल्प था। लालसांई ने पुगरदेव की बेचैनी देखकर कहा कि हे पुगर मैं



तुमकों पूर्वजन्म का एक रहस्य बताता हूं जो तुम ध्यान से सुनो उसके पश्चात तुम्हारी उलझन का समाधान भी मैं तुमको बताऊंगा। लालसांई नू पूर्व जन्म का रहस्य इस तरह वर्णन किया।

एक बार एक साधु बचपन से ही एक वन में रहता था और अपना समय व्यायाम एवं ईश्वर भक्ति में व्यतीत करता था। वन के बाहर की दुनिया से वह बिल्कुल बेखबर था। एक दिन वह साधु वन में घूमते-घूमते अपनी राह भटक कर वन की सीमा के बाहर शहरी क्षेत्र में प्रवेश कर गया। वहां उसने देखा कि एक युवक अच्छे चमकीले वस्त्र पहनकर और सिर र मुकुट धारण कर आभूषणों से सजी एक घोड़ी पर बैठकर जा रहा है आगे-आगे ढोलक और शहनाई की धुन पर कुछ लोग नाचते गाते जा रहे थे। और पीछे बहुत सारे स्त्री पुरुष खुशी के गीत गाते चल रहे थे। साधु को यह दृश्य बहुत अच्छा लगा इसलिए पास में खड़े एक व्यक्ति से पूछा कि यह क्या हो रहा है ? उसने कहा कि यह घोड़े पर सवार युवक विवाह करने जा रहा है और इसे दूल्हा कहते हैं। हम सब इसके रिश्तेदार मित्र और बाराती हैं। साधु ने कहा कि मुझे यह बहुत अच्छा लग रहा है। और मैं भी दूल्हा बनना चाहता हूं। युवक साधु को राजा के पास ले गया व राजा को साधु की इच्छा से अवगत कराया। उन दिनों साधु संतों की बात टालना महापाप समझा जाता था। इसलिए राजा ने अपनी विवाह योग्य कन्या का उस साधु के साथ विवाह करना तय किया। दूसरे दिन साधु को नये वस्त्र पहनाकर सिर पर मुकुट रखकर सजी हुई घोड़ी पर बैठाया गया। आगे-आगे शहनाई व ढोलक की तान पर कुछ

नाचते हुए चले तथा गांव के स्त्री पुरूष बारात में शामिल हो गए। साधु बहुत प्रसन्न हुआ जब बारात कन्या के घर पहुंची तब गान बंद हो गया और साधु को घोड़ी से उतरने को कहा गया। साधु ने पूछा यह शहनाई ढोलक और गाना बजाना क्यों बंद किया? मुझे तो यह बहुत अच्छा लग रहा है आप लोग बजाते रहो। तब गांव के मुखिया ने साधु को समझाया कि अब कन्या का घर आ गया है और कन्या पक्ष के लोग आपके स्वागत के लिए खड़े हैं। आपको अब मण्डप में चलकर शास्त्र विधि से ब्याह करना है। यह सुनकर साधु ने कहा मैं तो केवल दूल्हा बनना चाहता था और मुझ तपस्वी को विवाह से क्या लेना। वह घोड़ी से उतरा नए वस्त्र और मुकुट उतारकर मुखिया को दे दिया और अपने लंगोट में वन की



ओर चल पड़ा। यह वाक्या सुनाकर लालसांई ने पुगरदेव से कहा हे पुगर वह साधु पिछले जन्म में तुम थे और अम्माबाई वह कन्या है तुम्हारे वन में चले जाने के पश्चात उस कन्या ने किसी अन्य से विवाह करने से इंकार कर दिया क्योंकि मन ही मन उस साधु को अपना पति मान चुकी थी। तुमसे विवाह की रस्म पूरी करने की तमन्ना उसके मन में रह गई जो आज तुमने पूरी कर दी। पर जिस दृढ़ता से उसने अपने संकल्प का पालन किया एवं स्त्रीत्व पर कायम रही और अपना समस्त जीवन ईश्वर भक्ति में बिताया उसके फलस्वरूप उसे जगत जननी माता अम्बा की पदवी प्राप्त हुई जिसके कारण वह पूजनीय है। अपने पूर्वजन्म का हाल सुनकर पुगरदेव के मन में अम्माबाई के प्रति श्रृद्धा और बड़ गई और एक बार फिर उसने अम्माबाई को प्रणाम किया और लालसांई से अपने

लिए पुत्र संतान के विषय मे मार्गदर्शन चाहा। लालसांई ने कहा कि जिस तरह शेख मेमण और उसकी पत्नी को मेरे आर्शीवाद से तुम्हारी पहली पत्नी निर्मलाबाई से संतान प्राप्त होगी। इतना कहकर लालसांई अंतर्ध्यान हो गए। पुगरदेव भी पंथ का कारोबार अम्माबाई का सौंपकर लालसांई के आज्ञानुसार गृहस्थ जीवन का सुख भोगने के लिए अपनी पहली पत्नी निर्मल बाई के साथ रहने लगे। एक वर्ष होने के पहले ही निर्मल बाई ने पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम अम्माबाई ने बुढ्डा साहिब रखा क्योंकि वह पुगरदेव और निर्मलाबाई को बुढ़ापे में उत्पन्न हुआ था। पुत्र को जन्म देने के कुछ ही दिनों बाद निर्मल बाई का देहांत हो गया और पुगरदेव ने बालक का पालन पोषण का भार अम्माबाई को सौंपकर कहा कि अब मेरे जाने का समय भी आ गया है और मंदिर और पंथ का कार्य अब तुमको ही देखना है। बुड्ढा साहिब के बड़े होने पर गद्दी उसे सौंप देना। पुगरदेव फिर दरिया किनारे गए और लालसांई का ध्यान कर जलमार्ग से वरूण नगरी के वासी हो गए। लालसांई की आज्ञा अनुसार सभी शिष्यों ने अम्माबाई को जगत जननी माता करके आदर दिया उसकी सेवा पूरी श्रृद्धा से की उसकी आज्ञा के अनुसार चले।



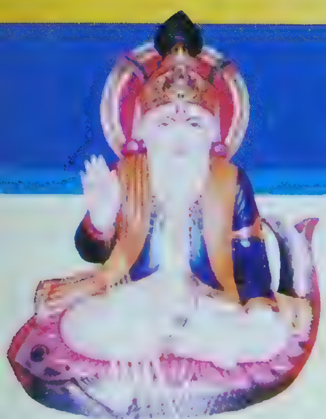
अम्माबाई ने अपना कार्य पूरी निष्ठा व लगन से किया। उसकी वाणी में अमृत रस था और उसके वचन कभी खाली नहीं जाते थे। अम्माबाई ने लालसांई की उपासना और जल व ज्योति की पूजा का उपदेश घर घर तक पहुंचाया। सिंध पंजाब और गुजरात के कई श्रृद्धालु अम्माबाई के दर्शन करने और उनकी वाणी सुनने को आते थे। आज भी दरिया शाह के पुजारी बहिराणा (दरिया में अन्न समर्पित करने की रस्म) के समय अम्माबाई का भोग निकालकर बाद में प्रसाद बांटते हैं। अम्माबाई ने बुढ्डा साहिब को योग्य गुरूओं से धर्म शिक्षा दिलवाई और उसको लालसांई के मत का पूरा ज्ञान करवाया। जब बुड्ढा साहिब सब तरह से सिद्ध हुए तब अम्माबाई ने लालसांई की दी वस्तुएं उन्हें सौंपकर गद्दी पर बिठाया और सारी संगत के सामने अपने धाम जाने की इच्छा प्रकट की। पुगरदेव की भांति अम्माबाई भी दरिया किनारे गई और लालसांई का ध्यान धरकर जल में समा गई। बुड्ढा साहिब ने पंथ का कार्य चालू रखा और इस तरह संत ठकुर पुगरदेव को लालसांई की ओर सौंपी गई गद्दी आज तक कायम है। ठकुर बुड्ढा साहिब को तीन पुत्र थे। 1 ठकुर मेहरचंद 2 ठकुर मसरालाल 3 ठकुर जुगलदास। इस समय बुढडा साहिब के शिष्यों की संख्या इतनी बढ़ गई थी और वे इतने दूर दराज क्षेत्रों में बसे थे कि गुरू शिष्य संपर्क साधना कठिन हो गया। उस जमाने में न तो हवाई यात्रा होती थी और न रेल का अविष्कार था इसलिए शिष्यों को पंथ संबंधी धार्मिक कार्यों को संपन्न करने में भी काफी विलंब होने लगा। इस समस्या को दूर करने के लिए और सेवकों की भावनाओं का

ध्यान में रखते हुए ठकुर बुढडा साहिब ने अपने तीनों बेटों को अलग-अलग कार्य क्षेत्र सौंप दिया। जिससे वे अपने-अपने क्षेत्र में रहकर उस क्षेत्र के शिष्यों कों उपदेश धर्म शिक्षा दे सकें और उनके पंथिक कार्य करवाने में आसानी हो। उस वक्त सिंध का एक प्रमुख नगर था सेवि स्थान अर्थात शिव का स्थान। वहां एक भव्य शिवालय था जिससे यह नाम इस नगर को मिला जो बाद में से विस्तान से सेवान और फिर सेव्हण बन गया। यह नगर मध्य सिंध में सिंधु नदी के बाएं किनारे पर था जो बाद में सिंध की राजधानी भी रहा। बुढ्डा साहिब ने अपने बड़े पुत्र मेहरचंद को यहां तैनात किया जबकि ठकुर मसरालाल शिकारपुर गये वहां से वे सकखर और पंजाब का अलीफा क्षेत्र सम्भालते थे। ठकुर जुगलदास मुल्तान चले गए जो उस समय सिंध का ही भाग था। नसरपुर में लालसांई



के भाईयों सोमाराय और भेडूराय के वंशज और उनके चचेरे भाई खेडूराय कोडणराय आदि आसपास और कच्छ के क्षेत्रों में दरियाशाह के उपासकों का कार्य करते थे। लालसांई के सभी स्मृति स्तम्भ जैसे कि उडेरोलाल का किला और किले के परिसर में स्थित लालसांई की मजार अखण्ड ज्योति मंदिर, बालम्भों का कुआं, माणकटरो की दरख्त, चौखंडी आदि सक्खर रोहिड़ी के बीच सिंध नदी में द्वीप पर बना जिन्दहपीर का मंदिर, ठट्टे में खड्डे का मंदिर, मन्होरे और नसरपुर के झूलेलाल मंदिर से अब सब पाकिस्तान के अधीन हैं जहां दुनिया के अन्य देशों से लालसांई के उपासक श्रृद्धालु पाकिस्तान जाकर उन स्मृति स्तम्भों के दर्शन करते हैं। वहां भारत पाक संबंध मधुर न होने के कारण भारत में रहने वाले श्रद्धलुगण वहां जाने से वंचित हैं।



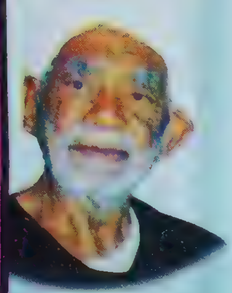












चैतीचांद के पावन पर्व की हार्दिक बधाई
एवं शुभकामनाएं



सबका भला करो भगवान

BAHIROOMAL VASDEV

DALWALA
Old Dhan Mandi, Kota-324008 (Raj.)

Laxman Das
Management Director

Mukesh General Industries
Off.: E-29, Industrial Area Kota
Resi : 43-A, New Colony, Gumanpura, Kota

GOVIND
Management Director
Mob.: 09414520724



Jai Mata Di

With Best Compliments From

Shri Ambika Traders

A Wholesale
House of Readymade & Hosiery Wears



Shankar Lal Khatri
Mob.: 9425155093

Machharhai Main Road, Ganjipura Chowk, Jabalpur (M.P.) Ph.: 23118857, 4065799



With Best Compliments From

Jai Hind's
AluDesign

Jai Hind
Aluminium Centre

11, Sindhi Market, Bhopal-1
Ph : 2820069 Fax : 0755-2544792
Email : jaihindaluminium@hotmail.com



Naresh Talreja

महायोगों के धनी भगवान झूलेलाल



अधर्म पर धर्म की विजय पताका फहराने के लिए भगवान ने समय-समय पर अवतार लिया है आसुरी शक्तियों का संहार करके दुनिया को शांति का संदेश दिया है। दसवीं शताब्दी में जब सिंध (पाकिस्तान) प्रात के क्रूर सम्राट मिरखशाह ने अधर्म और अत्याचार को बढ़ावा दिया तब सनातन धर्मियों ने सिंधु नदी के तट पर उपवास रखकर वरूण देवता की श्रृद्धा भावना से आराधना की। उनकी आराधना से वरूण देव का मन द्रवित हो उठा। तब नदी की लहरों पर विशाल मछली पर विराजमान हाथ में माला तथा वेद ग्रंथ लिए एक ब्रम्ह स्वरूप दिव्य पुरूष दृष्टिगोचर हुए और आकाशवाणी द्वारा अपने प्रकट होने का समाचार सुनाया।

आकाशवाणी के अनुसार विक्रम संवत 1007 ईसवीं सन् 0951 तद्नुसार चैत्र शुक्ल द्वितीय दिन शुक्रवार भरण नक्षत्र में ग्राम नरसपुर जिला सिंध पाकिस्तान के श्री रतनराय के घर में माता देवकी के गर्भ से भगवान झूलेलाल ने जन्म लिया। इनके जन्म के समय सूर्य कुंडली में लग्न में सूर्य, बुध, द्वितीय भाव में चंद्रमा चतुर्थ भाव में मंगल केतु और सप्तम भाव में शनि विराजमान थे जबकि नवम भाव (भाग्य भाव) में बृहस्पति दशम (कर्म) भाव में राहु तथा द्वादश भाव में शुक्र बैठे थे।

भगवान झूलेलाल की जन्म कुंडली में ग्यारह महान कर्मजीव योग बने। सूर्य और चंद्र दोनों कुंडलियों में 63 महायोगों का निर्माण हुआ। दैवीय शक्ति के बल पर यह बालक शीघ्र जवान हो गया। कुंडली में बने तमाम शुभ योगों के परिणामस्वरूप यह बालक तरह-तरह के चमत्कार दिखाने लगा। महान कर्मजीवी योगों के प्रभाव से इन्होंने दुष्ट सम्राट मिरखशाह को इतने चमत्कार दिखाए कि मिरखशाह और उसके अनुयायी भयभीत हो गए। राज्य में महामारी फैल गई। जिसका प्रभाव सिर्फ सम्राट तथा उसके अनुयायियों पर ही हुआ। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई। इससे चारों और मिरखशाह और उसके अनुयायियों ने भगवान झूलेलाल के चरणों में गिरकर आता समर्थण कर दिया और क्षमा याचना करने लगे। इस तरह शांति का संदेश देकर भगवान झूलेलाल ने संवत् 1020 में भादों के महीने पूर्णिमा के दिन अपने शिष्य ठाकुर पगर को अपना स्थान सौंपकर हजारों हिंदु मुसलमानों के सामने जल समाधि ले ली।

पूज्य अमर उडेरोलाल वंशावली

वरूण अवतार श्री अमर उडेरोलाल का जनम विक्रम सम्बत 1007 में चैत्र मास की दूज को नसरपुर क ठटे गांव में सूर्यवंशी रतनराड़ जी के घर माता देवकी की कोख से हुआ। उनके जन्म का नाम उदयचन्द था। विक्रम सम्बत 1020 में अपने चाचा श्री दयाराम जी के सुपुत्र श्री पुगरदेव को अपनी गद्दी का वारिस घोषित किया, स्वयं जल समाधि धारण की। जल समाधि धारण करते समय उन्होंने श्री पुगरदेव जी से कहा कि आपके वंशज ठकुर कहलायेंगे। यह वंशावली श्री पुगरदेव ठकुर के वंश से लेकर आज तक की है।

- पूज्य अमर उडे़रोलाल वंशावली -



- ठकुर पुगरदेव
  - ठकुर बुढा साहिब
    - ठकुर बुलाकीदास
      - ठकुर गरीबदास
        - ठकुर कल्याणदास
          - ठकुर बुलाकीदास
            - टेकचन्द
              - साहिबराम
                - परसदिनो
                  - तीर्थदास
                    - लालमनदास
                      - ठकुर श्यामलाल
                        - रतनलाल
                          - लेखराज
                            - अश्वनी
                              - मुकुल
                          - मोतीलाल
                            - अजय
                          - सुन्दरदास
                            - राजेश
                              - पार्थ
                            - सुधीर
                              - सप्तांशु
                          - कन्हैयालाल
                            - प्रकाश
                        - किशनचन्द
                          - तुलजाराम
                            - प्रवीन कुमार
                        - मुरलीधर
                        - नारायणदास
                          - सुरेश
                      - ठकुर तोतलदास
                      - ठकुर हीरालाल
                      - ठकुर नेभनदास
                    - शेवाराम
                  - माणकतारो
              - जिन्दादास
              - दतनलाल
              - मेघराज
              - हरजन्तीदिनो
            - जेठानन्द
      - ठकुर मूलचन्द



पूज बहिराणो साहिब

सिंधियुनि खे वरूणदेव जी पूजा जा कई तरीका अचनि था। ज़ालूं दरियाह, नल, खूह या तलाअ ते अखो पाए उन खे मञाईदियूं प्रार्थनाऊ कंदियूं आहिनि।

बहिराणो तैयार करण लाइ थाल्ह या मटिके में चणा, मिठा चांवर ताहिरी, बादाम, किशकिश, डाख, काजू, मिसरी संग, गुलाब या गुल ऐं कीमती शयूं विझी पूजा करे, समर्पण भावना सां दरियाह, तलाअ या समुण्ड में परवान कया वेन्दा आहिन। वैज्ञानिक तरह सिद्ध थी चुको आहे त 3 हिस्सा पाणी ऐं हिकु हिस्सो धरती आहे। जेतिरा जीव, बूटियूं, पदार्थ पृथ्वी ते आहिन, उन खां वधीक मच्छियूं, मांगरमच्छ, जीव जन्तु, बूटियूं पदार्थ जल में आहिन। इन्हनि खे इंसान जो फर्ज आहे त समर्पण भावना रखी, कुछ चणा, अटो, चांवर, मिसरी, मेवा, गुल फुल वगैरह समर्पित करे जीअं असां ग्यारस, बियनि त्यौहारनि ते गांयुनि खे गाहु, बांदरनि खे चणा, भुगिड़ा डीन्दा आहियूं। बहिराणे साहिब ते उडेरेलाल जी छेज कढी नचन्दे टिपन्दे पूजा कन्दे जल जे जीवनि जो ध्यान रखी, बहिराणो साहिब जल में स्वाहा करें, उन्हनि खे अण सिधीअ तरह खुशियूं पहुचांईदा आहियूं। जीअं कबूतरनि, बियनि जीवनि फकीरनि, साधुनि में पैसो, अन्नु, खाधो या फल वगेरह जो दान करियूं था, अहिड़ो फल हिन बहिराणे साहिब जो मच्छियुनि समुण्ड ऐं तलाअ जे जीवनि खे बहिराणे द्वारा माल मलीदा पहुंचाइण उतां जो जल खणी छंडो हणी पुञ कमायूं था।

पूज बहिराणा साहिब खणाइण लाइ विधी

बहिराणो हमेशह कंहिं झूलेलाल मंदिर जो घुराइजे जंहिं मंदिर में जोतियुनि वारे जी अखण्ड जोति जगन्दड़ हुजे। बहिराणो साहिब खणण वारो शुद्ध हुजे। झूलण जी जोति जगाइजे पंजड़ा गाइजनि, तंहिं खं पोइ लाल साहिब जी आरती गाइजे पलउ पाइजे। दुहिलारियुनि सां गडु डौंका हथनि में खणी छेज लगाए दरियाह तो या खूह ते वञी जल जी पूजा कजे। आरती करे, मोदक ऐं जोति जल में तारिजे। तंहिं खां पोइ पलव पाए जल खणी घर में छिटकारजे। अहिड़ीअ तरह बहिराणो खणाइण वारे जूं श्री झूलेलाल सभु मुरादूं पूजाए था।

पूज बहिराणे साहिब खणाइण लाइ पूजन सामग्री



2 नारियल (श्रीफल)
मिसरी जा 5 नन्ढा संग
पताशा 250 ग्राम
खंडु 250 ग्राम
नरम गुड़ 250 ग्राम
लौंग 10 ग्राम
नन्ढा फोटा (इलायची) 10 ग्राम
सिंदूर 10 ग्राम
कुंगू 10 ग्राम
हैड पीठल 10 ग्राम
गुलाल 10 ग्राम
अम्बीर (अछो पाऊडर) 10 ग्राम
इत्र जी शीशी हिक
केसर पी पुड़ी हिक
देसी घी 500 ग्राम
चांदीअ जा 11 वर्क
पान जा पता 11 नंग
कच्ची सोपारी (साबित) 5 नंग
चंदन चूरो 10 ग्राम
काफूर 5 टिकियूं (वड़ियूं)
मोइली धागो
गाढ़हो धागो 1 ढेरी
जणिया
हिक नन्ढी मटिकी ढक समेति
2 पखरूं
सुका मेवा 100 ग्राम
(काजू, बादाम, किशमिश)
5 तरहनि जा 11 ताजा फल
कच्चो खीर 500 ग्राम
15 हार ऐं गुल (जरूरत मूजिब)
चंदन अगरबत्तियूं 1 पैकेट
कपह, माचीस
कणिक जो अटो सवा किलो
जूअरि जो अटो सवा किलो
साफ चांवर सवा किलो
प्रसाद-मिठी ताहिरी ऐं कुहर

पूजा लाई बियो घर जो सामान - हिकु वडो थाल्ह, 2 नन्ढा थाल्ह, 2 थाल्हियूं, 2 लोटा, हिक चाय जी छाणी, हिकु वडो चमचो, हिकु नन्ढो चमचो, हिक घाघर साफ पाणीअ जी भरियल, 3 टुवाल, 2 नेपकिन, हिकु सिक्को 5 रू जो।

आरती

ओम जय दूलह देवा-स्वामी जय दूलह देवा।
पूजा कनि था प्रेमी-सिदकु रखी सेवा।।
ओम् जय...
तुहिंजी दर ते केई-सजण अचनि सुवाली।
दानु पठन सभु दिलि सां-कोन द़िठुमि खाली।।
ओम् जय...
अंधणन खे दे अखिड़ियू-दुखियनि खे दारूं।
मन जूं पाए मुरादूं-सेवक कनि साराह।।
ओम् जय...
फल फूल मेवा सब्जियूं-पोखन मंझि पचनि।
तुहिंजे महिर मया सां-अन्न अपार थियनि।।
ओम् जय...
जोति जगे थी जग में लालण तुहिंजी लाली।
अमर लाल अचु मूं वटि-बेवसीलनि जा वाली।।
ओम् जय...
जग जा जीव सभेई-पाणीज बिन प्यासा।
झूलेलाल आनंद करो करो पूर्ण आशा।।
ओम् जय...

संकलन : जस्सूमल, बिलासपुर

पलउ (प्रार्थना)

पलउ जे पाईनि तंहिंजा खावंदु खाली न करे।
दर त तुहिंजा सुभ भरिया लाल भरियाई आहिन।।
आसाऊं आहिनि, वापारी हर नाम जा।
हो वदा वण महाराज जा जेको पापी थो तारे।।

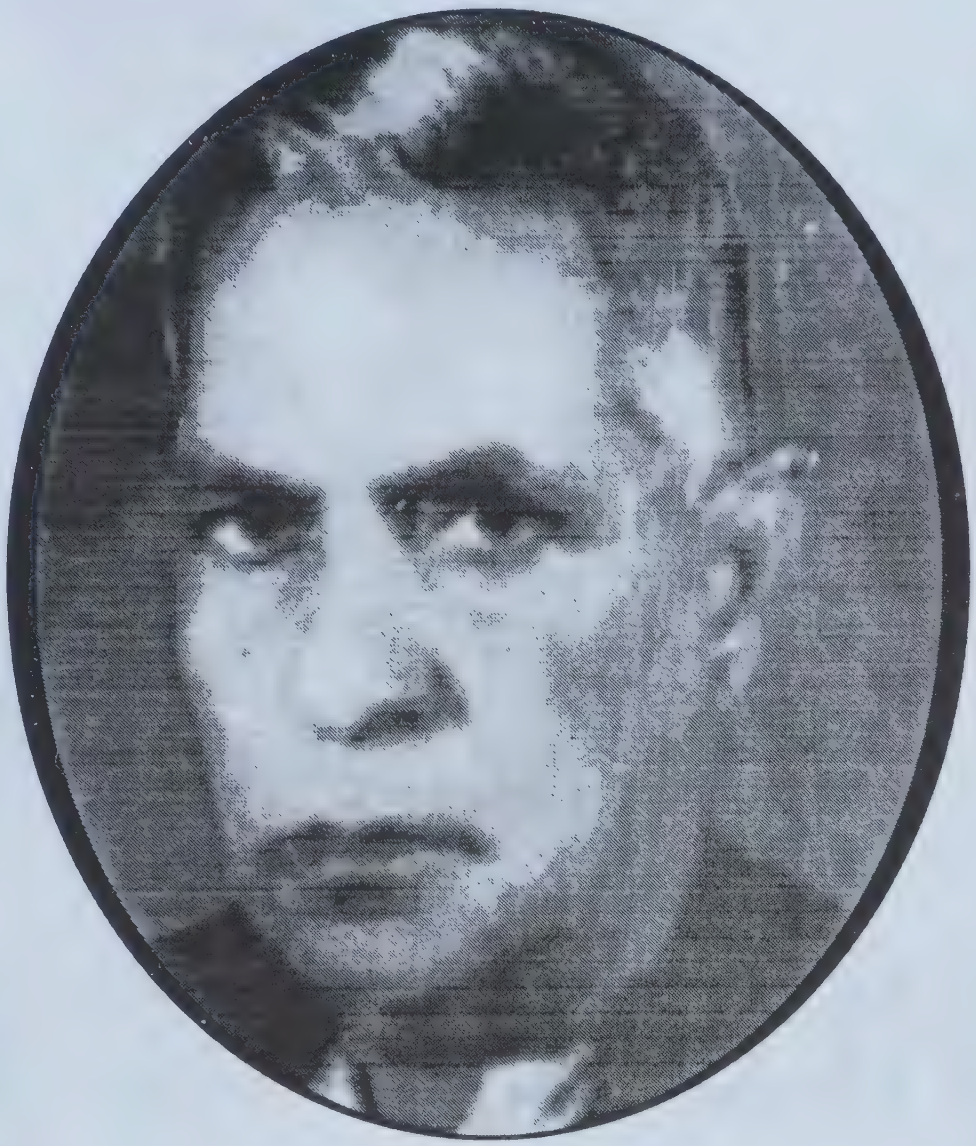
बुडदड़नि खे बांजू देई लाल तिमख मंझा चढ़े।
हुंडियू हजारति लखनि जूं मुहिंजो सांवल साहु साकारे।।
कार्ज थे करे अमरू आसवदनि जा।
अमर आस वदनि अजा तन्तु सांई जी तोड़।।

रहु रतनाणी राजणा जीअं भवें तीअ जोड़ि।
हाणे पाप सभेई बोड़िंलाल दे का धीर धर्म जी।।
दुलह तुहिंजे दर त आसाऊ बि अचनि।
भट ब्रह्मण मंगता साधु सेवा कनि।।

आरतियूं उडेरेलाल जूं अची देव देवता कनि।
हाणे पुर्स पुजाई तिनिजी हो लाल जंहिजे जहड़ मन में।।
अचन जे आस करे तो वटि घोट घणा।
बिया भी दातर देह में तो मड़द मणिया।।
आयोलाल झूलेलाल जेको चवंदो झूलेलाल तहिंजा थींदा बेड़ा पार।

Param Poojya Shri Chhabaldas Mirchandani's







31st Death Anniversary

(Death 10th March 1979)

The sacred memories of his ideals,

inpirations and motivations

are still guiding us

Humble Tribute

- From : Mirchandani Family

मुमताज

* लेखक- तेज 'काबिल' * अनुवाद- डी.पी. तेजा

कुछ दिनों बाद मुमताज़ के शोहर अब्दुल्लाह रहमान के दिमाग की नस फटने के कारण मौत हुई। बंटवारे के बाद वह पाकिस्तान गई। वह होशियार गायिका थी उसे फिल्म वालों ने अपने साथ जोड़ना चाहा। पर उसने किसी को तव्वजो नहीं दी।

बाओला की मौत के बाद उसने इंदौर जाना चाहा। मगर उसकी माँ ने उन्हें जाने नहीं दिया। मुमताज़ की माँ अपने समय की महशूर तवायफ थी।

यह मुमताज इतिहास की मुमताज शाहजहां वाली नहीं है। इसके मरने के बाद ताजमहल नहीं बनाया गया। पर वह एक बदनसीब खूबसूरत मुमताज थी, जिसके मरने के बाद कोई यादगार तो क्या किसी ने भी उसकी लाश पर दो आंसू भी न बहाए।

कराची में 1991 में एक महिला की मौत हुई, जिसका नाम था मुमताज उस हसीन औरत की जुबान पर आखरी सांस तक इन्दौर का नाम था। उसे आम लोगों की तरह दफनाया गया और उसी के साथ ही दफन हो गई इन्दौर के महाराज तुकोजीराव और मुमताज़ के प्यार और अय्याशी की कहानी, जिसकी भारत तो क्या इन्दौर की जनता को भी जानकारी नहीं होगी। उसकी जवानी की कहानी की जानकारी कुछ बुजुर्गों को जरूर होगी, उसने शादी की। मगर जल्द विधवा हो गई।

फरीदा खानम के कहें मुताबिक कि वो अक्सर इन्दौर को याद करती थी। ऐसा मालूम चला है कि मुमताज़ 18 बरस की थी तथा तुकोजीराव के आगोश में नही आई थी तब वह बम्बई चली गई। तुकोजीराव ने हथियार बंद फौजी उसकी निगरानी के लिये भेजे। बम्बई में मुमताज एक अरबपति आला पर फिदा हुई। यह बात तुकोजीराव तक पहुंचाई गई और ऐसा भी उन्हें कहा गया कि वे जल्द ही बम्बई से फरार होने वाले हैं।

बंटवारे के बाद वह पाकिस्तान चली गई। कभी



चैतीचांद के पावन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

Madhur

Parcel Services (P) Ltd.

H.O.: 6, Shalimar Trade Centre, Hamidia Road, Bhopal Ph.: 4256402



Kamal Kotwa
Mob.: 971308888



WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Madhur

ELECTRONICS

Authorised Service Centre
Panasonic / Pioneer / Kenwood / Dish Tv

Krishna Complex, Hamidia Road, Bhopal Ph.: 0755-2740722, 4034878
E-mail:madhurelectronics@yahoo.com



Kailash Tanwar



With Best Compliments From

HMA

HINDUSTAN

MEDICAL AGENCIES

G-2A, Shri Shantinath Plaza, Near Patel Market, 26, Hamidia Road, Bhopal Ph.: 0755-4283350 CTX : 350. Mob.: 9893387899



Pradeep Artwan



चैतीचांद के पावन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

Airtel

BHOPAL HOME APPLIANCES CO.

Deals in : All Kind of Mobile Accessories

1st Floor Krishna Compl... Hamidia Road, Bhopal - 01
Mobile : 9993924542 E-mail : ...appliancesco@gmail.com



Mukesh Kingra

बंटवारे के बाद वह पाकिस्तान चली गई। कभी लाहौर तो कभी कराची में ज़िदंगी के बाकी दिन काटने लगी। पति के स्वर्गवास होने के बाद उसे उसके घर से निकाला गया और वह हिंदुस्तान को अलविदा कर पाकिस्तान चली गई।

इन्दौर के तुकोजीराव और मुमताज दोनों अपने दिलों में प्यार और वासना का तूफान लिये संसार से चले गये। तुकोजीराव को गद्‌दी से हटाने की बात सारे भारत को मालूम थी। पर मुमताज़ अपनी ज़िदंगी सुख से न गुज़ार सकी।

फरीदा खानम के कहे मुताबिक कि वो अक्सर इन्दौर को याद करती थी। ऐसा मालूम चला है कि मुमताज़ 18 बरस की थी तथा तुकोजीराव के आगोश में नहीं आई थी तब वह बम्बई चली गई। तुकोजीराव ने हथियार बंद फौजी उसकी निगरानी के लिये भेजे। बम्बई में मुमताज एक अरबपति बाओला पर फिदा हुई। यह बात तुकोजीराव तक पहुंचाई गई और ऐसा भी उन्हें कहा गया कि वे जल्द ही बम्बई से फरार होने वाले हैं।

تِن کي ساگر ڇا ٻوڙيندو
جِن کي ڏولهه تاري...

एक यादगार चित्र



आज से 49 वर्ष पूर्व दि. 26 जनवरी, 1960 को दिल्ली के गणतंत्र दिवस के विशाल समारोह मं प्रथम बार सिन्धु कला केन्द्र, दिल्ली द्वारा उक्त 'उदेरोलाल' (श्री झूलेलाल) झांकी प्रस्तुत की गई थी। इस यादगार झांकी का डिजाइन प्रसिद्ध चित्रकार श्री जयकृष्ण बाबलाणी ने तैयार किया था। उक्त चित्र उसी उत्कृष्ट झांकी की अनुकृति है।

चित्र में श्री झूलेलाल जी के समुद्री-वाहन 'मच्छ' के ऊपरी सतह पर बाई ओर 'बहराणा साहिब' में प्रज्वलित 'अमर जोति' की अर्चना करते हुए एक महिला तथा दाई ओर सिन्धी लो संस्कृति की अनुपम विधा 'भक्त' (संगीत, संवाद व नृत्य-नाट्य का एक रूप) का दृश्य दर्शाया गया है।

प्रस्तुति : वासुदेव 'सिन्धु-भारती'

मानव सेवा की मिसाल

मुस्कान ग्रुप इंदौर की अनूठी पहल

(आओ धड़काएं दिलों को)

इंदौर। नगर की सामाजिक संस्था मुस्कान ग्रुप इंदौर ने मानव समाज सेवा की अनूठी मिसाल प्रस्तुत की है।

विगत कई वर्षों से मुस्कान ग्रुप (सहायता संस्था) इंदौर के कार्यकर्ता निस्वार्थ भाव से जन जागरूकता फैलाकर विभिन्न सेवा कार्यों में तन मन और धन से प्राण पण जुटे हुए हैं। ग्रुप द्वारा नेत्रदान, त्वचा दान एवं देहदान हेतु गत 10 वर्षो से जन चेतना जगाए हुए हैं। संस्था द्वारा गत 7 वर्षो से परिचय सम्मेलनों का भी आयोजन किया जा रहा है।

ख्यातिप्राप्त नन्हीं गायिका (पलक मुछाल) जो कि स्वयं भी इस अभियान में लगी हुई हैं। पलक-प्लाश मुछाल संगीत निशा का आयोजन करवाकर संस्था (बच्चों के हृदय के आप्रेशन) हेतु सदैव प्रयासरत रहती है जिसमें अब तक 385 आपरेशन पलक -पलाश मुछाल मुस्कान ग्रुप के सहयोग से करवा चुकी है। इसी संदर्भ में 8 मार्च 2010 को स्थानीय रविन्द्र नाटय गृह इंदौर में



पलक अभियान के 10 वर्ष पूर्व होने पर 'जश्न-ए-पलक-पलाश' का आयोजन मुस्कान ग्रुप द्वारा करवाया गया जिसमें नगर की अनेक गणमान्य हस्तियों ने भाग लिया एवं कार्यक्रम को सराहा। इस आयोजन में सर्वाधिक योगदान संस्था के धीरज कुंडल, संदीपन आर्य (9303259844), हेमंत छाबड़ा (9425062521), राजेश माखीजा (9826080780), नरेश (9301336000), शामानी, राजकुमार हरिशाणी (9827352452) प्रकाश मदनानी, राजकुमार हरियाणी (9827060170) एवं राजेश तलरेजा (9827091147) का रहा। मुस्कान ग्रुप का कार्यालयः 248 एम.टी. क्लाथ मार्केट इंदौर में स्थित है। के पदाधिकारीयों से उपरोक्त नम्बरों पर सम्पर्क कर सकते हैं। म.प्र. में निवासरत जो भी महानुभाव इस महान कार्य में अपना सहयोग देना चाहे या जुड़ना चाहे तो वे उक्त संस्था के पदाधिकारियों से उपरोक्त नम्बरों पर सम्पर्क कर सकते हैं।

चैती चांद के पावन पर्व की समाज के सभी महानुभावों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं



SUNIL CHNDWANI

COMPLETE MOBILE SOLUTION

Balaji Spare Parts

All Type of Chinese LCD & Spare Parts



1, Rahamat Market, Ghora Nakkas, Bhopal Mob. : 09589369525

चैती चांद के पावन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

ॐ **Govind Khatri**



TIME TRADERS

Ghora Nakkas, BHOPAL - 462001

Phone : (O) 2739551, (R) 2730820 Mobile : 9405029143, 9893482444

चैती चांद के पावन पर्व की समाज के सभी महानुभावों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं



अप्पू श्री ड्रेसेस

कलकत्ता एवं डबल टाईगर के सूट, सस्ती व सुंदर रेडीमेड , फ्राक बाबा सूट, पेडल सूट, टी शर्ट, टॉप मिडी, पंजाबी सलवार सूट, जींस व पेंट के थोक विक्रेता

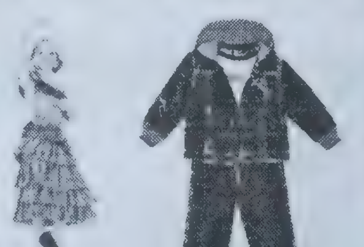
जी - 9, प्रकाश प्लाजा रिव्हर साईड रोड, इन्दौर - 4

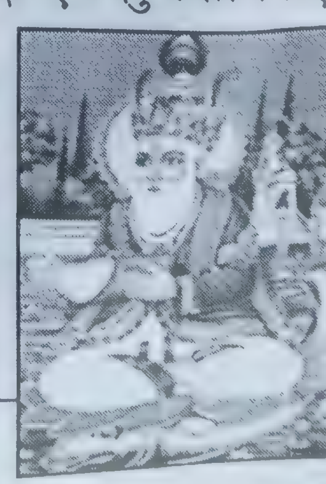
Mob. : 98260-68505, 99267-01419 Ph. : 0731-2539318 (S), 0731-4036381 (R)

चैती चांद के पावन पर्व की समाज के सभी महानुभावों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

रमेश परियानी (बाबू)

श्री कृष्ण गारमेन्ट्स



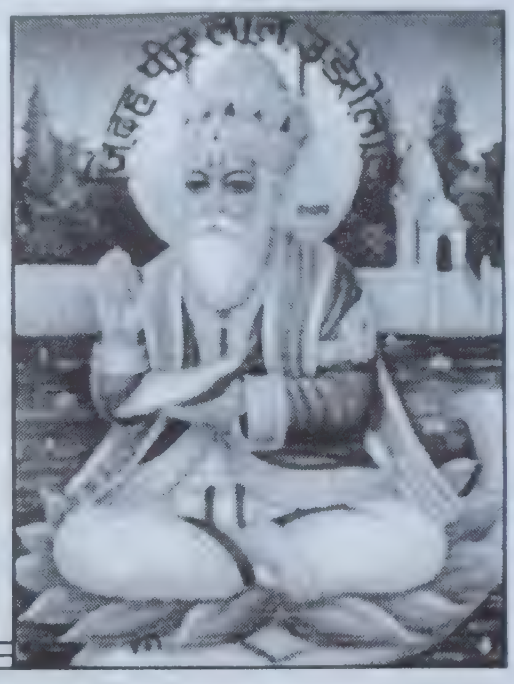


अहमदाबाद फ्राक व कलकत्ता की वैरायटी के थोक विक्रेता

जी-59, प्रकाश प्लाजा रिव्हर साईड रोड, इन्दौर - 452007 (म.प्र.)

फोन : 2534663 (नि.) 5407010, मो. : 9826434663

चैती चांद के पावन पर्व की समाज के सभी महानुभावों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं



घनश्याम पंजवाणी

अधिवक्ता

(प्रांतीय महामंत्री, अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद म.प्र.)

कार्यालय : 15, पुरानी सिंधी कॉलोनी, बैरसिया रोड, भोपाल

फोन : 0755 - 2737182, 9893037182

चैती चांद के पावन पर्व की समाज के सभी महानुभावों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं



Shyam Gopalani — *Manish Tekwani*

SAHIB MEDICAL & SURGICAL AGENCIES

G - 20, Lalwani tower, Hamidia Road, Bhopal - 462001
Ph. : (S) (0755) 4252040, (S) (0755) 4259575 Mob. : 9669000616

चैती चांद के पावन पर्व की समाज के सभी महानुभावों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं



V.M. ExPress Service

789 - Singa Pore Market, Regal Square, Indore (M.P.)

समाज सेवा का जज़्बा



प्रीतम माटा

युवा प्रीतम माटा साफ सुथरी युवा छवि व मोहक व्यक्तित्व के धनी हैं, आप पूर्व मंत्री श्री नंदलालजी माटा के भतीजे हैं। इस कारण आपको पारावारिक परिवेश में ही समाज सेवा एवं राजनीति संस्कारों में मिली। श्री प्रीतम माटा सिंधी समाज की एवं शहर की विभिन्न संस्थाओं की गतिविधियों में सक्रिय होकर समाज सेवा में पिछले 25 वर्षों से सक्रिय रहे है। समाजसेवा के मामले में श्री माटा का मानना हैं कि दीन-दुखीयों की सेवा मन के संतुष्टी के लिये करनी चाहिये न कि लोगों को दिखाने के लिये इसलिये श्री प्रीतम माटा का सिद्धांत रहा कि एक हाथ से सेवा करो तो दूसरे हाथ को पता न चले।

श्री माटा जन समस्याओं के निवारण हेतु कांग्रेस पार्टी के विभिन्न आंदोलनों में इस कदर सक्रिय रहे कि जब कांग्रेस पार्टी ने उन्हें नगर निगम चुनाव में उस क्षेत्र से पार्षद प्रत्याशी बनाया जहाँ से कांग्रेस विगत 42 वर्षों से कभी जीत नहीं पाई थी मगर श्री प्रीतम माटा ने अपनी लोकप्रियता हंसमुख स्वभाव व मिलनसारीता के बल पर चुनाव में विजयश्री को प्राप्त कर एक कीर्तिमान बनाया।

अपने स्वभाव के कारण मित्रों में तो सबके चहेते हैं ही वे अपनी मधुर मुस्कान से दुश्मनों को भी अपना बनाने में माहिर हैं।

श्री प्रीतम माटा शिमला क्लब के माध्यम से समाजसेवा के लिये अनेक कार्यक्रम करवाये जिसमें चेटी चंड का 7 दिवसीय विशाल आयोजन, उत्तम वर्षा हेतु पर्जन्य महायज्ञ, ग्रीष्म काल में टेंकरों के माध्यम से पूरे शहर में पेयजल आमरस, छाछ का वितरण, फिल्मी कलाकारों के साथ क्रिकेट मेच का सफल आयोजन, नवरात्री के दौरान गरबा प्रतियोगिता एवं स्वास्थ शिविरों का आयोजन, देश की एकता एवं अखंडता हेतु राष्ट्रीय गीतों भरा अन्नू कपूर नाइट का आयोजन, दीपावली महोत्सव पर नेरन्द्र चंचल, मनीश तिवारी व भोपूजी की भजन संध्याओं का आयोजन, नि:शुल्क नेत्र शिविरों का आयोजन कर नि:शुल्क चश्मों का वितरण एवं ऑखों का आपरेशन करने के साथ ही निर्धन परिवारों एवं विद्यार्थियों को सथासंभव सहायता करने का प्रयास सदैव करते रहते हैं।

श्री माटा में समाज सेवा का जज़्बा है ईश्वर से कामना है वे सदैव स्वस्थ रहें तथा समाज सेवा के कार्यों को निरंतर गति प्रदान करते रहें।



मनोज राजानी सिन्धी कोंसिल ऑफ इंडिया यूथविंग के राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त

सिन्धी समाज की राष्ट्रीय सामाजिक संस्था सिन्धी कोंसिल ऑफ इंडिया की कोर समिति द्वारा जलगॉव में आयोजित बैठक मेंकोर समिति द्वारा सर्व सम्मती से कोंसिल ऑफ इंडिया की यूथ विंग का अध्यक्ष श्री मनोज राजानी (देवास) को 3 वर्षो के लिए मनोनित किया है।

कोंसिल के प्रदेश प्रवक्ता श्री दिलीप मोटवानी ने जानकारी देते हुए बताया कि सिन्धी कोंसिल ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय महासचिव श्री हरिश दुबे ने श्री मनोज राजानी को सम्पूर्ण देश में, सिन्धी युवाओं को एकजुट करने के लिए यूथविंग के गठन के पूर्ण अधिकार भी दिए है। उन्होंने आशा एवं विश्वास व्यक्त किया है कि श्री मनोज राजानी के नेतृत्व में देश के सिंधी युवा एकजुट होकर राष्ट्र की एवं समाज की सेवा में अग्रणी होगें। उल्लेखनीय है कि श्री राजानी ने अपने छात्र जीवन से ही राजनिति में होकर देवास के .पी. कॉलेज छात्रसंघ अध्यक्ष रहे है तथा विक्रम विश्व विद्यालय उज्जैन के छात्रसंघ के उपाध्क्ष रहते हुए छात्रहितो में कई उल्लेखीय कार्य किये है तत्पश्चात् देवास नगर निगम में पार्षद भी रहे। राजनीति में इनकी सक्रिय भागीदारी को देखते हुए श्री राजानी को दवास विकास प्राधिकरण देवास का अध्यक्ष भी बनाया जा चुका है। वर्तमान में म.प्र. कांग्रेस कमेटी की प्रबंध समिति में सिन्धी समाज के एक मात्र प्रतिनिधी है।

सच्ची कहानी

6 जनवरी 1948

ठाकुर चावला

अपने देश की मिट्टी जिसमें हम खेले कूदे, नदियां जिसमें तैरे, जिसके नीचे किलकारियां की। वर्षो व्यतीत होने के बाद भी वहां के रास्ते, मकान, वहां घटित समस्त घटनाएं दिलो दिमाग पर इस तरह छाये हुए हैं, मानों कल ही की बात हो।

कराची में हिन्दु दैनिक (अब हिन्दुस्तान) प्रेस के सामने गोल चक्कर था उसके दूसरी ओर के हिस्से को 'गाड़ी खातों' कहकर पुकारा जाता था। वहां से एक रोड प्रारंभ होता था, उस रोड के किनारे पर ही हल्के हरे रंग की पांच मंजिला बिल्डिंग थी 'ठाकुर निवास' (अब 'माहरुख मंजिल')

यह हमारी बिल्डिंग थी, पहली मंजिल पर हमारा ऑफिस तो तीसरी मंजिल पर घर था। शेष 14 फ्लेट्स किराये पर उठाये हुए थे। पिताजी का फाईनेन्स का कारोबार था। थोड़ा-थोड़ा बचत करके यह मकान बनाया गया था। यही सोचकर कि धंधा कभी है। तो कभी नहीं। बच्चों के भविष्य के लिये मकान का किराया आता रहेगा, जो काफी होगा।

परन्तु परम पिता परमेश्वर को कुछ और ही मंजूर

परन्तु परम पिता परमेश्वर को कुछ और ही मंजूर था। 1947 के वर्ष ने इतिहास ही बदल डाला। देश दो हिस्सों में बंट गया। चारों तरफ दंगे फसाद। सिंध के भीतरी हिस्सों में जमीदारी खत्म हो चुकी थी। खेत-खलिहान, कुएं उजड़ चुके थे। बैठकें बंद हो गयी थी। बुजुर्गों की मेहनत से बनाये गये मकान वीरान होने लगे थे। सब कुछ छोड़कर जाना तय था।

था। 1947 के वर्ष ने इतिहास ही बदल डाला। देश दो हिस्सों में बंट गया। चारों तरफ दंगे फसाद। सिंध के भीतरी हिस्सों में जमींदारी खत्म हो चुकी थी। खेत खलिहान, कुएं उजड़ चुके थे। बैठकें बंद हो गयी थी। बुजुर्गो की मेहनत से बनाये गये मकान वीरान होने लगे थे। सब कुछ छोड़कर जाना तय था।

हमारा मकान काफी ऊंचा था। जिसे मीलों दूर से देखा जा सकता था। वह राणीपुर में था। 'सच्चल' साहिब की दरगाह पर यहीं से जाना होता था पिताजी वर्षो तक इस गांव के सरपंच रहे। इसलिये राणीपुर और उसके आस-पास के गांवों के लोग बम्बई जाने के लिये, कराची में हमारे यहां ही ठहरते थे। तब तक, जब तक कि पानी के जहाज का टिकट मिले। यह क्रम चार-पांच माह तक जारी रहा। हमने ऑफिस के पांच कमरों में से चार कमरे खाली कर दिये थे। सिंध से जाने वाले परिवारों के सामान के लिये। सभी कमरे सामान के बंडलों से भरे हुए थे। हर एक बंडल पर अपना नाम लिखकर छोड़ जाता था। एक दिन दोपहर के करीब 12 बजे, वह दिन 6 फरवरी 1948 था। हमारे रोड पर हुड़दंग मच गया। आस पासके मकानों से चीख पुकार सुनाई देने लगी। मैं उस समय 15-16 वर्ष का था। बाहर बालकनी में आया, देखा लूटमार मची हुई है। पास में ही दो ट्रकें खड़ी हैं, 100 के करीब दहशतगर्द भारत के उत्तर प्रदेश और बिहार राज्यों से आये थे। मैं एक दम नीचे उतरा बिल्डिंग का चौकीदार, जो हैदराबाद का था, इतनी लूट-मार और शोर-शराबे के बाद सब्जी पका रहा था। मैंने सारा गुस्सा चौकीदार पर निकालते हुए सलाखों वाले दरवाजे पर ताला जड़ दिया और उसे बाहर के हालात से रुबरु कराते हुए नीचे की मंजिल में रहने वाले बच्चों और स्त्रियों को ऊपर अपने मकान में पहुंचाने की शीघ्रता दर्शाता रहा। बस पन्द्रह मिनट ही गुजरे होंगे कि दहशत गर्दो का दल हमारे मकान के सामने आ पहुंचा। 'अल्लाह हो अकबर' के नारे बुलंद होने लगे। नारे लगाते हुए जोर-शोर से दरवाजे को पीटने लगे और खोलने का प्रयास करते रहे। हम सात आठ आदमी आफिस के बालकनी में आकर खड़े हो गये। हमने दहशत गर्दो के ऊपर अनचाही वस्तुओं का हमला कर दिया।


नववर्ष एवं चैतीचांद पर्व की बधाई व शुभकामनाएं
TOP 'N TOWN
ICE CREAM
more fun... per scoop !!
जीवन में उमंग
टॉप एन टाउन के संग
RAMANI ICE CREAM COMPANY PVT. LTD. B-61, Kasturba Nagar, Bhopal - 462023 (MP), India
e-mail: icecream@topntown.com
kreate:250305

उन्हें भवन के अंदर आने से रोकने का हमारा असफल प्रयास जारी था। सामने के क्वार्टरों में सिंधी मुसलमान, जो सरकारी नौकरी में थे। खिड़कियों से चुप-चाप तमाशा देख रहे थे। हमारे पास से अनचाही वस्तुएं लकड़ियों के टुकड़े जो फर्नीचर बनवाते समय बच गये थे। थोड़ी ही देर में समाप्त हो गये अब भीड़ ने फ्लैट के लकड़ी के दरवाजों को तोड़ना प्रारंभ किया। एक फ्लैट के दरवाजे का कुंडा टूट गया और उन्होंने बिल्डिंग के अंदर प्रवेश करने में सफलता प्राप्त की। पुलिस को फोन पर संपर्क करने का प्रयास किया। लेकिन टेलीफोन पहले ही काटा जा चुका था। प्रतिरोध करने के लिये जिन 7-8 आदमियों को एकत्रित किया था वे सभी अपने-अपने घरों की तरफ प्रस्थान कर चुके थे। ठहरे हुए मेहमान पहले ही अपने-अपने बीवी बच्चों के साथ दत पर जा चुके थे। भीड़ जहां हमारे ऑफिस के दरवाजे पर पहुंची। तब हम मात्र तीन व्यक्ति ही बच पाये थे, एक मैं, एकमेरा चचेरा भाई और चौकीदार जैसे ही दरवाजे का कुंडा टूटा मेरा चचेरा भाई जिसकी सात सन्दूकें, बर्तनों के दो बोरे, वहां पड़े हुए थे, तथा 7 जनवरी का उसे सहज का टिकट मिला था, बेहोश होकर गिर पड़ा। चौकीदार डंडा फेंककर स्नान गृह में जा छिपा।

डंडा अब मेरे हाथों में था, परन्तु उसका उपयोग नहीं कर सका। क्योंकि 7-8 दहशतगर्दो ने मेरे ऊपर डंडों एवं चाकुओं से हमला कर दिया। किसी ने डंडा मारा तो किसी ने मुक्का, किसी ने नाक पर चाकू से वार किया तो किसी ने पीठ में छुरा घोपा। लहुलुहान, चिल्लाने लगा, पुलिस-पुलिस, बचाओ पर वहां कौन था मदद के लिये ?

कुछ ही देर में ऑफिस के चारों कमरों, मेहमानों के रखे सामान से, जिसमें किसी की बेटी का दहेज, किसी की उम्र भर की मेहनत तो किसी के सपने बंद थे, खाली हो गये। कुछ क्षणों ही सभी अर्श से फर्श पर आ गये। लगभग दो घंटे बाद पुलिस आई जैसा हमेशा होता है, पुलिस वारदात हो चुकने के बाद ही पहुंचती है। घायलों को सिविल हास्पीटल पहुंचाया गया। दूसरे दिन 'सिंध आबर्जबर' के समाचारों में दंगों में मारे गये लोगो की सूची प्रकाशित हुई। मेरा नाम भी उसमें दर्ज था। बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। किन्तु ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था। सिविल हास्पीटल की एक नर्स जो हमारी पड़ौसन थी उसकी दृष्टि मेरे ऊपर पड़ गयी। समय पर आवश्यक चिकित्सा सहायता व ईश कृपा से मैं जीवित बच गया। 15 दिवस उपरांत मैं जब वापस घर पहुंचा तो सब कुछ बदल चुका था। सभी रिश्तेदार पड़ौसी कराची छोड़ हिन्दुस्तान रवाना हो चुके थे। न चाहते हुए भी मुझे कराची छोड़ने का निश्चय करना पड़ा।

गांव के मकान, जमीन, कुएं बैठकों से हाथ धोना पड़ा। शेष कराची की बिल्डिंग को बेचना था। दंगों से पहले उसके डेढ़ लाख मिल रहे थे, उसका सौदा 68 हजार में तय हुआ। तब तक राज्यादेश जारी हो चुका था कि 6 जनवरी के बाद के सारे व्यवहार निरस्त माने जायें। कलेक्टर से इस बात का प्रमाण-पत्र लेना था कि सौदा 6 जनवरी से पहले हुआ, वकील के जरिए पहुंचे। बोले 'लाला 1000रू. दो तो प्रमाण पत्र दूं।' इस प्रकार कराची वाला भवन बेचकर, गांव की सारी सम्पत्ति छोड़कर भरे दिल से सिंध छोड़ना पड़ा।

'जल' से जुड़ा है सिन्धुजनों का जीवन-दर्शन

सिन्धु संस्कृति का अंग है जल-पूजा एवं वरूण-उपासना

आलेख : वासुदेव 'सिन्धु-भारती'

जल सभी जीवधारियों का जीवन है। जल से ही सृष्टि की रचना मानी जाती है और जल ही प्रलय का कारण कहा जाता है। वैदिक एवं सिन्धु संस्कृति में जल का सर्वाधिक महत्व रहा है। जल बिना हमारे धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न नहीं हो सकते। अत: 'जल-पूजा' हमारी संस्कृति का अंग है तथा 'जल-देवता' वेदों में जिन्हें 'वरूणदेव' के नाम से सम्बोधित किया गया है, को हम अपना इष्टदेवआराध्यदेव मानते हैं, क्योंकि जल से ही सिन्धुजनों का जीवन-दर्शन जुड़ा हुआ है। हजारों वर्ष पुराने 'मोहन जो दड़ो' के उत्खनन से प्राप्त सामग्री से भी यह सिद्ध हो गया है प्राचीन सिन्धुजनों द्वारा जल से जुड़ी प्रत्येक प्रणाली को सर्वाधिक महत्व दिया जाता था। खुदाई से प्राप्त एक मुहर से भी इस बात का पता चला है कि वैदिक काल से पूर्व, सिन्धुघाटी के काल में भी वरूणदेव पूजे जाते थे।

■ वरूणदेव का अवतार

दसवीं शताब्दी में श्री झूलेलाल जी ने अवतार ले कर कट्टर पंथियों और अत्याचारियों का मर्दन, एक विशाल धर्मातरण के षड्यंत्र को विफल करके हिन्दू धर्म की रक्षा की और 'मानव धर्म' को सर्वोपरि मान कर 'धर्म निरपेक्षता' का नारा बुलंद किया। श्री झूलेलाल जी को वेदों में उल्लेखित जल-देवता 'वरूणदेव' का अवतार माना गया है। श्री झूलेलाल जी का जन्म नाम 'उदयचन्द्र' और मूल नाम 'उदेरोलाल' है। विद्धानों का मत है कि 'उदेरो' शब्द इन्डो-आर्यन 'उडियर' से निकला है, जिसका अर्थ है- जल। ऋग्वेद में भी 'उद्' शब्द का वर्णन मिलता है। जल को 'उदक' भी कहते हैं।

■ वेदों में वरूणदेव

वेदों में वरूणदेव को देवता-तुल्य मानकर उनका गुणगान किया गया है। उन्हें कई स्थानों पर दिव्यदृष्टि वाले, रात्रि देवता, शक्ति पुंज, ब्रह्माण्ड का संचालन करने वाले, पृथ्वी व आकाश के स्वामी, सत्य के रक्षक व असत्य के भक्षक, कुकर्मियों को दंडित करने वाले, समुद्रों के देवता तथा जलपति आदि कहकर उनकी स्तुति की गई है। वरूणदेव का वाहन 'मकर' (मगरमच्छ) है और सिन्धीजनों के आराध्यदेव श्री झूलेलाल का वाहन 'मच्छ' है, जिसका जल से ही सम्बन्ध है।

■ 'मोहन-जो-दड़ो' में वरूणदेव

पुणे के वायोवृद्ध भाषा एवं इतिहासवेत्ता पंडित कृष्णचन्द्र जैतली 'मोहन-जो-दड़ो' के उत्खनन से प्राप्त मुहरों आदि पर अंकित चित्रलिपि का अध्ययन करने के पश्चात प्रस्तुत चित्र में दिखाई गई मुहर की चित्रलिपि को उन्होंने 'वरन्र मओ' पढ़ा है जिसका संस्कृत भाषा में रूप होगा 'वरूण मह:' अर्थात् 'वरूण का यज्ञ'। संस्कृत कोष में 'मह:' का अर्थ यज्ञ, पूजा तथा उत्सव दिया गया है। इससे पूर्व वरूणदेव को केवल वेदों-पुराणों तक ही सीमित रखा गया है, जब कि उक्त शोधकार्य के अनुसार वरूणदेव 'सिन्धु घाटी की सभ्यता' क काल में भी पूजे जाते थे।

मुहर की अनुकृति



ओ म न्न र व

वरुण – मह:

वरुण का यज्ञ

(सिन्धु लिपि दाएं से बाएं लिखी जाती है)

■ ग्रीक में वरूणदेव

श्री विश्वनाथ गुप्त के अनुसार 'ग्रीक में वरूण के समकक्ष देवता 'उरानोस' के नाम से जाने जाते हैं। योगाजकोई से प्राप्त शिलालेख में वरूण विद्यमान है, जिससे स्पष्ट है कि ईस्वी पूर्व 1500 में वरूण मितानी लोगों के भ उपास्य देव थे। वरूण की तरह ग्रीक देवता 'उरानोस' समु

उपास्य देव थे। वरूण की तरह ग्रीक देवता 'उरानोस' समुद्र के देवता माने जाते थे। उरानोस का रोमन नाम नेपच्यून है। ग्रीक लोग उरानोस को देवताओं का पिता मानते थे।'

■ जल-पूजा का महत्व

प्राचीनतम सिन्धु सभ्यता सिन्धु-तट पर ही विकसित हुई है। यही कारण है कि सिन्धुजनों में आदिकाल से ही जल-पूजा (वरूण उपासना) का सर्वाधिक महत्व रहा है। यह परम्परा शताब्दियों से निरंतर चलती आ रही है। वरूणदेव सिन्धुजनों के आराध्यदेव रहे हैं, ताकि उनका सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक गौरव और अस्तित्व बना रहे तथा आर्थिक एवं सामाजिक जीवन सुखमय, मंगलकारी और समृद्धशाली रहे।

■ सिन्धुजनों का स्नान प्रेम

भारतीय संस्कृति में 'स्नान-परम्परा' को धार्मिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण एवं महान कर्म माना जाता रहा है। प्राचीन सिन्धुजन इस कृत्य को क्रियान्वित करने में संसार के समस्त सुसंस्कृतजनों से अग्रसर ही रहे है। उनका 'स्नान-प्रेम' उनकी शालीनता का द्योतक है। उन्होंने 'जल' की महत्ता को समझा।

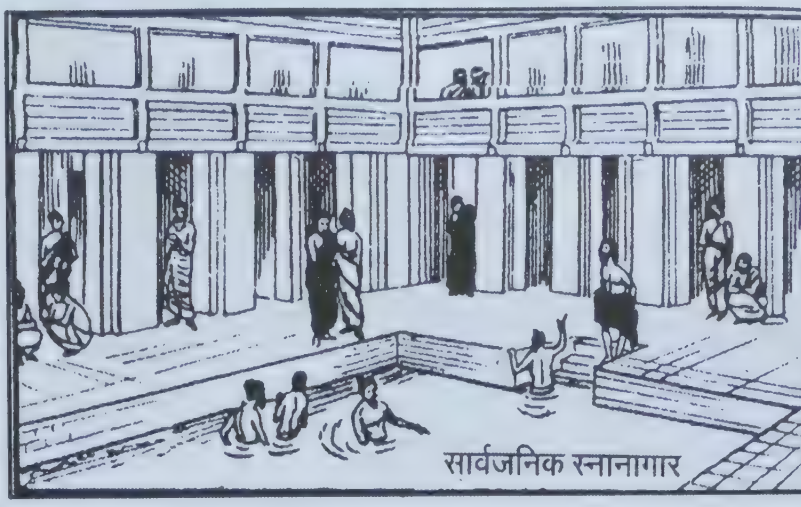
■ सिन्धु घाटी की सभ्यता में

सिन्धु सभ्यताकालीन युग में, प्रत्येक घर में पेयजल के लिए कुआं तथा अलग से स्नानघर का होना अनिवार्य था। जल-निकास हेतु सुन्दर व सुव्यवस्थित नालियां निर्मित थीं। यूरोपीय विद्वान ब्रेल्सफोर्ड के अनुसार, 'मोहन-जो-दड़ो में निर्मित की गई नालियां, उन्नीसवीं शताब्दी तक भी यूरोप में नहीं बन सकी।'

■ उत्कृष्ट सार्वजनिक स्नानागार

योजनाबद्ध रूप से निर्मित विशाल 'सार्वजनिक स्नानागार' सिन्धु सभ्यता का अविस्मरणीय उदाहरण है, जहाँ तत्कालीन सिन्धुजन सभी भेदभाव भुलाकर, प्रेमभाव एवं सद्भावना के साथ 'सार्वजनिक स्नानागार' में सामूहिक स्नान का आनन्द लेते हुए, सामाजिक एकता का उदाहरण प्रस्तुत करते थे। इसे संसार के प्राचीन स्थापत्य कला का एक विकसित तथा उत्कृष्ट रूप माना गया है अभी तक विश्व में कहीं भी पांच-छह हजार वर्ष पूर्व निर्मित ऐसे 'सार्वजनिक स्नानागार' होने का प्रमाण नहीं मिला है।

इस सम्बंध में प्रसिद्ध पुरातत्वेत्ता सर जॉन मार्शल लिखते हैं, 'प्रागैतिहासिक मिस्र में, मेसोपोटामिया में या पश्चिम एशिया के किसी अन्य देश में ऐसी कोई वस्तु ।धारण

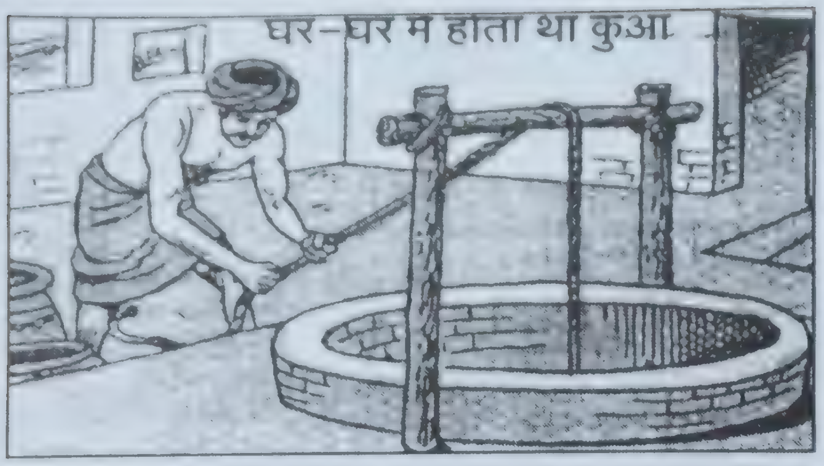


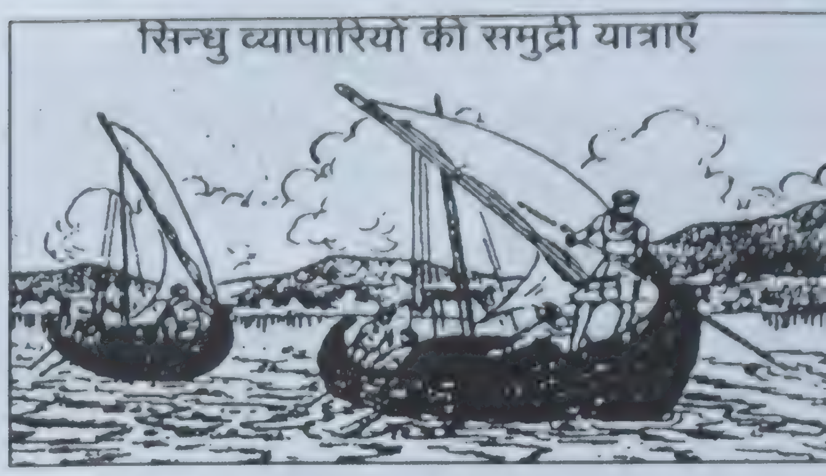
सार्वजनिक स्नानागार

उपलब्ध नहीं है जो मोहन-जो-दड़ो के निवासियों के भव्य स्नानागारों और खुले-खुले घरों की बराबरी कर सके। उन देशों में मंदिरों, राज प्रासादों तथ समाधियों के निर्माण पर अधिक धन खर्च किया जाता था और जनसाधारण को मामूली कच्चे घरों से संतोष कर लेना पड़ता था। सिंधु सभ्यता में इसके एकदम उल्टा नजारा देखने का मिलता है। यहाँ की चीजें वे थीं जो आम नगरवासियों की सुविधा के लिए बनाई गई थीं, जैसे - निजी तथा सार्वजनिक स्नानागार और मोहन-जो-दड़ो की उत्कृष्ट जल निकास प्रणाली।'

■ विशाल तथा सुदृढ़ स्नानागार

इतिहासवेता एवं पुरातत्ववेता डॉ. किरण कुमार थपल्याल एवं डॉ. संकटा प्रसाद शुक्ल ने अपनी पुस्तक 'सिंधु सभ्यता' में लिखा है, 'भारत में पुराकाल से ही जल की पवित्रता का विशेष महत्व रहा है। शुभ तिथियों और पुनीत अवसरों पर तीर्थ-स्नान पुण्य कर्म माना जाता रहा है। केवल दैनिक स्नान ही नहीं अपितु दिन में दो-तीन बार स्नान करने का विधान शास्त्रों में मिलता है। साधारणतया प्रत्येक महत्वपूर्ण मंदिर के साथ एक तालाब भी जुड़ा रहता है। मोहन जोदड़ो के उत्खननों से मोटी दीवालों से बनी विशाल तथा सुदृढ़ इमारत मिली जिसे 'विशाल स्नानागार' नाम दिया गया है। इसके आंगन में जो कुण्ड है उसका उपयोग कदाचित् धार्मिक पर्व में विशिष्ट व्यक्तियों के स्नान-कार्य के लिए होता था। इस भवन के चारों ओर कुछ अन्य इमारतें और स्नानागार थे। स्नानागारों के ऊपर भी एक मंजिल थी। कुछ पुराविदों का अनुमान है कि यहां पुजारी लोग निवास करते थे और विशेष अवसरों पर ही स्नान के लिए नीचे उतरते थे। जैसा कि मार्शल ने लिखा है, 'स्नान का जितना प्रबंध सिन्धु सभ्यता में किया गया था, उतना शायद ही विश्व की किसी प्राचीन सभ्यता में रहा हो।' यह सही है कि अधिकांश मेसोपोटामिया के मंदिरों के पास भी एक कुआं पाया गया है जो इस बात का द्योतक है मंदिर में लोग हाथ-पांव धोकर प्रवेश करते थे, लेकिन सिन्धु सभ्यता में तो स्नान कक्ष हर घर का आवश्यक अंग था। विद्वानों





का मत है कि प्रत्येक घर में स्नानकक्ष का निर्माण केवल स्वच्छता के कारण ही नहीं किया गया था, बल्कि इसके पीछे धार्मिक भावना भी अंतर्विष्ट रही होगी।' वे आगे लिखते हैं, 'ऋग्वेदिक युग में नदियों का लोगों के जीवन में पर्याप्त महत्व रहा। वे इन्हें 'विश्वस्य मातरा' मानते थे। इसी ग्रंथ के 'नदीसूक्त' में गंगा, यमुना, सिन्धु, नर्मदा, काबेरी आदि नदियों का उल्लेख है। परवर्ती काल में सिन्धुक्षेत्र में जल-पूजा का विशेष प्रचलन रहा है, यहां पर एक सम्प्रदाय 'दरिया-पंथी' था जो 'नदी पूजक थे।'

■ कृषि विज्ञान में निपुण

सिन्धु घाटी के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। उन्होंने कृषि योग्य कुछ औज़ार भी बना लिए थे। वे अनाज को सुरक्षित रखने के लिए बड़े-बड़े गोदामों का भी प्रयोग करते थे ताकि बाढ़ या अकाल के संकट के समय उसका उपयोग हो सके। सिन्धुजन कृषि विज्ञान में निपुण थे, इस कथन को सत्य सिद्ध करने के लिए फिनलैंड के पुराविद् डॉ. ऐर्का मौला अपने सर्वेक्षणों द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि 'मोहन-जो-दड़ो' के उत्खनन से प्राप्त शिवलिंग धार्मिक प्रतिमान नहीं थे, बल्कि इनकी सहायता से सिन्धुजन मानसून व बाढ़ आदि मौसम सम्बंधी जानकारी प्राप्त करते थे। अत: विज्ञान का जन्मस्थल मेसोपोटामिया या मिस्र नहीं बल्कि भारत है।'

■ नहरों से सिंचाई और गेहूं

फ्रांस के पुरातत्ववेत्ता प्रो. एच.आर. फ्रेंकफर्ट का कहना है कि 'सिन्धु घाटी' सभ्यता के दौरान नहरी सिंचाई होती थी, तभी तो गेहूं जैसे खाद्यान्न का उत्पादन होता था। गेहूं की पैदावार बहुतायात में होती होगी, क्योंकि उस काल में जगह-जगह पर शहरी बस्तियाँ बनी हुई थीं।' खुदाई के समय प्राप्त गेहूँ के दानों के सम्बंध में रूसी वैज्ञानिक प्रो. वैसेलोव का मत है कि 'यह संसार का उत्कृष्ट गेहूं है।'

■ वाणिज्य व्यवसाय में कुशल

वाणिज्य-व्यवसाय सिन्धुजनों के रक्त में विद्यमान है। आज अपने सामर्थ्य, पुरुषार्थ, धैर्य, बुद्धि एवं साहस के बल पर वे समूचे विश्व में अपना अस्तित्व कायम रखे हुए हैं। शताब्दियों पूर्व भी वे आपदाओं को झेलते हुए सात समुद्र पार व्यापार-विनिमय हेतु यात्राएं करते थे। पश्चिमी विद्वान पोकाक के मतानुसार, 'सिन्धु नदी के मुहानों पर समुद्री यात्रा करने वाले उद्यमी, कुशल और साहसी लोग रहते थे। उन्होंने शताब्दियों पूर्व समुद्रों को पार कर ग्रीस को जा बसाया था।' भारत यात्रा पर आए चीनी यात्री ह्यून सांग ने सिन्धी व्यापारियों के सम्बंध में अपना मत व्यक्त करते हुए लिखा था, 'यहाँ के व्यापारी बहुत सम्पन्न हैं, उनकी व्यापार पद्धति योजनाबद्ध है।'

■ वरूणदेव का स्मरण

समुद्री यात्राएं कम भयावह नहीं होती थीं। सागर जब अपना प्रचण्ड रूप धारण करता था तो मानों प्रलय सा दृश्य दिखाई देता था। तब प्राचीन सिन्ध के व्यापारी धैर्य और साहस धारण कर, संकट हरने के लिए जल-देवता 'वरूणदेव' को स्मरण करते थे। दूसरी ओर उनकी पत्नियां विरहाग्नि से विचलित एवं विह्वल हो उठती थीं तथा अपने सुहाग के वापस सुरक्षित लौटने तक चिंतित रहती थीं। उनके वर पर वरूणदेव की असीम कृपा हो, इसलिए वे प्रतिदिन समुद्र अर्चना कर, धूप वासित चावल (अखा) अर्पित करती थीं तथा दीप जलाकर उन्हें जल-धारा में प्रवाहित करती थी।

■ सर्वत्र हो खुशहाली

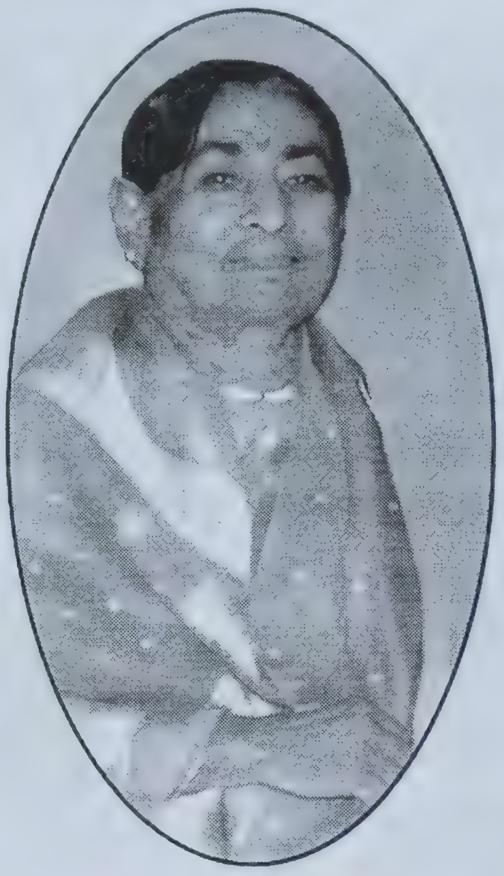
सिन्धुजनों की मान्यता है कि 'जल', शक्तिपुंज तथा ईश्वरीय अखूट-भंडार का प्रतीक है और वह सभी भौतिक सुख प्रदान करता है। जल-ज्योति, वरूणावतार श्री झूलेलाल सिन्धु समुदाय के इष्टदेव हैं। उन्हें स्मरण कर सिन्धुजन भारत की प्राचीन वैदिक सभ्यता एवं सिन्धु संस्कृति को नत-मस्तक होते हैं तथा वरूणदेव के समक्ष अपना आंचल (पलउ) फैलाकर यही मंगलकामना करते हैं कि भारत देश में ही नहीं वरन् समूचे विश्व में सुख-शांति, भाईचारे व सद्भाव का वातावरण बना रहे तथा चारों दिशाओं में हरियाली व खुशहाली का राज्य रहे।

सिन्धु सदन, 2691, मालवीय नगर
जयपुर-302017
फोन : (नि.) 0141-2523283,

देहदान की अनूठी पहल अमर हुई दादी कौशल्या लखानी

करूणामयी, ममत्व से पूरित समाजसेवी तथा कुशल शिक्षाविद् श्रीमती कौशल्या लखानी कल दिनांक–05 मार्च 2010 को परमात्मा में विलीन हो गई। जिन्हें दादी लखानी के नाम से भी जाना जाता है। दादीजी का सम्पूर्ण जीवन सेवा, त्याग एवं परोपकार की जीवंत मिसाल रहा। उच्च–शिक्षित दादी अपना जीवन एक शिक्षिका के रूप में प्रारंभ किया तथा जीवन पर्यन्त वे इस पावन क्षेत्र के लिए समर्पित रही। उनका मानना था कि शिक्षक राष्ट्रनिधि के संरक्षक एवं संस्कृति के वाहक हैं अतः उन्हें अपना कर्तव्य निर्वहन पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के साथ करना चाहिए। उनका सम्पूर्ण जीवन इन्हीं आदर्शों का जीवंत प्रमाण रहा तथा वे अपने सम्पर्क में आए प्रत्येक शिक्षक/शिक्षिका को इस पवित्र कार्य के लिए अभिप्रेरित करती रहीं। ममतामयी दादीजी को बच्चों से असीम स्नेह था तथा वे जीवनपर्यन्त बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अपना पूर्ण सहयोग देती रहीं। यहाँ तक कि अस्वस्थ होने के पश्चात भी निर्माण हेतु प्रेरणा एवं निर्देशन देती रहीं। वे शासकीय कन्या विद्यालय, बैरागढ़ में कई वर्षो तक प्राचार्य रहीं। अपने इस कार्यकाल में उन्होंने कन्या शिक्षा के लिए अभूतपूर्व योगदान दिया। संतजी के सानिध्य में आने के पश्चात उनके सेवा कार्यों की आधारशिला और अधिक सुदृढ़ हुई तथा वे मानवता के हित हेतु पूर्णतः समर्पित हो गई। उपसंचालक शिक्षा के पद से सेवानिवृत्त होकर दादी ने अपने जीवन को अध्यात्मिक व शैक्षणिक उत्थान के लिए समर्पित किया।

दादीजी शहीद हेमू कालानी



एज्यूकेशनल सोसायटी की अध्यक्षा भी रही तथा उनके निर्देशन में सोसायटी ने संस्कारों पर आधारित उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करने हेतु विदयालय स्थापित किए। आज वे सभी शिक्षण संस्थान दादीजी के आर्शीवाद से अपने ध्येय की ओर अग्रसर हैं।

दादीजी एक प्रसिदध शिक्षाविद् होने के साथ ही एक में भी अपनी संवेदनशील लेखिका थीं। उन्होंने अनके पत्र–पत्रिकाओं के संपादन एवं लेखन कार्य को बखूबी संचालित किया। अपने स्वर्णिम अनुभवों को उन्होंने अपनी पुस्तका 'मधुरस्मृति' में लिपिबद्ध करते हुए साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

दादीजी का व्यक्तित्व सकारात्मक ऊर्जा से सदा परिपूर्ण रहा। वे विनम्रता एवं सादगी की अद्भुत पर्याय रहीं। उन्होंने जीवन की प्रत्येक बाधा को मुस्कुराते हुए परास्त किया और सार्थक जीवन जीने की प्रेरणा सदैव दूसरों को देती रहीं। यही कारण है कि उनके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए बिना न रह सका।

उनका सम्पूर्ण जीवन तो परमार्थ एवं त्याग का आर्दश रहा ही तथा जाते–जाते भी वे मानवता के अनुपम मिसाल पेश कर गई। वे अपनी देह विद्यार्थियों को शोध कार्यों हेतु गांधी मेडिकल कॉलेज को दानकर गई।

मानवता की अग्रदूत दादी आज हमारे बीज नहीं है परन्तु उनके विचार एवं कार्यों के माध्यम से वे आज भी हमारे मानस मे चिरस्थायी रूप से बसी हुई हैं। लोककल्याण एवं समाजसेवा की अतुलनीय निधि को हमारा श्रद्धापूरित शत्–शत् नमन!



Epitomes
OF

TOTAL QUALITY EDUCATION

ADMISSION OPENS

Pre-Nursery to Std. IX
&
Std. XI (Science & Commerce)

- Multimedia based Interactive Classrooms.
- High Level of Student Participation.
- World Class Infrastructure.
- Individual Attention.
- Co-curricular activities.
- Fun-filled learning inputs in the lap of nature.
- Bus Facility from every nook and corner of the capital.

Vidyasagar Public School

The first ISO Certified Pre-primary School of M.P.

Mithi Gobindram Public School

CBSE Affiliated & ISO Certified Sr. Sec. Boys Level

Navnidh Girls School

CBSE Affiliated & ISO Certified Sr. Sec. Girls Level

rakesh

SANT HIRDARAM NAGAR (BAIRAGARH) BHOPAL
Ph.: (0755) 2641688, 2643288, 2640173, 2640176

WISH YOU HAPPY GUDIPARVA & CHETICHAND



चैतीचांद के पावन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

Mob.: 98933334 7
09981299 6

Laxmi Collection





Rajkumar Ubhrani

Dealer Branded Mobile & China Mobile

Kamali Mandir Chouraha, Ghora Nikkas Bhopal - 1



चैतीचांद के पावन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

Sangam Sales



Opp. Shiv Shankar Bhojnalaya. Mandir Kamali
Ghora Nikkas Road, Bhopal - 462 001
Ph : 2749192 (S)

Vinod Kumar
9893549406

Anil Kumar
9893600732

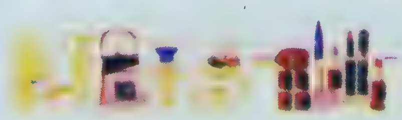


चैतीचांद के पावन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

TIN No. 2350390146

Ravi General Store

Deals In :



Cosmetic, & General Merchants Goods



Pawan Ahuj

Azad Market, Bhopal Ph : 2543579 Mob.: 9893721703



चैतीचांद के पावन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

राजकुमार लोकवानी

(आबकारी ठेकेदार)



नि. ईदगाह हिल्स, भोपाल मो.: 9827095711

भावनाओं की सुगंध बिखेरता 'सिन्धियत कुर्ता'

वासुदेव 'सिन्धु-भारती' की एक चर्चित प्रस्तुति है - भारत का प्रथम **'सिन्धियत कुर्ता'**, जिसे उन्होंने बड़ी आत्मीयता के कई से वर्ष पूर्व बनाया था। 24 दिसम्बर, 1972 को मुम्बई महानगर में दसवां अखिल भारतीय सिन्धी साहित्य सम्मेलन था। प्रातः 11 बजे, चर्चगेट स्थित के. सी. कालेज से रैली का शुभारम्भ होने वाला था कि वे स्वंय द्वारा चित्रित 'सिन्धियत कुर्ता' पहन कर पहुंचे तो वहां उपस्थिति सम्मेलन के प्रतिनिधि उसे देख कर रोमांचित हो उठे तथा कुर्ते पर चित्रित / अंकित प्रत्येक चित्र एवं पंक्तियां देख कर / पढ़ कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें गले लगा लिया।

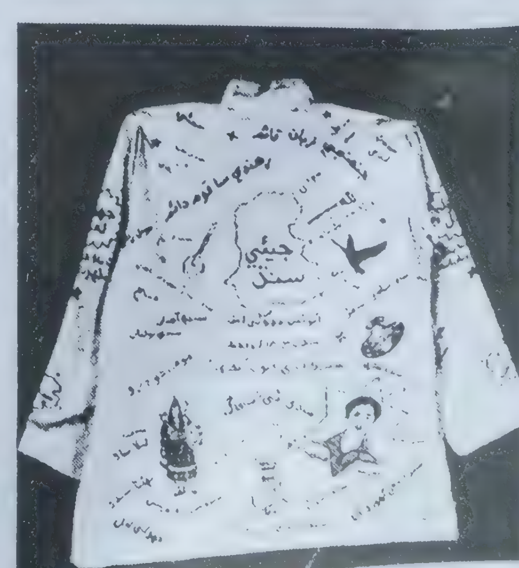
पीले रंग के इस सूती 'सिन्धियत कुर्ते' के **अग्र भाग** में, ऊपर बाई ओर महिलाओं का एक लोकनृत्य तथा दाई ओर पुरूषों के लोक नृत्य 'छेज' की आकृति, मध्य भाग में झूलेलालजी तथा निचले हिस्से में 'सिन्धियत की ज्योति' का चित्र अंकित है। **पृष्ठ भाग,** में ऊपर सिन्ध का मानचित्र, नीचे सिन्धु सम्राट दाहरसेन, अमर शहीद हेमू कालाणी, जलती मशाल और आसपास सिन्धी लोक वाद्य मटका व इकतारा तथा कूंज पक्षी दर्शाया गया है।





इसके अतिरिक्त वर्णित कुर्ते के दोनों भागों में, चित्रों के चारों ओर सिन्धी लिपि में कई उद्घोष एवं विशिष्ट नाम अंकित हैं, जिनमें कुछ इस प्रकार हैं:-

जिन्दह सा कौम रहंदी जंहिंजी ज़बान ज़िन्दह, सिन्धी आहियां सिन्धी सड़ायां सिन्धियत मुंहिजो शानु, सिन्धी सपूत रखंदा सिन्धी ज़बान कायमु, जीए सिन्ध जीए सिन्धी, सिन्धियत जी जोति सदियुनि ताईं जलंदी रहे, सिन्ध विसारणु मूं वसि नाहे, सिन्धी वतनु घोरे आया, सिन्धी थीउ सुजागु, आयो लाल झूलेलाल, मोहन जो दड़ो, सिन्धु सभ्यता, सिन्धियत जा प्यारा, सुहिणी, उमर-मारूई, मूमल-राणो, राइ ड्रियाच (सिन्धी लोक कथाओं के नायक-नायिकाएं), शाह-सचल-सामी (सिन्धी काव्य के अनमोल रत्न), संत लीलाशाह, साधु वासवाणी आदि। वासुदेव 'सिन्धु-भारती' द्वारा चित्रित उक्त सिन्धियत कुर्ते का चित्रांकन भले ही उद्वर्त चित्ताकर्षक न हो, किन्तु इसकी प्रस्तुति के पीछे जो उद्देश्य है, भावना है, मन के उद्गार हैं, उससे चित्रकार के सिन्धियत के प्रति प्रदर्शित अथाह स्नेह का अंदाज़ा सहज ही लगाया जा सकता है। यह कुर्ता अब काफी पुराना और फीका सा पड़ चुका है, फिर भी वे इसके महत्व को जानते हुए इसे सम्भाले हुए हैं।



अंतिम सफर

लेखक : खीमन यू. मूलाणी

गोपालदास बस में घुसा और कोने वाली सीट पर धड़ाम से बैठ गया। उसने अपने साथ लाया हुआ रेग्जीन का थैला सीट के नीचे रखकर एक ठंडी सांस ली। उसे ऐसा महसूस हो रहा था मानो उसके सीने पर कोई पहाड़ आ गिरा है और उसके नीचे दबकर उसका दम घुट रहा है।

बस चली। कंडक्टर आया और उससे टिकट के पैसे मांगे। उसने कंडक्टर को पैसे देते हुए कहा- 'बस के अंन्तिम मुकाम का टिकट दे दो।' कंडक्टर ने उसे टिकट दिया। उसने टिकट जेब में रख दिया।

गोपालदास असल में सिन्ध के 'मोरो' नामक स्थान का निवासी था। वहां वह सहकारी मुलाजिम था, परन्तु भारत के विभाजन के कारण वहां वह बहुत समय तक नौकरी नहीं कर सका था। भारत में आने के बाद दुबारा सरकारी नौकरी मिल गयी थी। इसलिये जीवन यापन के लिय ज्यादा संघर्ष नहीं करना पड़ा था। उसे केवल दो पुत्र थे, जिनको उसने अपना पेट काटकर लिखाया-पढ़ाया था। सर छुपाने के लिये उसने एक छोटा मकान भी क्रय किया था।

बस अपनी गीत से चल रही थी, परन्तु गोपालदास अपनी धुन में मगन था। वह अपने जीवन को चलचित्र की भांति देख रहा था। उसकी नजर सहसा अपनी आधी बांह वाली सिंधी कमीज में लगे सोने के उन चार बटनों की ओर चली गयी, जिन्हें वह सिन्ध से लाया था। बाकी सब कुछ तो वह वहीं छोड़ आया था। अपनी जमीन, मकान,

दोस्त-यार सब कुछ।

उसे अपना बेटा कैलाश याद आया। कैलाश जब एम.ए.उत्तीर्ण करने के बाद प्रायवेट कम्पनी में नौकरी पर लगा था, तब गोपालदास बहुत प्रसन्न हुआ था। उसने घर में सबसे कहा था- 'अब मुझे कोई चिन्ता नहीं है। मैं सेवा निवृत्त होने के बाद तीर्थ यात्रा पर निकलूंगा और अपना शेष जीवन भगवत भजन करके सफल बनाऊँगा।'

परन्तु उसका वह सपना तब टूट गया, जब कैलाश ने अपनी पत्नी के कहने पर कम्पनी द्वारा दिये गये किराये के मकान में जाने की बात की थी। उस समय गोपालदास ने अपने बेटे को अनमने ढंग से जाने की अनुमति तो दे दी थी, परन्तु उसके मन को जो आघात पहुंचा था, उसके प्रभाव से वह आज तब उबर नहीं पाया था। जब कभी उसे वह घड़ी याद आती थी, तो आंखों में अश्रुधारा बह निकलती थी।

उसका छोटा बेटा राम उसके साथ रहता था। वह शासकीय सेवा में अच्छे पद पर था। उसके दो बच्चे थे। घर की गाड़ी बहुत अच्छी चल रही थी, परन्तु एक दिन सास-बहू के झगड़े ने घर को चीरकर दो टुकड़ों में बांट दिया। ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार राजनीतियों के झगड़े ने भारत को विभाजित कर उसे बेघर बना दिया था।

उस झगड़े के बाद राम अपनी पत्नी और बच्चों को ले जाकर अलग किराये के मकान में रहने गया था। उस समय गोपालदास ने बेटे को बहुत समझाया था कि औरतों के झगड़े के कारण घर नहीं छोड़े जाते। लेकिन राम ने उसकी एक न सुनी और वह अपनी मां को रोता-बिलखता छोड़कर घर से बाहर चला गया था।

गोपालदास को याद आया कि उस समय अपनी पत्नी को समझाया था- 'पगली नया जमाना है। चिन्ता न करो। मेरे सेवानिवृत्त

होने के बाद भी हमें कोई चिन्ता नहीं रहेगी। पेन्शन से हम लोग अच्छी तरह से अपना पेट भर सकेंगे।'

उस समय गोपालदास ने बाहर से तो इस प्रकार की बातें की थी, परन्तु उसके अन्तर मन को इतना आघात लगा था कि उसने कई दिनों तक घर में छुपछुपकर चुपचाप आसूं बहाये थे। उसे बार-बार बच्चों की याद आती थी। खाली घर खाने को दौड़ता था। परन्तु उस समय भी वह कुछ कर नहीं पाया था।

बस रूकी। लोग चढ़े और कुछ लोग उतरे। जिनको आगे जाना था, उन्होंने उतर कर चाय-नाश्ता किया। परन्तु गोपालदास बस ही बैठा रहा। उसे किसी बात का भान नहीं था। वह अपने ख्यालों में इतना मगन था कि उसे सुध नहीं थी कि बस रूकी भी है।

गोपालदास को वह समय याद आया, जब वह सेवानिवृत्त हुआ था। उन प्रारम्भिक दिनों में घर में खाली बैठना उसे अच्छा नहीं लगता था। इसलिये उसने एक छोटी सी दुकान खोलकर समय पास करने का विचार किया था। उस समय उसकी पत्नी ने इस बात का विरोध किया था। कहा था- 'मैं घर में अकेली रहकर परेशान हो जाती हूँ। बहुत दिनों के बाद तो दिन मेंआप से बात करने का मौका मिला है। अब आप फिर दुकान खोलने की बात कर रहे हो।'

गोपाल अपनी पत्नी की बात को टाल नहीं सका था। उसको सेवानिवृत्त हुए अभी सात-आठ माह भी नहीं बीते थे कि एक दिन अचानक उसकी पत्नी का देहांत हो गया। तब उसके छोटे बेटे राम ने उसे समझाया था- 'बाबा, अब आप अकेले हो गये हैं। चल कर मेरे साथ रहिये। आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता है। आपकी यहां सेवा-सुश्रूषा कौन करेगा?'

उस समय गोपालदास ने अपने बेटे को यह कहना चाहा था कि तुम अपने बच्चों सहित क्यों नहीं मेरे साथ आकर रहते हो? लेकिन वह इस बात को कह नही सका था। उसे डर लगा था कि कहीं उसके बेटे को यह बात बुरी न लग जाये। उस समय उसने अपने आपको ही समझाया था। तुम्हारी उम्र ही कितनी बची है, बच्चों की खुशी में ही तुमको अपनी खुशी समझना चाहिये। यहां और वहां में अन्तर ही क्या है। वह भी तो तुम्हारा ही घर है।

उसके बाद वह चुपचाप राम के घर में रहने के लिये चला गया था। राम के पास पहते हुए उसे मात्र एक वर्ष ही बीता था कि एक दिन मौका पाकर राम ने उससे कहा था- 'बाबा, क्यों न आपका मकान बेचकर कोई छोटी-मोटी दुकान खरीद ली जाये। आजकल वेतन से तो गुजारा होता नहीं। आपकी पेंशन की रकम भी बहुत थोड़ी-सी ही है। दिन के समय आप दुकान संभालना और शाम को कार्यालय से बाहर आकर मैं दुकान पर बैठूंगा। कुछ आय बढ़ेगी, तो घर का खर्च अच्छा चलेगा।'

पहले तो गोपालदास ने उसे मना किया था। कहा था- 'मैंने अपनी जमा पूंजी तो आप दोनों भाईयों को दे ही दी है। अब यही तो एक पूंजी बची है। उसे भी बेच दूंगा तो शेष क्या बचेगा।' लेकिन बेटे के

बार-बार कहने पर उसने एक दिन अपना मकान बेच दिया था और पूरी रकम लाकर राम के हवाले कर दी थी। उसके बेटे ने इन पैसों से एक छोटी-सी दुकान अपने नाम से खरीदी थी। उसे उस दुकान पर सारा दिन बैठने के लिये मजबूर किया गया था। उसकी तबीयत बिगड़ने लगी थी और एक दिन उसे बिस्तर पकड़ना पड़ा था। उसकी बीमारी के कारण दुकान पर प्रभाव पड़ा था। इसलिये राम के व्यवहार में भी परिवर्तन आ गया था। राम की पत्नी बात-बात पर उसे ताने कसने लगी थी। वह उन दोनों के व्यवहार से परेशान हो गया था।

बस टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर बढ़ती चली जा रही थी। वह जंगल, पर्वत, नदियां, गांव, शहर पीछे छोड़ती जा रही थी, परन्तु गोपालदास यह सब कुछ नहीं देख रहा था। वह सोच के गहरे समुद्र में डुबकियां लगा रहा था।

उसे वह दिन याद आया, जिस दिन बच्चों की एक मामूली सी बात पर राम की पत्नी ने उसे भला-बुरा कहा था। उसने सब कुछ चुपचाप बैठकर सुना था। उसे विश्वास था कि उसका बेटा अवश्य उसका पक्ष लेगा। वह अपनी पत्नी को डांटेगा। लेकिन राम भी उल्टे उस पर ही बिगड़ा था। राम ने गुस्से से कहा था- 'आप छोटी-मोटी बातों में से त्रुटियां निकालते हैं। बीमारी की हालत में भी चुपचाप नहीं बैठते है। यही तो बच्चो के खेलने-खाने के दिन हैं। आप बच्चों को खेलने-कूदने से मना करते है। उस दिन आपको हमारी सेवा-सुश्रूषा अच्छी नहीं लगती है, तो आप भले ही जाकर कैलाश के यहां रहो।'

गोपालदास ने बेटे की बातें भी चुपचाप बैठकर सुनी थी। उसे एक शब्द भी बोलने की हिम्मत नहीं हुई थी। उसे लगा था कि उसने अपने मकान बेचकर अपने ही पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मारी है। दूसरे दिन उसने अपने कपड़े और दवाएं इत्यादि थैले में डाले थे और किसी को बिना बताये घर से निकल पड़ा था।

रास्ते में उसे सब्जी की दुकानें दिखी थी। उसे कमल डंडी की सब्जी बहुत अच्छी लगती थी। उसने कमल डंडी खरीदी। सोचा था कि कैलाश के घर जाकर उसकी सब्जी बनवायेगा। कमल की डंडी लेकर जब कैलाश के घर पहुंचा, तो कैलाश घर में नहीं था बहू ने उसका आदर-सत्कार किया था क्षण भर के लिये उसके दुख दूर हो ग थे। वह बहुत खुश हुआ था। रात्रि के समय जब कैलाश घर में आया था त उसने भी उसका आदर किया था अलबत्ता कैलाश को शक हुआ था कि उसके पिताजी राम से रूठकर उनके पास पहुंचे हैं। उसने पिताजी से पूछ परन्तु गोपालदास ने बेटे साफ-साफ कहा था कि ऐसी कोई बात नहीं है। ज एक दो महीने बीते और राम नहीं आया तो कैलाश का शक विश्वास में बदल गया था। उसके बाद उसके व्यवहार में भी परिवर्तन परिलक्षित होने लगा था गोपालदास की बहू भी उसकी उपस्थिति से परेशान होने लगी थी उसके व्यवहार में भी अपनापन नह रहा था। उसने गोपालदास को खरी खोटी सुनाना शुरू कर दिया था।

एक दिन तो हद ही हो गयी थी बहू ने उसे यहां तक कह दिया था कि अब वे लोग उसकी सेवा-सुश्रूषा नह कर पायेंगे। अच्छा यही होगा कि व स्वयं ही वृद्धाश्रम में चला जाये। ब

के ये शब्द सुनकर उस पर वज्रपात हुआ था उसके अन्तर मन ही से एक बड़ी चीख निकल गयी थी। उसे लगा था कि मानों वह दो पुत्रों के होते हुए भी अनाथ है। उसने अपने आप से बार-बार पूछा कि क्या मैं अनाथ हूँ? उसे कुछ समझ ने नहीं आया था। उसने अपनी पत्नी की तस्वीर के सामने जाकर आंसू बहाये थे।

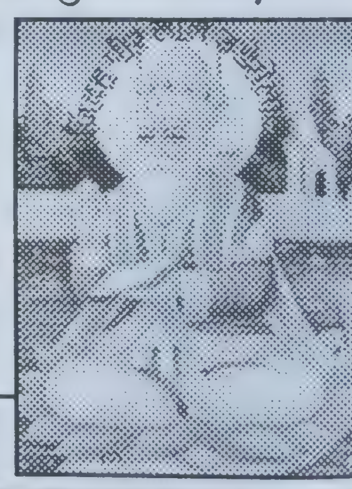
उसने अपनी पत्नी की तस्वीर से शिकायत करते हुए कहा था- देखती हो, आज तेरे दोनों बेटे मुझे अनाथ समझ रहे हैं। तेरी बड़ी बहू मुझे वृद्धाश्रम में भेजना चाहती है। क्या दो पुत्रों के होते हुए भी मैं वृद्धाश्रम में रहूं? लेकिन तस्वीर ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया था।

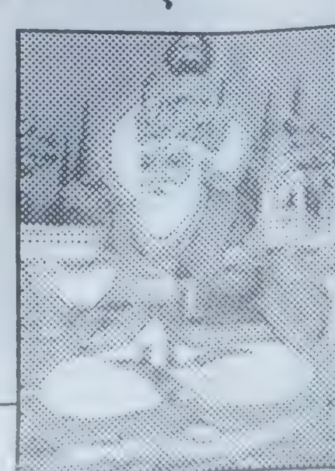
उसके बाद उसने अपने कपड़े और दवाएं आदि अपने रेग्जीन के थैले में डाले थे और किसी को बिना बताये घर से बाहर निकल गया था। चलते-चलते वह अपने पुराने मकान के पास पहुंचा था, जो उसने खुद ही बेच दिया था। उसने काफी देर तक उस मकान को टकटकी लगाकर देखा था और अपने आप बुदबुदाया था। वहां से चलकर वह सीधे बस स्टैंड पर आया था और बस में बैठ गया था।

अलसुबह बस बनारस पहुंची। अँधेरा अभी भी फैला था। बस में बैठे सब लोग उतर गये। परन्तु एक बूढ़ा अभी भी वहीं बैठा था। कंडक्टर ने चिल्लाकर बूढ़े से कहा- 'काका, उठो, बस खाली करो।' परन्तु बूढ़े ने नहीं सुना। कंडक्टर ने बूढ़े के पास जाकर उसे झिंझोड़ा तो बूढ़ा सीट पर ही लुढ़क गया। वह मर चुका था। पता नहीं उसके प्राण पखेरू किस समय उड़ गये थे।

कंडक्टर ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस आयी और लाश को उतारकर ले गयी। पंचनामा बना। लाश को लावारिस मानकर उसका अंतिम संस्कार भी कर दिया गया।

(लेखक द्वारा अनुदित)





सिंधी बो॒ली बचाइण ऐं उनजे वाधारे लाइ कम्प्यूटर जी अहिम्यत

- भग॒वान बा॒बा॒णी

कम्प्यूटर वक्त जी हिक अहम जरूरत बणिजी चुको आहे। हाणे काफी माण्हुन वटि कम्प्यूटर आहिन। जरूरत इन गा॒ल्हि जी आहे त कम्प्यूटर खे जिते असां मनोरंजन, तैलीम जे रूप में कम आणियूं था त उते उनजो कुछ इस्तेमाल पहिंजी बो॒लीअ जे बचाव ऐं रोजगार में मदद करण वारे ज़रीए ऐं वाधारे लाइ बि करियूं।

भारत में कम्प्यूटर ते सिंधी बो॒लीअ जो इस्तेमाल सिर्फ कुझु सिंधी प्रेस वारा ई करे रहिया आहिन। सिंधी विद्यार्थियुन ऐं साहित्यकारन में सिंधी कम्प्यूटर अञां लोकप्रिय न थी सघियो आहे, जड॒हिं त सिंधी साफ्टवेअर में सिंधी फांट्स ईजाद थिए काफी वक्तु थी चुको आहे। बद्क़िस्मतीअ सां हिते भारत में कम्प्यूटर ते सिंधीअ जो इस्मेमाल करण जो रवाजु अञां ताई आम न थी सघियो आहे, इनजो हिकु सबबु इहो थी सघे थो त भारत में ईजाद थियल सिंधी फोंट्स ऐं साफ्टवेअर हिंदी ऐं बि॒यन भारती भाषाउन जियां हेल ताई मुफ्त में मुयस्सर न हुआ। पर वेझिड़ाईअ में भारत सरकार जे संचार ऐं मालूमात तकनीक वज़िरात पारां सिंधी साफ्टवेअर ऐं फॉन्ट्स बि॒न्हीं (सिंधी ऐं देवनागरी) लिप्युन में जारी कया विया आहिन जंहिंजी सी.डी. मुफ्त में मुयस्सर कराई पेई वञे। www.ildc.in या www.ildcgovt.in तां बि डाउन लोड करे सघिजे थी। पर अरबी सिंधी लिपी वारो आफ्टवेअर साईज़ में तमाम वडो॒ ऐं आप्रेट करण में बी डख्यो आहे। साफ्टवेअर आप्रेट करण, की बोर्ड वगैरह जी ज॒ाण डि॒यण लाइ गाईड लाईन बि साफ्टवेअर सां गड कोन पेई आहे। सभ खां वडी॒ गा॒ल्हि त एम एस वर्ड में इहे फॉन्ट्स कमु कोन था कन्। जंहिंकरे माण्हू चाहे करे बि इनजो इस्तेमाल नथो करे सघे।

बिए पासे सिंध जे विद्वान अब्दुल


With Best Compliments from
परदेवाला
Baba
Interiors
The Furnishing Store
• Mattresses
• Curtain Cloth
• Curtain Rods
• Vertical Blinds
• Venetian Blinds
• Chik Blinds
• Wooden Floorings
• Bath Fittings
• False Ceilings
69-A, Zone II, M.P. Nagar, Opp. Pathak Nursing Home Bhopal-11 Ph.: 4270686
Mob.: 9303131413 Email - babainteriors@yahoo.co.in


With best compliments from
Apna
The Perfect Statianery
Since : 1989
Apna Enterpises
NS-EN ISO 9001 : 2008/ISO 9001:2008
Trading of Stationery
&
Computer Peripherals
D.R. MOTWANI
Aashish Enterprises
A House of Stationary & Computer & Electronics
19 L, Shristi Complex, 206, Zone-I, M.P. Nagar, Bhopal - 11
Ph : 4274290, 4270143, Mob.: 9301288537
मध्यप्रदेश की एक मात्र I.S.O. सर्टीफाइड स्टेशनरी शाप

माजिद भुरगड़ीअ काफी अर्सो अगु जेको सिंधी साफ्टवेअर ठाहियो आहे उहो कम्प्यूटर में डाउन लोड करणु तमामु सवलो आहे ऐं उनमें की बोर्ड कम आणण बाबत वसीह समझाणी बि डिनल आहे।

पर असांजे नौजवानन, विद्यार्थियुन ऐं खास करे अदब सां वास्तो रखंदड़न खे हिन तरफ ध्यान डियण जी ज़रुरत आहे। कम्प्यूटर में सिंधीअ में लिखण जे लाइ कंहि बि ,खास महारत जी ज़रूरत न आहे। जहिड़ी तरह अंग्रेजी लिखी वेंदी आहे सागी तरह एम बी सिंधी साफ्टवेअर सां सिंधी सघिजे थी। शुरुअ में थोड़ी डुख्याई ज़रूर महसूस थींदी पर हफ्ते खन जी प्रेक्टिस खां पोइ इहा सवली थी वेंदी। सिंधी बोलीअ जो भविष्य कम्प्यूटर ऐं इंटरनेट आहे, जेतिरा तियार करे सघिजे थो। हूंअं त सरकारी तरह काफी इदारा बोलीअ जे वाधारे जी हाम हणण में पूरा आहिन पर अजु डींहं तई बि सिंधी बोलीअ जे कंहिं सरकारी इदारे इहा कोशिश न कई आहे त कम्प्यूटर ट्रेनिंग जे सेंटरन ते सिंधी बोलीअ जी सिख्या बि मुम्किन बणाई वञे। वधीक सिंधी नौजवान कम्प्यूटर ते सिंधी बोलीअ जो इस्तेमाल कंदा, भारत में ओतिरो ई वधीक सिंधी बोलीअ जो बचाउ ऐं पुख़्तो वाधारो मुम्किन थी सघंदो।

असां मां हर हिक खे इहा कोशिश करणु घुरिजे त कम्प्यूटर मे सिंधी लिखण जो साफ्टवेअर ज़रूर लोकप्रिय बणिजे। इन लाइ हर सिंधीअ खे पंहिंजे कम्प्यूटर में सिंधी साफ्टवेअर ज़रूर लोड करणु घुरिजे त जीअं कम्प्यूटर में सिंधी डिसी करे ई मन नई पीढ़ीअ में सिंधी लिखण पढ़ण जो चाहु पैदा थिए। पंहिंजन बारन, दोस्तन ऐं विद्यार्थियुन खे ट्रेनिंग डेई तियार करे सघिजे थो। हूंअं त सरकारी तरह काफी इदारा बोलीअ जे वाधारे जी हाम हणण में पूरा आहिन पर अजु डींहं तई बि सिंधी बोलीअ जे कंहिं सरकारी इदारे इहा कोशिश न कई आहे त कम्प्यूटर ट्रेनिंग जे सेंटरन ते सिंधी बोलीअ जी सिख्या बि मुम्किन बणाई वञे।

स्वतंत्रता संग्राम और सिन्ध का योगदान

लेखक : प्रेम मोतीराम तनवाणी

गतांक से आगे:

1857 का स्वतन्त्रता-संग्राम और सिन्ध

1857 के स्वतन्त्रता-संग्राम के नेताओं में से नाना साहब और तात्या टोपे की सिन्ध-यात्रा के बाद हैद्राबाद और सक्खर में स्वतन्त्रता-संग्राम में तेजी आई। शिकारपुर में इस क्रान्ति के प्रमुख नेता के सरदार अलिफ खान, जेकबाबाद के सारदार बहादुर खान खोसो, दरिया खान जखराणी और सय्यद इनायत शाह। ये चारों नेता गिरफ्तार कर लिए गए। इस दुर्भाग्य के कारण यह संग्राम असफल हुआ। अलिफ खान को तोप से उड़ाया गया। सय्यद शाह, शेष दो साथियों की सहायता से जेल दी दीवार फाँदकर भाग निकले। सरदार खोसो और जखराणी के भी भाग निकलने के भय से अँग्रेजों ने दोनों को काले पानी की सजा देकर, अन्डमान-जेल भेज दिया। जब अँग्रेज सरकार ने शिवाजी महाराज के पोते चिन्ना साहब को कराची की सैनिक छावनी में लाकर कैद किया था तब अँग्रेजों की हिन्दू-सेना की दो टुकड़ियों ने हैद्राबाद और,सक्खर की छावनियों में विद्रोह किया था।

1859 में नगरपारकर (थरपरकर) में विद्रोह हुआ। राणो (राजा) और मन्त्री कैद किए गए। दो साल मुकदमा चलाने के बाद राणो को 14 और मन्त्री को 10 साल की काले पानी की सजा देकर, अन्डमान-जेल भेज दिया गया।

1876 में उपलब्ध सरकारी रिकार्ड के अनुसार 14 सितम्बर, 1876 के दिन कराची में उपस्थित बम्बई की नेटिव अल्फेन्ट्री की 21 वीं रेजीमेंन्ट नें विद्रोह किया था। विद्रोह करने वाले प्रमुख विद्रोहियों को पकड़ा गया और उनमें से 5 को तोप से उड़ाया गया, 12 को फाँसी पर लटकाया गया तथा शेष को काले पानी की सजा देकर अन्डमान जेल भेज दिया गया।

उपरोक्त सभी विद्रोहों में शिकारपुर और सक्खर आदि के सिन्धी व्यापारियों ने विद्रोहियों को भामाशाह की तरह अन्न और धन की सहायता दी थी।

अँग्रेजों के रिकार्ड में इन संग्रामों का उल्लेख किया गया था। किन्तु तथाकथित स्वतन्त्रता की बलिहारी कि स्वतन्त्रता के नाम पर सारा सिन्ध-प्रदेश तो परदेश बन गया, हमारे सरकारी नेताओं ने उसके बलिदानों को भी जान-बूझकर अनदेखा किया। 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम की स्मृति में भारत सरकार द्वारा 10 मई, 1957 के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष मे प्रकाशित पुस्तक में, सिन्ध की भूमिका का उल्लेख तक नहीं किया गया। वह अन्धी व दोगली नीति, 1947 में तथाकथित स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद भी जारी रही।

दीवान गिदूमल ने अनोखी अकल से.....

सिन्धू नदी के पास बने इस किले के बाहर एक नया गाँव भी बसाया गया, जिसे 'गिदूमल का टन्डा' नाम दिया गया। यहाँ के बन्दरगाह का नाम भी दीवान गिदूमल के सम्मान में 'गिदू बन्दर' रखा गया।

सिन्ध सभा द्वारा नव-जागरण : 1882

1857 के स्वतन्त्रता-संग्राम के बाद हिन्दुस्तान में राजा राम मोहनराय के 'ब्रह्म समाज', केशवचन्द्र सेन के 'नवविधान ब्रह्म समाज', श्री दयानन्द सरस्वती के 'आर्य-समाज' और 'प्रार्थना समाज' तथा जस्टिस रानाडे की 'सार्वजनिक सभा' जैसे संगठनों द्वारा नव-जागरण की लहर सिन्ध में भी आई। अँग्रेज सरकार द्वारा घोषित इंडियन वर्नाकुलर प्रेस एक्ट के विरुद्ध जन-चेतना के लिए, सर सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी के द्वारा हिन्दुस्तान के प्रमुख शहरों के साथ कराची की यात्रा से भी सिन्ध की राष्ट्रीय चेतना में वृद्धि हुई।

सिन्ध में नव-जागरण की इस लहर का प्रभाव, 1882 में स्थापित 'सिन्ध सभा' के रूप में हुआ। इस सभा के माध्यम से सिन्धी, मुस्लिम, पारसी, गुजराती, मराठी और बंगाली एक मन्च पर एकत्रित हुए। सिन्ध सभा के पहिले अध्यक्ष थे सिन्ध के मुक्तिदाता के रूप में प्रसिद्ध सेठ नाऊँमल होतचन्द भोजवाणी परिवार के सेठ आत्मराम भोजवाणी। उनके भाई आलूमल टीकमदास भोजवाणी के साथ अन्य प्रमुख सदस्य थे - राजऋषि दीवान दयाराम गिदूमल, साधू हीरानन्द शौंकीराम आडवाणी, उनके भाई साधू नवलराय, दीवान दयाराम जेठमल (जयरामदास दौलतराम के चाचा), महाराज नैनाराम, दीवान टहलराम खेमचन्द वजीराणी, दीवान कौड़ोमल चन्दनमल खिलनाणी, सेठ हरचन्दराय विशनदास, दीवान उधाराम मूलचन्द, जमशेदजी नादिर, फतेहचन्द आत्माराम, शरीफ सालेह मोहम्मद, ए. कोक, एडुलजी दिनशा, एम.एम. मर्जबान, नागेन्द्रनाथ गुप्त, सहजराम गंगाधर, हसन अली, हीरानन्द मसंद, फतह अली खान और सभा के सचिव थे दौलतराम जेठमल (जयरामदास दौलतराम के पिता)।

राजऋषि दीवान दयाराम गिदूमल, दीवान टहलराम खेमचन्द वजीराणी और सेठ हरचन्दराय विशनदास, पहिले सिन्धी थे जिन्होंने सबसे पहिले बी.ए.एल.एल.बी. (वकालत) की

परीक्षा पास की। सिन्ध सभा के द्वारा 'सिन्ध टाईम्स' (अंग्रेजी) और 'सिन्ध सुधार' (सिन्धी) नामक दो अखबारें भी प्रकाशित की गईं। इन दोनों अखबारों में सिन्ध के शहरों और दूर-दूर के छोटे-छोटे गाँवों में जन-समस्याओं के साथ अंग्रेज सरकार के द्वारा किए जा रहे अत्याचारों के समाचार और उनके निदान आदि से सम्बन्धित लेख दिए जाते थे। इन लेखों आदि को तैयार करने में राजऋषि दीवान दयाराम गिदूमल की प्रमुख भूमिका थी, जबकि वे सरकारी कर्मचारी थे। उन्होंने बम्बई के एलफेंस्टन कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की थी। बम्बई में जस्टिस रानाडे, बहरामजी मलबारी, पन्डिता रामा बाई जैसी महान आत्माओंके सम्पर्क में आए। लोकसेवा उनका मूलमन्त्र था, वे सिन्ध में जस्टिस रानाडे की प्रतिमूर्ति थे। थी। बम्बई में जस्टिस रानाडे, बहरामजी मलबारी, पन्डिता रामा बाई जैसी महान आत्माओं के सम्पर्क में आए। लोकसेवा उनका मूलमन्त्र था, वे सिन्ध में जस्टिस रानाडे की प्रतिमूर्ति थे।

उन्होंने सिन्ध टाईम्स और सिन्ध सुधार के सम्पादन के लिए साधू हीरानन्द जैसे एक अमूल्य हीरे को पत्र लिखकर सिन्ध लौट आने और अखबारों का सम्पादक बनने का आव्हान किया। साधू हीरानन्द ने अखबार के सम्पादक के रूप में देश-सेवा के कार्य को स्वीकार करके, डिप्टी कलेक्टर या सब जज के बाद आगे पदोन्नती पाने के अवसर ठुकरा कर सिन्ध लौटना स्वीकार किया। साधू हीरानन्द ने कलकत्ता यूनिवर्सिटी से बी.ए. की परीक्षा पास की थी। साधू हीरानन्द ने, स्वामी रामकृष्ण परमहंस के निकट सम्पर्क में रहते हुए उनकी सेवा का अवसर प्राप्त किया था। वे, कलकत्ता में केशवचन्द्र सेन के घर में रहने के साथ कभी-कभी 'भारत आश्रम' में भी जाकर रहते थे। वे, श्री सेन की बैंड ऑफ होप (आशावादी टोली) के सक्रिय सदस्य भी थे। सिन्ध में आने के बाद भी केशवचन्द्र सेन के साथ उनका सम्बंध, पत्र-व्यवहार के माध्यम से बना रहा। साधू हीरानन्द के भाई साधू नवलराय, सरकारी कर्मचारी होने के बाद भी सिन्ध सभा के प्रमुखों में से एक थे। सिन्ध सभा की अखबारों सिन्ध टाईम्स और सिन्ध सुधार का सम्पादन कार्य, साधू हीरानन्द को सौंपे जाने के बाद इन अखबारों की लेखनी की धार और अधिक नुकीली हो गई थी। 1884 में सिन्ध टाईम्स के मईअंक के सम्पादकीय की शब्दावली इस प्रकार थी, 'हिन्दुस्तान ने 1882-83 में इंग्लैंड को 4.5 करोड़ पाउंड भेंट स्वरूप दिए और 1883-1884 में अधिक नहीं तो इतने की ही लूट मचेगी तुलनात्मक रूप से हिन्दुस्तान में नादिरशाह की लूट 3 करोड़ 20 लाख पाऊंड से अधिक नहीं थी और ये लूट हर साल नहीं होती थी, किंतु अब हिन्दुस्तान को हर साल लगभग 4.5 करोड़ पाऊंड देने पड़ेंगे। डॉ. हन्टर के शब्दों में जब, 'हिन्दुस्तान की पांच प्रतिशत जनता आधे पेट-भोजन पर पलती है।' तब यह लूट कितने आश्चर्य की बात है। हिन्दुस्तान एक गरीब देश है, इससे कोई असहमत न होगा, परंतु हिन्दुस्तान में यह गरीबी तो इसलिए आई है कि उसके धन-भन्डार को हर साल लूटा जा रहा है। ये लूट ही हिन्दुस्तान के कष्टों का कारण है। इसके पक्ष में अजीब तर्क दिए जा रहे हैं। यदि अंग्रेजों का उद्देश्य हिन्दुस्तान में सुख-शान्ति और आनन्द का वातावरण लाना है तो उन्हें चाहिए कि इस देश की बढ़ती गरीबी और विवशता पर ध्यान दें। अपनी आवश्यकताओं में कटौती कर खर्च घटाएँ। देश का रक्त चूसकर इसे मौत की सेज पर लेटाने वाले घावों पर मरहम लगाएँ।'

सिन्ध में इंडियन नेशनल काँग्रेस की हलचल - 1885

1883 में हैदराबाद-सिन्ध में सिन्ध सभा के सदस्यों द्वारा 'ब्रह्म समाज' की स्थापना के साथ इसका एक विशाल भवन भी खड़ा किया गया। 1885 में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद सिन्ध सभा के सदस्यों ने इसकी सदस्यता ली। बम्बई में काँग्रेस के प्रथम अधिवेशन में दीवान दयाराम जेठमल, विशनदास पारवाणी और दीवान उधाराम मूलचन्द ने सिन्ध के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया था। इस अधिवेशन में सारे देश से कुल 72 प्रतिनिधी शामिल हुए थे। 1886 के कलकत्ता में हुए कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में साधू हीरानन्द और दीवान गोबिन्दबख्श ने, सिन्ध के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

सभा द्वारा जनवरी, 1887 में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ राष्ट्रीय चेतना के लिए कराची में दीवान दयाराम जेठमल के नेतृत्व में डी.जे. सिन्ध आर्टस् कॉलेज नामक पहिले स्वदेशी शिक्षा केन्द्र की स्थापना की गई। इस महत्वपूर्ण कार्य में राजऋषि दीवान दयाराम गिदूमल, दीवान मेठाराम शाहाणी और दीवान साधू नवलराय का विशेष सहयोग था। दीवान दयाराम जेठमल, सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान करने वालों में अग्रणी नेता थे, इसलिए वे कराची के सर्वाधिक सम्मानित व्यक्ति थे, उन्हें समाज के पिता के रूप में देखा जाता था। उन्होंने राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना के बाद कराची में काँग्रेस स्टैंडिंग कमेटी स्थापित की, जिसके सेक्रेटरी श्री नागेन्द्रनाथ गुप्त बनाए गए। दीवान दयाराम जेठमल, बम्बई लेजिसलेटिव काउंसिल के सदस्य मनोनीत किये गए। 16 अगस्त, 1887 के दिन उनके स्वर्गवास के बाद इस पद पर दीवान उधाराम मूलचन्द को मनोनीत किया गय। उन्होंने कांग्रेस का कार्यभार भी सम्भाला, वे कराची म्युंसिपिल के अध्यक्ष भी चुने गए। 1887 में कराची म्युंसिपल-नेताओं की त्रिमूर्ति के रूप में दीवान टहलराम खेमचन्द, सेठ हरचन्दराय विशनदास और नागेन्द्रनाथ गुप्त चुने गए।गए। 16 अगस्त, 1887 के दिन उनके स्वर्गवास के बाद इस पद पर दीवान उधाराम मूलचन्द को मनोनीत किया गय। उन्होंने कांग्रेस का कार्यभार भी सम्भाला, वे कराची म्युंसिपिल के अध्यक्ष भी चुने गए। 1887 में कराची म्युंसिपल-नेताओं की त्रिमूर्ति के रूप में दीवान टहलराम खेमचन्द, सेठ हरचन्दराय विशनदास और नागेन्द्रनाथ गुप्त चुने गए।

काँग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन में सिन्ध के प्रतिनिधि अवश्य भाग लेते थे। 1888 के इलाहाबाद में हुए अधिवेशन में दीवान टहलराम खेमचन्द और हरचन्दराय विशनदास और 1889 में बम्बई अधिवेशन में साधू हीरानन्द ने, सिन्ध के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

सिन्ध में कॉंग्रेस का पहिला प्रान्तीय सम्मेलन - 1895

दीवान टहलराम खेमचन्द के अथक प्रयासों के फलस्वरूप 1895 में, अन्य प्रान्तीय सम्मेलनों की तरह सिन्ध में काँग्रेस का पहिला प्रान्तीय सम्मेलन कराची में हुआ। इस सम्मेलन में सिन्ध के विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसकी स्वागत समिति के चेयरमेन थे जनाब अलह बख्श सूमरो और सम्मेलन के अध्यक्ष थे श्री नारायण जी. चन्दावरकर। इस सम्मेलन को सफलत प्रदान करने वालों में प्रमुख थे - दीवान टहलराम खेमचन्द, दीवान दौलतराम जेठमल, सेठ हरचन्दराय विशनदास, दीवान हीरानन्द खेमसिंघ, दीवान लालचन्द नवलराय, जनाब मजालुदीन अब्दुल्ला, ठाकुरदास खेमचन्द, हिमथसिंघ गजसिंघ, लेखराज तिलोकचन्द, प्रो. बी.जी. बादशाह, दीवान ठाकुरदास और जनाब गुलाम हुसैन छागला। इस सम्मेलन में चार प्रस्ताव पास किए गए। (1) कार्यकर्ताओं और गैर कार्यकर्ताओं की एक बैठक बुलाकर समस्याओं का निदान किया जाए। (2) बम्बई काउंसिल में जागीरदारों और जमींदारों के रूप में केवल एक सदस्य की अपेक्षा अधिक सदस्य लिए जाएँ। (3) सिन्ध प्रोवेन्शियल सोर्स में न्याया विभाग में अधिकतम पघार चार सौ और कर-राजस्व विभाग में सात सौ से बढ़ाकर गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक की तरह एक हजार की जाए। (4) कराची में सदर कोर्ट के स्थान पर हाईकोर्ट स्थापित की जाए।

पूना में प्लेग - कौड़ोमल चन्दनमल की अगवानी में सहायता

1897 में पूना में फैले प्लेग की भयंकर विपदा के समय, सिन्ध से प्रसिद्ध समाजसेवी दीवान कौड़ोमल चन्दनमल खिलनाणी की अगवानी में सिन्ध के अनेक कार्यकर्ता पूना गए थे। दीवान कौड़ोमल की सेवाओं के सम्मान स्वरूप अंग्रेज सरकार ने उन्हें 'राय साहब' की मानद उपाधि से सम्मानित किया था।

एशियाई देशों में नई लहर - बंगाल विभाजन : 1905

1897 से 1905 तक दुनियाँ के साथ हिन्दुस्तान में भी कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं। इन घटनाओं में विशेष घटना थी- छोटे से देश जापान द्वारा रूसी जारशाही को परास्त करना। यूरोप की औद्योगिक तकनीक और आधुनिक हथियारों के निर्माण के साथ आधुनिक युद्ध-कला की नकलकर, जापान ने स्वदेशी सामान के साथ हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त की। जो विकास प्राप्त करने में यूरोपीय देशों को दो सौ साल लगे, जापान ने वह केवल तीस साल में ही प्राप्त कर, सारी दुनियाँ को आश्चर्य-चकित कर दिया। इसके पहिले यूरोप की अंग्रेज, फ्रेन्च, रूसी, डच और पोर्चगीज जातियाँ ऐसे समझती थीं जैसे ईश्वर ने उन्हें एशियाई देशों पर हमेशा राज करने का वरदान और आदेश दिया हो। परंतु 1905 में उनका यह घमन्ड, छोटे से देश जापान ने तोड़ दिया 1893 में एक और घटना हुई- अमरीका के शिकागो में हुए विश्व धर्म सम्मेलन में युवा स्वामी विवेकानन्द के द्वारा, भारतीय वैदिक ज्ञान की श्रेष्ठता सिद्ध करना। स्वामी विवेकानन्द की भूमिका इतनी अधिक प्रभावशाली थी कि वे लगातार तीन साल तक सारे यूरोप को वैदिक ज्ञान से धन्य करते रहे। इन घटनाओं ने सारे एशियाई देशों की जनता में स्वाभिमान और आत्मविश्वास जाग उठा। ऐसे समय में काँग्रेस की अब तक की नीतियों से, काँग्रेस के कई कार्यकर्ता सोचने को बाध्य हुए कि हर साल सम्मेलन के बाद सरकार को अर्जी देने का काम, हमारे ही लूटे हुए धन में से कुछ बचे-खुवे टुकड़ों की भीख माँगने जैसा अपमान जनक काम है। उनके मन में क्रांतिकारी विचार पनपने लगे। जन-समुदाय में भी अंग्रेज सरकार के प्रति आग सी भड़कने लगी। 1905 में हुए बंगाल-विभाजन ने घी डालकर इस आग को और भी अधिक भड़का दिया।

TITHI - 2010

तिथियाँ

माह	Month	ग्यारस - 1	सतनारायण	गणेश चौथ	ग्यारस-2	उमास	चंद्र
जनवरी	JAN	26 मंगलवार	30 शनिवार	3 रविवार	10 रविवार	15 शुक्रवार	16 शनिवार
फरवरी	FEB	25 गुरूवार	28 रविवार	2 मंगलवार	9 मंगलवार	13 शनिवार	15 सोमवार
मार्च	MARCH	26 शुक्रवार	30 मंगलवार	3 बुधवार	11 गुरूवार	15सोमवार	17 बुधवार
अप्रैल	APRIL	24 शनिवार	28 बुधवार	2 शुक्रवार	10 शनिवार	14 बुधवार	15 शनिवार
मई	MAY	24 सोमवार	27 गुरूवार	1 शनिवार	9 रविवार	14 शुक्रवार	15 शनिवार
---	---	---	---	31 सोमवार	---	---	---
जून	JUNE	22 मंगलवार	26 शनिवार	30 बुधवार	8 मंगलवार	12 शनिवार	13 रविवार
जुलाई	JULY	21 बुधवार	25 रविवार	29 गुरूवार	8 गुरूवार	11 रविवार	13 मंगलवार
अगस्त	AUG.	20 शुक्रवार	24 मंगलवार	28 शनिवार	6 शुक्रवार	10 मंगलवार	11 बुधवार
सितम्बर	SEPT.	18 शनिवार	23 गुरूवार	26 रविवार	4 शनिवार	8 बुधवार	9 गुरूवार
अक्टूबर	OCT.	18 सोमवार	22 शुक्रवार	26 मंगलवार	4 सोमवार	7 गुरूवार	9 शनिवार
नवम्बर	NOV.	17 बुधवार	21 रविवार	25 गुरूवार	2 मंगलवार	5 शुक्रवार	7 रविवार
दिसम्बर	DEC.	17 शुक्रवार	21 मंगलवार	24 शुक्रवार	1 बुधवार	5 रविवार	7 मंगलवार
---	---	---	---	---	31 शुक्रवार	---	---

सिंध, सिंधी और सिंधीयत
(सतयुग से कलयुग तक)
प्रश्न - उत्तर (सिंधू, सिंधू नदी और सभ्यता)

लेखक : (प्रेम मोतिराम तनवाणी)

प्र. 1. सबसे पहिले पृथ्वी का कौनसा भू-भाग जल से उभरा ?

उत्तर- सबसे पहिले जल से सिंध का भू-भाग उभरा।

प्र. 2. हमारे देश का सबसे प्राचीन और पहिला नाम क्या था ?

उत्तर- हमारे देश का सबसे प्राचीन और पहिला नाम सिंध था, जिसे सप्त-सिंधव देश भी कहा जाता था।

प्र. 3. ऋग्वेद आदि चारों धर्म-ग्रन्थ किस नदी के किनारे रचे गए ?

उत्तर- ऋग्वेद आदि चारों धर्म-ग्रन्थ सिंधू नदी के किनारे रचे गए।

प्र. 4. सिंधू नदी के उद्गम स्थल का नाम बतलाइए ?

उत्तर- सिंधू नदी का उद्गम हिमालय की मान सरोवर झील से हुआ है।

प्र. 5. भारत की सबसे बड़ी और विश्व की वेगवान नदी कौनसी है ?

उत्तर- सिंधू नदी, जिसका जलप्रवाह दो खरब, चौहत्तर अरब ओर साढ़े पाँच करोड़ घन गज है। जो कि नील और यूफ्रेटस दोनों के जल-प्रवाह के योग का तीन गुना है। सिंधू का जल-सिंचन क्षेत्र चार लाख वर्गमील है।

प्र. 6. प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद में सबसे अधिक किस नदी की महिमा गाई गई है ?

उत्तर- प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद में सबसे अधिक सिंधू नदी की महिमा गाई गई है।

प्र. 7. हम सिंधी मूल रूप से किसकी सन्तान हैं ?

उत्तर- लोक-कहावतों के अनुसार हम सिंधी मूलतः भगवती उमा और भगवान शिव की सन्तान हैं। इसके कईप्रमाणों में एक मुअन जो डड़ो नामक सिंधू-सभ्यता से मिले, उमा-शिव तथा मानव की त्रिरूप प्रतिमा है।

प्र. 8. ऋग्वेद में वर्णित सिंध की प्रसिद्ध प्रेम-कथा के मुख्य पात्र कौन थे ?

उत्तर- ऋग्वेद काल में सिंध की प्रसिद्ध प्रेम-कथा के मुख्य पात्र चक्रवर्ती राजा पुरुरवा और इन्द्र-अप्सरा उर्वशी थे।

प्र. 9. सतयुग में हुए भक्त पहिलाज का सिंध और सिधींयों के साथ क्या सम्बन्ध था ?

उत्तर- प्रजापति दक्ष के दोहिते हिरण्य कश्यप के पुत्र पहिलाज सिंधीयों के पूर्वज थे। उनके राज में सिंध की राजधानी पहिलाजपुरी (वर्तमान मुल्तान) थी।

प्र. 10. भारत के प्रथम धर्म का नाम क्या था ?

उत्तर- प्रथम धर्म का नाम सिंधू-धर्म था।

प्र. 11. जापान का राज-परिवार मूलतः किस धर्म का अनुयाई था ?

उत्तर- सिंधू धर्म का, जिसका उच्चारण जापानी भाषा में शिन्तोधर्म के रूप में किया जाता था।

प्र. 12. काल के पंजे से अपने पति सत्यवान को छुड़ाने वाली सती सावित्री किस क्षेत्र की कही जाती है ?

उत्तर- सती सावित्री सिंध-पंजाब क्षेत्र की कही जाती है।

प्रश्न - उत्तर (सतयुग से कलयुग तक)

प्र. 13. ३ री से ५वीं ईसवी सदी में सिंध में किस सिंधी राजवंश का राज्य था ?

उत्तर- ३ री से ५वीं सदी में सिंध में राय देवजी के राय-राजवंश का राज्य था।

प्र. 14. ५ वीं - ७वीं ईसवी सदी में सिंध साम्राज्य की सीमाएं कहां तक थी ?

उत्तर- ५ वीं - ७वीं ईसवी सदी में सिंध साम्राज्य की सीमाएं सिंधू-सागर अथवा अरब सागर के कराची के देवल बंदर से लेकर श्रीनगर तक फैली हुई थीं।

प्र. 15. सिकन्दर को किस जिले के सिंधीयों ने शर्मनाक पराजय दी थी, जो कि उसकी मृत्यु का कारण सिद्ध हुई ?

उत्तर- सिकन्दर को सक्खर जिले के सिंधीयों ने शर्मनाक-पराजय दी थी।

प्र. 16. ७ वीं सदी में किसकी हार के बाद भारत विधर्मियों का गुलाम हुआ ?

उत्तर- महाराजा दाहिरसेन की हार के बाद भारत विधर्मियों का गुलाम हुआ।

प्र. 17. अपनी लाज बचाने जौहर या सती-प्रथा का आरम्भ किसने किया था ?

उत्तर- जीवित अग्नि-प्रवेश कर, सम्राट दाहिर की पत्नी लाडी ने किया था।

प्र. 18. सिंध में सतियों का स्मृति स्थान कहाँ पर सुरक्षित है ?

उत्तर- सतियों का स्थान रोहिड़ी के पास सिंधु नदी के बीच में सुरक्षित है।

प्र. 19. किन सिंधू बालाओं ने बगदाद-ईराक में बंदी अवस्था में रहते हुए भी सिंधू धर्म अथवा हिंदू धर्म की रक्षा हेतु अपने प्राण निछावर किए ?

उत्तर- सिंधू सम्राट दाहिर और महारानी लाडी की वीर बालिकाओं सिरजा और परमी ने सिंधू धर्म की रक्षा हेतु अपने प्राण निछावर किए।

प्र. 20. महाराजा दाहिरसेन स्मृति स्मारक कहाँ पर स्थापित है ?

उत्तर- महाराजा दाहिरसेन स्मृति स्मारक राजस्थान के अजमेर में स्थापित है।

प्र. 21. किस राजा ने संगीत-प्रेम के कारण अपना सिर कुरबान कर दिया था ?

उत्तर- राजा राय ड़ियाच ने संगीत प्रेम के कारण अपना सिर कुर्बान कर दिया था।

प्र. 22. किस संगीतकार ने देश-प्रेम के कारण दो-दो राज्य लेने ठुकरा दिए थे ?

उत्तर- संगीतकार बीजल ने देश-प्रेम के कारणदो-दो राज्य लेने ठुकरा दिए थे।

प्र. 23. ८ वीं- ९ वीं सदी में किस ऋषि ने ऐसा ग्रन्थ रचा था, जिसे पढ़कर मुसलमान बने सिंधी-हिन्दुओं ने पुनः हिंदू धर्म स्वीकार किया ?

उत्तर- ८ वीं- ९वीं सदी में सिंध के ड़ेवल ऋषि ने ऐसे ग्रन्थ की रचना की थी।

प्र. 24. किस दीवान की बुद्धिमानी के कारण, मीर गुलाम अली के शासन काल में सिंध पर ईरान के शाह ने हमला करने का विचार त्याग दिया था ?

उत्तर- दीवान गिदूमल की बुद्धिमानी के कारण। हैदराबाद का गिदू-बंदर बंदरगाह, उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है।

प्र. 25. किस वीर कन्या ने, मुस्लिम शासक द्वारा जबरन विवाह करने के विरोध स्वरूप, हँसते-हँसते रानी पद्मिनी की तरह जहर का प्याला पी लिया था ?

उत्तर- हैदराबाद क दीवान गिदूमल की वीर कन्या ने सिंधीयत-धर्म बचाने हेतु हँसते-हँसते रानी पद्मिनी की तरह जहर का प्याला पी लिया था।

प्रश्न - उत्तर (स्वतंत्रता - संग्राम)

प्र. 26. सिंध का मुक्ती-दाता कौन था, उसने अँग्रेजों को सिंध पर हमला करने के लिए धनादि की सहायता कब और क्यों दी थी ?

उत्तर- सिंध का मुक्ती-दाता सेठ नाऊँमल होतचँद भोजवाणी था, क्योंकि मुस्लिम मीरों के शासन में उसके वृद्ध पिता का अपहरण कर उनकी जबरदस्ती सुन्नत कर दी गई थी। ऐसे निर्मम अत्याचारों से सिंध को मुक्ती दिलाने हेतु उसने सन् 1843 में अँग्रेजों को हर प्रकार की सहायता दी थी।

प्र. 27. 1857 की क्रांति की छोटी सी झलक सहित सिंधू-सपूतों के नाम बतलाएं ?

उत्तर- सरदार अलिफ खान, बहादुर खान खोसो, दरिया खान जखराणी और सैयद इनायत शाह प्रमुख क्रांतिकारियों में शामिल थे। गिरफ्तारी के बाद सैयद शाह भाग निकले, खोसो और जखराणी को काले पानी की सजा हुई, अलिफखान को तोप से उड़ाकर शहीद किया गया।

प्र. 28. 1880 में सिंध में, आजादी का अलख जगाने वाली अखबारों और उसके प्रमुख कार्यकर्ताओं सहित संस्था का छोटा सा परिचय करवाइये ?

उत्तर- कराची में स्थापित सर्वधर्म और सर्व जाति के लोगों द्वारा स्थापित संस्था सिंध सभा नें सिंध टाईम्स और सिंधु सुधार नामक दो अखबारें प्रकाशित कीं। प्रमुख थे साधु हीरानंद, उनके भाई साधु नवलराय, दीवान कौड़ोमल खिलनाणी, राजऋषि दयाराम गिदूमल, दीवान दयाराम जेठमल एवं सेठ हरचँदराय विशनदास।

प्र. 29. काबुल में दिसम्बर 1995 में आजाद हिंद सरकार के गठन हेतु किसने घर के गहने और कीमती फर्नीचर बेचकर ढेर-सारा धन उपलब्ध कराया था ?

उत्तर- डीयो कृपलाणी: आचार्य कृपलाणी के भाई ने, अपनी पत्नि और पुत्री के लिए बनवाए गहनों सहित घर का कीमती फर्नीचर बेचकर देश-प्रेम सिद्ध किया।

प्र. 30. किसने स्वधर्म को देश-धर्म पर बलिदान करने का अदर्श संदेश दिया था ?

उत्तर- श्री डीयो कृपलाणी ने इस्लाम-धर्म स्वीकार कर अपना नाम शेख अब्दुल रहीम रख लिया था। रेशमी रुमाल फिल्म इन्हीं के कारनामों की कहानी थी।

प्र. 31. उस परिवार का परिचय दें जिसके 40 सदस्य आजादी के लिए जेल गए थे ?

उत्तर- नवाबशाह जिले के नौंशहरो फेरोज का खेमचँद बालाणी परिवार। इन्हों ने क्रांति कारी गतिविधियें का केन्द्र बनाने हेतु अपने छह बड़े-बड़े मकान खाली कर दिए थे, जहाँ देश के कई भूमि-गत क्रांतिकारियों ने आकर शरण ली थी।

प्र. 32. उस वीर नारी का नाम क्या था, जो आजादी के लिए 12 बार जेल गई ?

उत्तर- श्रीमती मोहिनी दीपचंद तिलोकचंद।

प्र. 33. किस परिवार के दुध-मुंहें बच्चे सहित 19 सदस्य आजादी हेतु जेल गए ?

उत्तर- श्री सच्चानन्द फेरूमल थावाणी परिवार के 19 सदस्य आजादी आन्दोलन में गिरफ्तार किए गए थे। जिनके सपूत दादा रोचाराम थावाणी आज भी देश और समाज सेवा का व्रत लेकर, मानव-समर्पित जीवन भी रहे हैं।

प्रशन - उत्तर (स्वतंत्रता - संग्राम)

प्र. 34. क्रांतिकारी साधु-संतो के नाम बतलाएं ?

उत्तर- स्वामी गोविन्दानन्द, स्वामी कृष्णानन्द, साधु हीरानन्द, साधु नवलराय, साधु टी.एल. वासवाणी, प्रभदास ब्रह्मचारी, आचार्य कृपलाणी, द्वारकाप्रसाद शर्मा, लोकराम शर्मा, विष्णु शर्मा, नेणुराम शर्मा, नत्थूराम शर्मा, आचार्य आसुदोमल।

प्र. 35. सिंधी नारी का सिर ऊँचा करने वाले कुछ नाम भी याद करवाएं ?

उत्तर- दादी कृष्णादेवी, अमृता मनोहरदास, गंगा मेठाराम खिलनाणी, रुक्मिणी नारायणदास, कमला हीरानन्द, जमना साधुराम, सीलवन्ती सेवाकराम, लक्ष्मी सिधवा, शकुन्तला देवी, देवी रिझवाणी, देवी हासोमल, रुक्मिणी श्रीचँद, मोहिनी लालचँद, गोपी रूपचँद फतनाणी, सदोरी अगनाणी, भगवन्ती चंचलाणी, देवकी ढालवाणी, हर्षी हीरानन्दाणी और कस्तूरी बेन (गुजराती) आदि।

प्र. 36. वे कौनसे क्रांतिकारी परिवार थे, जो सपरिवार जेल गए थे ?

उत्तर- जमींदार खेमचँद बालाणी (40 सदस्य) । सच्चानन्द फेरूमल थावाणी परिवर के दूधमंहें बच्चे सहित 19 सदस्यों में बहिन कर्सीबाई, दामाद निहलाणी, कमला, जानकी, तुलसी। आचार्य कृपलाणी के भाई डीयो शेख उर्फ डीयो कृपलाणी, बहिन किकी लालवाणी, गोपी कृपलाणी। आचार्य आसूदोमल गिदवाणी के भाई आलमचँद, पत्नी गंगा व बहिन पार्वती। कई पती-पत्नियों के जोड़े भी थे।

प्र. 37. मुख्यमंत्री पर गरजने वाली शेरनी के शब्द और नाम की स्मृति कराएं ?

उत्तर- सिंध असेम्बली की शेरनी का नाम था - जेठी सिपाहमलाणी और आजीवन सेवा-व्रता ब्रह्मचारिणी के शव्द थे: भले ही तुम्हें अँग्रेजी सरकार ने छोड़ दिया है, किन्तु तुम खूनी हो - हत्यारे हो ! इसलिए मैं तुम्हारे घर का पानी भी नहीं पी सकती।

प्र. 38. सजा काटकर जेल से निकली एक और सिंधी शेरनी का बयान और नाम ?

उत्तर- ये ढाई साल की सजा मुझे ढाई मिनट की लगी : और नाम था - लक्ष्मीदेवी।

प्र. 39. उस देशभक्त परिवार का छोटा सा परिचय दें, जिसके बाप- बेटे, दोनों शहीद हुए ?

उत्तर- गुमनाम शहीदों की तरह सिंधू- भवानी का वो शेर-परिवार था गुरदासमल का। बेटे हरकिशन को अँग्रेज गर्वनर को गोली से उड़ाने की कोशिश के कारण फाँसी की सजा होने वाली है और मिलने आई दादी, रोने-बिसूरने की बजाय पोते से कहती हैं: बेटा ! फाँसी पर हौसले से चढना। पोते ने मुस्कराते हुए कहा: फिक्र मत करो दादी ! रोशनी का पोता, मौत को शर्मिन्दा करके ही रहेगा। गुरदासमल को भी जेल में यातनाएं दे-दे कर शहीद कर दिया गया। दूसरे बेटे भगतराम की मदद से घर में नजरबंद नेताजी सुभाष काबुल पहुंच सके।

प्र. 40. 1930 में कराची में एक हजार की गिरफ्तारी क्यों हुई और दो शहीद कौन थे ?

उत्तर- कराची में नमक बनाने वालों पर चल रहे मुकदमें की कार्यवाही सुनने बाहर खड़ी अहिंसक भीड़ पर गोली चलाकर कईयों को घायल और मेघराज लुल्ला व बम्बई के दत्तात्रेय को शहीद कर दिया गया। जबकि कोर्ट में गोरे जज के सामने प्रभदास ब्रह्मचारी की दहाड़ती सी ललकार गूँज रही थी कि : हाँ ! मैं तुम्हारी जुल्मी सरकार के खिलाफ नफरत फैलाता रहा हूँ, और आगे भी फैलाता रहूँगा। इसके बदले मिली हर सजा मेरे लिए मेरी प्रिय और

प्रश्न - उत्तर (स्वतंत्रता - संग्राम और बलिदान)

पवित्र भूमि से मिले प्रसाद की तरह होगी।

प्र. 41. ''गोरी सरकार का कामकाज ठप्प!'' डेली गजट की पहिली खबर कैसे बनी ?

उत्तर- बिदेशी 3-4 सौ महिलाएं कराची के गोवर्धन कपड़ा मार्केट में पुलिस का आमना-सामना करने लगीं। क्यों कि कराची में नमक-आन्दोलन में लगभग 5 हजार महिलाओं के सैलाब ने, भारत भर में कहीं भी न दिखने वाला तूफान सा खड़ा कर, अनोखा दृष्य प्रस्तुत कर दिया था। हालते बिगड़ती भाँपकर मेयर जगदीश मेहता ने पुलिस को कार्यवाही करने से रोक दिया, व्यापारियों ने ब्रिटिश कपड़ा मिलों को माल के आर्डर रद्द कर दिए। यही खबर देश भर की अखबारी सुर्खियों में थी।

प्र. 42. भरचुंडी के पीर द्वारा संत कंवरराम की हत्या कराने का मूल कारण क्या था ?

उत्तर- सिंधी कन्याओं व युवकों के अपहरण, जबरन धर्म परिवर्तन के विरुद्ध सक्खर - रोहिड़ी के यवकों द्वारा पीर के पुत्र एवं गुन्डों की पिटाई हत्या का बहाना बनी।

प्र. 43. संत कंवरराम के हत्यारों को दण्ड दिलवाने हेतु हुए शहीद का नाम बताएं ?

उत्तर- रोहिड़ी - सक्खर का शहीद हासाराम पमनाणी, दिन 17 जुलाई 1940।

प्र. 44. राष्ट्रपिता - महात्माँ कहलाने वाले गांधी ने किस दिन, क्या वचन दिया था ?

उत्तर- मैं वचन देता हूँ कि : चाहे मेरे शरीर के तुकड़े हो जाएँ, किन्तु मैं पाकिस्तान का निमार्ण अथवा भारत का विभाजन कदापि नहीं होने दूँगा! महात्मा का ये वचन, उनकी अपनी अखबार हरिजन में 22 सितम्बर 1943 के दिन, प्रकाशित हुआ।

प्र. 45. दिसम्बर, 1945 के राष्ट्रीय चुनावों में विभाजन के षडयन्त्र वाले मुद्दे व नारे क्या थे ?

उत्तर- मुस्लिम लीग का नारा था, 'बंटवारा करके रहेंगे, पाकिस्तान बनाके रहेंगे।' पं. नेहरू के नेतृत्व में काँग्रेस ने अखन्ड भारत के संकल्प सहित घोषणा की कि, 'देश का बंटवारा सिर्फ महात्मां गांधी की लाश उठने की हालत में ही हो सकता है।' बड़े-बड़े काँग्रेसी नेताओं ने यही वचन, सारे देश की जनता को दिए थे। जिस पर पूर्ण विश्वास कर, सिंधी जनता ने सिंध की सभी हिंदु बहुल 22 सीटें काँग्रेस को जितवाई। 3 जून 46 के दिन इस छड्यन्त्र की पोल खुल गई, जिस दिन नेहरू ने रेडियो से भारत विभाजन स्वीकार किया। 21 जून केदिन पं. नेहरू ने पूछने पर पत्रकारों से कहा, 'हमने सर कटाकर सरदर्द की दवा की है।'

क्रमशः (शेष अगले अंक में)

कहानी

आर्थर रोड जेल से चिट्ठी

लेखक - श्री ठाकुर चावला, अनुवाद - डी.पी. तेजा

प्रिय.......!

आपको यह पत्र मिलते जरूर अजीब लगेगा और मुमकिन है एक झटका भी लगे। किसी समय में मैंने आपके यहां नौकरी भी की थी, आपकी फैक्ट्री में बना माल, कमीशन पर मुम्बई के आस पास शहरों में ले जाकर बेचने का काम भी किया, उसमें रोज़गार तो मिलता रहा पर जो मन में जल्दी से पैसा बनाने की तमन्ना थी, वह पूरी नहीं हो पा रही थी। फिर मैंने माल बेचकर कमीशन काटकर बाकी रकम आपको देने की बजाय सारी रकम हड़प करता रहा। मेरे- माँ-बाप जो कि मेरे व्यवहार तथा काम की खातिर जमानतदार बने थे, उन्होंने मुझे खूब समझाया आपने भी एक-दो बार टोका पर मेरी जेब में खूब रूपये पड़े हों, ऐसी चाहना मेरे मन में ऊपर छाई हुई थी। और मैंने आपके बेचे हुए माल के सभी पैसे खत्म कर दिये।

एक दिन एक दोस्त की दावत बुलावे पर न्यू मुम्बई चला गया। उसके यहां देर रात्रि तक महफिल चली। खाना और शराब मौजूद था। उसके दो तीन मित्र भी थे। और उसके साथ दो गैर सिंधी लड़कियां, खूब खाया-पीया और जिन्दगी को एक नए मोड़ पर लाकर जल्द धनवान बनने के सपने साकार करने के लिये राहें ढूंढने लगे, मेरे उस दोस्त ने कहा मेरे पास ऐसी तरकीब है जिसमें एक सप्ताह के अंदर हम सब के पास गाड़ी मोटर होगी, मोबाइल होंगे और आप लागों की जेबे रूपयों से भरी होंगी। हम सभी उस तरकीब को जानने के लिए तड़प रहे थे। आगे बढ़ते हुए उसने कहा हम दो तीन महीने, इन दो कमरों के फ्लैट में रहेंगे और यहां से तुम लोगों को हर रोज नये नोटों के बंडल दिये जायेगें। और आप लोगों को यह अपनी होशियारी से कहीं न कहीं से बदलवाकर, कुछ खरीदकर दूसरे बदले हुए नोट यहां पहुंचाने हैं, बस इतना ही काम हैं। और जितने नोट आप बदलवाकर आओगे उस रकम का पांचवा हिस्सा आपका मतलब बिना किसी तकलीफ के 20 प्रतिशत आप रोज कमा सकेंगे। सुबह से ही एक-एक करके यहां से अलग-अलग एरियाओं में चले जोयंगे और अपनी होशियारी और काबलियत से नोट बदलवाकर रात तक वापस लौटना है। उसकी 20 प्रतिशत रकम उसी समय ही उसे दी जायेगी। उस समय हमें वह कोई उलझन वाली बात नहीं लगी हम सबने हाँ की और दूसरे दिन सुबह को पहले दिन सभी को दस-दस हजार रूपयों के नये नोट दिये गये। रात को लौटने पर सभी ने अपनी होशियारी से कुछ न कुछ खरीदकर नोट बदलवाकर आए और सभी को दो-दो हजार नगद हिसाब से दिये गये। हम सभी को लग रहा था जैसे अचानक भाग्य खुल गया है। दूसरे दिन बीस बीस हजार रूपये दिये गये। हम लोग नोट बदलवाते गये और अपनी जेबें गर्म करते रहे। अचानक एक दिन जब एक-एक लाख रूपयों को थैला भरकर बदलवाने के लिये दिया गया। मैंने लालच करके बिना किसी तकलीफ के नोट बदलने का एक प्लान बनाकर एक बैंक के काऊंटर पर जाकर कहा कि मैं अमुक आफिस में काम करता हूं और आज तनख्वाह बांटने का दिन है यह बड़े नोट बदलकर छोटे नोट देवें जिससे तनख्वाह बांटने में सहूलियात हो सके। बस कैशियर ने नोटों के बंडल तो लिये

आखिर केस चला मैंने वकील भी किया मैंने कई चालें भी लची पैसे भी खिलाए पर कुछ भी फायदा न हुआ और मुझे अन्य दोषियों के संग दस साल जेल की सजा सुनाई गई।

पर उसे शक हुआ, नोटों की मशीन पर जांच के उपरांत उसने जान लिया कि ये नोट अलसी नहीं है और मुझे मैनेजर के केबिन में बुलाया गया और मुझसे आफिस का विजिटिंग कार्ड मांगा गया जो मेरे पास तो था नहीं और दस मिनटों में ही पुलिस ने आकर मुझे पकड़ा मैंने कई बहाने किये पर मुझे सीधा जीप में बिठाकर पुलिस स्टेशन पर ले जाया गया और मुझे बैंच पर बिठाकर रस्सियों से बांधकर पूछताछ की गई कि वे नोटों के बंडल मैं कहां से लाया ? और मेरे उस साजिश में कौन से मेरे दूसरे साथी है, मैं मार खाता रहा, रोता रहा पर पुलिस को मुझ पर कोई भी साहनभूति नहीं हुई, जब उन्होंने जमानत पर भी आज़ाद करने में आना कानी की मैं टूट पड़ा और पुलिस को उस फ्लैट पर आधी रात को ले गया, मैं अगर ऐसा नहीं करता तो वे अपनी सख्ती तेज़ करते जाते और मुझमें वह सब सहन करने की शक्ति नहीं थी।

जहां तक मुझे ऐसा उस समय लगा था कि वह अपने साथियों के साथ करना धोखा था पर काश वह मुझे उस वक्त अहसास होता कि नकली नोट छपे हुए थे जो कि हम बदलवाकर सच्चे कर रहे थे। मेरे परिवार वालों को जब पता चला होगा उनकी आंखे जरूर शर्म से जरूर नीचे झुक गई होंगी, मेरी पत्नी माँ–बाप सभी पुलिस स्टेशन पर मेरी ज़मानत के लिये आये थे पर मेरी ज़मानत नहीं हो सकी, क्योंकि नकली नोट कहां पर छपवाए गये थे, या वे किसने थे बदलवाए, वह सबसे बड़ा दोष था ऐसा पुलिस ने अपना पक्ष मेरे परिवार वालों के समक्ष रखा था। कितने ही दिन मैं पुलिस स्टेशन में पड़ा रहा, थोड़े दिन गुज़रने के बाद और अधिक पूछताछ करने के लिये जज से तारीखें ली जा रही थी। आखिर केस चला मैंने वकील भी किया मैंने कई चालें भी चली पैसे भी खिलाए पर कुछ भी फायदा न हुआ और मुझे अन्य दोषियों के संग दस साल जेल की सजा सुनाई गई। आज मैं ज़ेल की चारदीवारी के अंदर हूं। किसी को भी मिलने नहीं दिया जा रहा है। खाना भी अब सजा सुनाने के बाद जेल के कैदियों के साथ मिल रहा है मेरे पास पत्र लिखने के लिये पैसे भी नहीं बचे है। सिगरेट तक पीने के लिए तरस रहा हूँ। घर के भोजन को याद करता हूं। पत्नी और परिवार का मोह सता रहा है।

रात को जब नींद नहीं आती तब अपनी छोटी उम्र में की गई गलतियों को याद कर रहा हूँ काश मेरे ज़ेहन वह जल्द धनवान बनने का भूत नहीं आता और मैं अपने परिवार के साथ गरीबी में ही समय गुजारता।

ऐसा करता तो न मैं इस हालत में होता और नहीं मेरा परिवार ही किसी को मुंह दिखाने से आना कानी ही करता। जो मैंने गलत तरीके से पैसे कमाए वे सब वकीलों को ही देने पड़े हैं। और अब जब दस सालों बाद जेल से वापस निकलूंगा तब न तो मेरे पास पैसे होंगे और नही वह इज्जत जिसके होने से आदमी मुह ऊपर कर चल सकता है।

मेरे रिश्तेदारों एवं ससुराल वालों का बाहर निकलना भी दुश्वार हो गया होगा, मेरे पिताजी से कहें कि किसी तरह रूपये भेजें जैसे पोस्ट आफिस से लिफाफ्ऊे मंगवाकर पत्र लिख सकूं।

सिन्धू महक के सम्माननीय सदस्यों को जन्मदिन की बधाई एवं शुभकामनाएँ



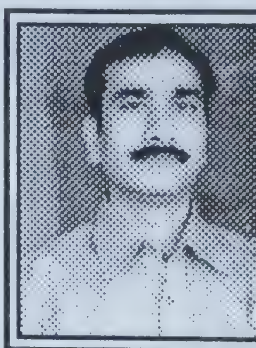
जस्सूराम बजाज
जन्मदिन - 28 फरवरी
बजाज स्टोर्स
गोल बाजार, बिलासपुर



राकेश वाधवानी
जन्मदिन - 3 मार्च
लक्ष्मी स्वीट्स
सुपर मार्केट, बीना



राकेश जैन
जन्मदिन - 4 मार्च
बी-114, विजय नगर
लालघाटी, भोपाल



लक्ष्मण रामनानी
जन्मदिन - 4 मार्च
एच.आई.जी. 12/ए,
सोनागिरी, भोपाल

कन्हैयालाल बजाज
जन्मदिन - 7 मार्च
महालक्ष्मी प्लास्टिक इंडीस्ट्रज
जिन्सी जहाँगीराबाद, भोपाल

जितेन्द्र दासवानी
जन्मदिन - 15 मार्च
ए-50, एन. यू. 10-बी,
शक्ति नगर, गांधीधाम



प्रदीप कुमार टौरानी
जन्मदिन - 16 मार्च
ए-27/1, ओल्ड सी.आर.पी.
बैरागढ़, भोपाल

मनोजकुमार कुकरेजा
जन्मदिन - 16 मार्च
शोभा प्लाई स्टोर
स्टेशन रोड, बीना (म.प्र.)



मूलचंद वीधानी
जन्मदिन - 17 मार्च
श्री वैभव ट्रेडर्स
सिंधी मार्केट, भोपाल



कमल भावनानी
जन्मदिन - 19 मार्च
शिव आशीष बेकरी,
बैरागढ़



संजय शर्मा
जन्मदिन - 19 मार्च
सुविधा सुपर फास्ट सर्विस,
भोपाल



महेश मूलचंदानी
जन्मदिन - 21 मार्च
महेश बूट हाऊस
नेहरु चौक इतवारा, होशंगाबाद

सिन्धु महक के सम्माननीय सदस्यों को जन्मदिन की बधाई एवं शुभकामनाएँ



अनिल कुमार नाथानी
जन्मदिन - 26 मार्च
अनिल ट्रेडर्स
तेलीपारा, बिलासपुर



पं. विष्णु शर्मा (सोनू)
जन्मदिन - 26 मार्च
गाँधी वार्ड, सिंधी कॉलोनी,
बीना



वसंत कुमार चेलानी
जन्मदिन - 28 मार्च
लक्ष्मण नगर, बैरागढ़



सांईं लालदास जी
जन्मदिन - 30 मार्च
श्री सिंधू अमर धाम आश्रम
चकरभाटा कैम्प जि. बिलासपुर

चांद पर पहली दुकान सिन्धी की



व्यंग्य चित्र : वासुदेव 'सिन्धु भारती'

17 वां अंतर्राष्ट्रीय सिंधी सम्मेलन 2010 ज़कार्ता में

उल्हासनगर के समाज सेवी ढालू नाथानी जकार्ता सिन्धी सम्मेलन में आंमत्रित

मुम्बई । अलांइस आफ सिंधी एसोसिएशन आफ अमेरिका द्वारा 17 वां अंतर्राष्ट्रीय सिंधी सम्मेलन का आयोजन इस बार जकार्ता (इण्डोनेशिया) में आयोजित किया गया हैं नौ जुलाई से 11 जुलाई तक आयोजित इस तीन दिवसीय सम्मेलन में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फैले सिंधी समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा होगी। इस हेतु अलांइस सिंधी एसोसिएशन ने भारत की संस्था सिंधी काऊंसिल ऑफ इण्डिया के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को भी जकार्ता आने हेतु आमंत्रित किया है। इस बार इस सम्मेलन में सिंधी काऊंसिल के देश भर के लगभग 100 पदाधिकारी भाग लेने जकार्ता जाएंगे। सिंधी काऊंसिल ऑफ इण्डिया के राष्ट्रीय महासचिव हरीश डी. दुबे एवं काऊंसिल के उल्हासनगर चार्टर प्रेज़ीडेंट ढालू के नाथानी ने बताया कि जकार्ता सम्मेलन में भारत भर से जाने वाला प्रतिनिधि मण्डल सम्मेलन के अलावा कुआलालमपुर एवं मलेशिया का भ्रमण भी करेगा। इस सम्मेलन के होस्ट गांधी सेवा लोका (जी एस.एल) जकार्ता होंगे।

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका -

सिन्धू महक का वार्षिक या आजीवन सदस्य बनने हेतु इस सदस्यता फार्म को काटकर पूर्ण रूप से साफ शब्दों में भरकर भेजें साथ सदस्यता शुल्क का ड्राफ्ट भी संलग्न कर भेजें।

पता -

धर्म प्रकाश तेजा
(सम्पादक) सिन्धू महक
एफ - 5, श्रद्धा अपार्टमेंट, संस्कार
स्कूल के पास लक्ष्मण नगर,
बैरागढ़, भोपाल (म.प्र.) - 462030

प्रिय पाठकों,

आपसे अनुरोध है कि सिंधू महक पत्रिका के संबंध में अपने विचार एवं सुझाव पत्र के माध्यम से अवश्य भेजें, जिससे हम पत्रिका को और सुंदर बना सकें। आपके विचारों एवं सुझावों का हम स्वागत करेंगे।

(सम्पादक)

आग्रह

प्रिय पाठकों,

कृपया जब कभी भी आप सफर पर जाएं तो पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यक, राष्ट्रीय मासिक पत्रिका सिंधू महक अपने साथ ले जाएं। स्वंम पढ़े औरो पढ़ाएं।

सिंधु महक

मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान राज्यों में सर्वाधिक प्रसारित

एफ-5, श्रद्धा अपार्टमेंट, संस्कार स्कूल के पास, बैरागढ़, भोपाल-462030
पो. बाक्स नं. 5, बैरागढ़, भोपाल (म.प्र.), मोबाईल : 09589024860, 09300691132

कृपया अपना फोटो यहाँ पर चिपकायें।

(सदस्यता फार्म)

प्रति,

महाप्रबंधक (प्रसार)

सिंधू महक

सदस्यता हेतु शुल्क	
वार्षिक शुल्क 200 रु.	आजीवन शुल्क 2100 रु.

(डाक खर्च सहित)

विषयः- सदस्यता प्रदान करने बाबत्।

महोदय,

मैं सिंधू महक मासिक पत्रिका का नियमित सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। जिसके लिए आवश्यक धनराशि रु. .... का भुगतान नगद/डिमान्ड ड्राफ्ट/मनी आर्डर चैक क्र. .... के द्वारा भेजा जा रहा है।

मेरा पता निम्नानुसार है :-

1. नाम ....
2. जन्म दिनांक ....
3. डाक का पूरा पता ....
   ग्राम .... जिला .... प्रदेश .... पिन कोड ....
4. फोन नं. .... मोबाइल नं. .... फैक्स नं. ....
5. ड्राफ्ट/मनी आर्डर/चैक क्र. .... दि. .... धनराशि ....

नोट :- **1. ड्राफ्ट / मनी आर्डर / चैक सिंधू महक के नाम से भेजें। 2. फार्म हिन्दी में ही स्वच्छ अक्षरों में भरें।**

सिंधु महक

मोबाईल :
09589024860,
09300691132

एफ-5, श्रद्धा अपार्टमेंट,
संस्कार स्कूल के पास,
पो.बाक्स नं. 5,
बैरागढ़, भोपाल-462030

श्री .... को सिंधू महक का वार्षिक सदस्य बनाकर रुपये .... प्राप्त किये सधन्यवाद।

प्राप्तकर्ता का नाम ....

पद ....

दिनांक .... स्थान ....

हस्ताक्षर

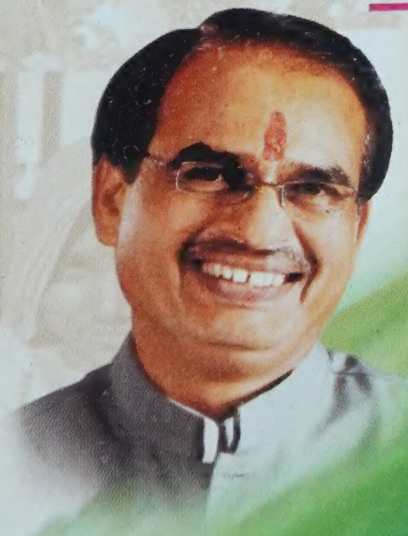
मध्यप्रदेश
एक शांत क्रांति की ओर



गांवों और शहरों के विकास के लिए
सत्ता की बागडोर दो लाख से ज्यादा
महिलाओं के हाथ में होगी

संविधान निर्माताओं के सपनों को
पूरा करने की दिशा में एक बड़ा काम

- ✓ 180000 महिला पंच
- ✓ 11520 महिला सरपंच
- ✓ 3400 महिला जनपद सदस्य
- ✓ 415 महिला जिला पंचायत सदस्य
- ✓ 156 जनपदों और 25 जिला पंचायतों में महिला अध्यक्ष
- ✓ 1780 महिला पार्षद
- ✓ 95 नगर पंचायत महिला अध्यक्ष
- ✓ 32 नगर पालिका महिला अध्यक्ष
- ✓ 8 नगर निगमों में महिला महापौर



आधी दुनिया के साथ
पूरा मध्यप्रदेश

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2010

D-6?381 मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी



चैतीचांद के पावन पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
विश्वसनीय नाम
विश्वसनीय उत्पाद
कड़ी प्रतिस्पर्धा
के बावजूद
विश्वसनीयता
शिमला
पान मसाला
शिमला
पान मसाला
Real Fun, Real Freshner...
शिमला
स्वीट सौंफ
शिमला
चोको गोल्ड
मन को भानेवाला
शिमला
पान मसाला
शिमला
स्वीट सौंफ
शिमला
चोको गोल्ड
पान मसाला चबाना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है. Not f Minors
सभी प्रमुख स्टोर्स पर उपलब्ध